शिव धाम । माँ वैष्णो देवी धाम । राधा-कृष्णा धाम । शनि धाम

चार धाम

वृंदावन

अध्यात्म की परम भूमि

भक्ति और संकल्प से निर्मित एक दिव्य धरोहर

डॉ. जे सी चौधरी

चार धाम-वृन्दावन

हर श्वास में ईश्वर का अनुभव एवं अध्यात्म की परम भूमि

चार धाम, वृंदावन - एक ऐसा दिव्य तीर्थ, जहाँ भक्ति केवल मंत्रों में नहीं, बल्कि यहाँ की हवा और मिट्टी के कण-कण में समाई है। यहाँ कदम-कदम पर आत्मा जैसे ईश्वर से संवाद करती है। मंदिरों की घंटियाँ और साधकों की भक्ति से गूंजता यह क्षेत्र आत्मा को भीतर तक स्पर्श करता है। चार धाम, वृंदावन केवल एक स्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभव है, जहाँ जीवन का उद्देश्य केवल देखना नहीं, अनुभव करना है - ईश्वर को, शांति को, और स्वयं को।

विषय-सूची

1.	डॉ. जे सी चौधरी - संस्थापक	01-02
2.	चार धाम-वृन्दावन	03-04
3.	स्वागत-द्वार	05
4.	दर्शन का समय	06
5.	चार धाम परिसर में सुविधाएँ	07-08
6.	भूमि-पूजन	09
7.	उद्घाटन समारोह	10
8.	माँ वैष्णो देवी धाम - वृंदावन	11-41
9.	शिव धाम - वृंदावन	42-69
10.	राधा-कृष्णा धाम-वृन्दावन	70-89
11.	शनि धाम - वृन्दावन	90-104
12.	मन्नत की दीवार	105-106
13.	पवित्र पूजा और हवन	107
14.	मुंडन संस्कार	108
15.	महाप्रसाद	109
16.	सुगम दर्शन और आरती	110
17.	दान-सेवा	111-112
18.	रुद्रा गिफ्ट शॉप	113
19.	अनेका हाइट्स	114-115

डॉ. जे सी चौधरी

संस्थापक

Aakash Medical | IIT-JEE | Foundations	Aakash Healthcare Super Speciality Hospital	Chaudhry Nummero	International Numerology Forum	Indian Institute of Numerology	Chaar Dham चार धाम
1988	2017	2018	2021	2021	2025

डॉ. जे सी चौधरी की भक्ति और संकल्प से निर्मित एक दिव्य धरोहर

माँ वैष्णो देवी धाम के संस्थापक और प्रबंध न्यासी डॉ. जे सी चौधरी, माँ वैष्णो देवी के दृढ़ उपासक हैं। वे माँ को अपने जीवन की शक्ति, प्रेरणा और संबल मानते हैं। माँ के असीम प्रेम और आशीर्वाद के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उन्होंने उत्तर प्रदेश के वृंदावन में माँ वैष्णो देवी धाम की स्थापना की। उनका उद्देश्य था कि जो बुजुर्ग या असमर्थ भक्त कटरा (जम्मू–कश्मीर) के पर्वतों तक नहीं जा पाते, वे भी यहाँ वैष्णो देवी यात्रा जैसी दिव्य अनुभूति प्राप्त कर सकें। साथ ही, यह स्थान भक्तों के लिए शांति, भक्ति और साधना का पवित्र केंद्र बने।

जल्द ही उनके मन में एक और भावना जागृत हुई। माँ वैष्णो देवी शक्ति स्वरूपा हैं, और शक्ति का सर्वोच्च संबंध भगवान शिव से है, जिन्हें उनका सहचर और ब्रह्मांड की शक्ति का पूरक माना जाता है। इसी विचार ने डॉ. चौधरी को प्रेरित किया कि वे माँ के समीप ही शिव धाम का निर्माण करें, ताकि माँ वैष्णो देवी और भगवान शिव साथ विराजें और ब्रह्मांडीय ऊर्जा का दिव्य संतुलन पूर्ण हो। इसके बाद उन्हें भगवान शनि का स्मरण हुआ, जो भगवान शिव के अत्यंत प्रिय और उनके शिष्य माने जाते हैं। उन्होंने निश्चय किया कि भक्तों को भगवान शनि के दर्शन और आशीर्वाद का भी अवसर मिले। इसलिए शनि धाम की स्थापना का संकल्प लिया गया।

अंत में, डॉ. चौधरी ने अनुभव किया कि वृंदावन जैसी पवित्र भूमि जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बाल एवं किशोर जीवन बिताया, श्रीकृष्ण की उपस्थिति के बिना पूर्ण नहीं हो सकती। इसी भावना से उन्होंने राधा–कृष्ण धाम के निर्माण का भी विचार किया, ताकि चारों धाम एक साथ मिलकर पूर्ण आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करें। इस प्रकार उत्तर भारत के सबसे भव्य और पावन स्थलों में से एक 'चार धाम' वृंदावन में 11 एकड़ भूमि पर स्थापित हुआ, जो आज हजारों भक्तों के लिए दिव्य ऊर्जा, भक्ति, शांति और साक्षात्कार का अद्भुत केंद्र बन चुका है।

चार धाम

वृंदावन (मथुरा), उत्तर प्रदेश में स्थित चार धाम सनातन धर्म के श्रद्धालुओं के लिए एक अत्यंत पवित्र और दिव्य तीर्थस्थल है। यह भारतीय संस्कृति, दैवीय भक्ति और आध्यात्मिकता का उज्ज्वल प्रतीक माना जाता है। चार धाम परिसर के चार प्रमुख मंदिर – शिव धाम, माँ वैष्णो देवी धाम, राधा–कृष्ण धाम और शनि धाम – इसकी आध्यात्मिक महत्ता को और बढ़ाते हैं। इनमें से शनि धाम विशेष रूप से भगवान शनि को समर्पित है, जो हिंदू ज्योतिष के नौ ग्रहों (नवग्रह) में से एक हैं।

मंदिर की वास्तुकला भी अत्यंत आकर्षक है, जिसकी दीवारों पर विभिन्न देवताओं की बारीक कारीगरी, मूर्तियाँ तथा चित्रांकन इसे और भव्य बनाते हैं।

यह भारत के उन चुनिंदा स्थानों में से एक है जहाँ भक्त एक ही स्थल पर भगवान शिव, माँ वैष्णो देवी, राधा–कृष्ण और शनि देव के दर्शन कर सकते हैं। इसकी सुंदरता, पवित्र वातावरण और उपलब्ध सुविधाएँ हर आगंतुक के लिए इसे एक दिव्य और समृद्ध आध्यात्मिक अनुभव बनाती हैं।

यह केवल पूजा का स्थान नहीं है, बल्कि ध्यान, साधना और आत्मचिंतन का भी एक शांतिमय केंद्र है। यहाँ आने वाले भक्त अक्सर अत्यंत शांति, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक संतोष का अनुभव करते हैं, जिसके कारण यह स्थल श्रद्धालुओं के बीच अत्यंत प्रिय और पूजनीय बन गया है।

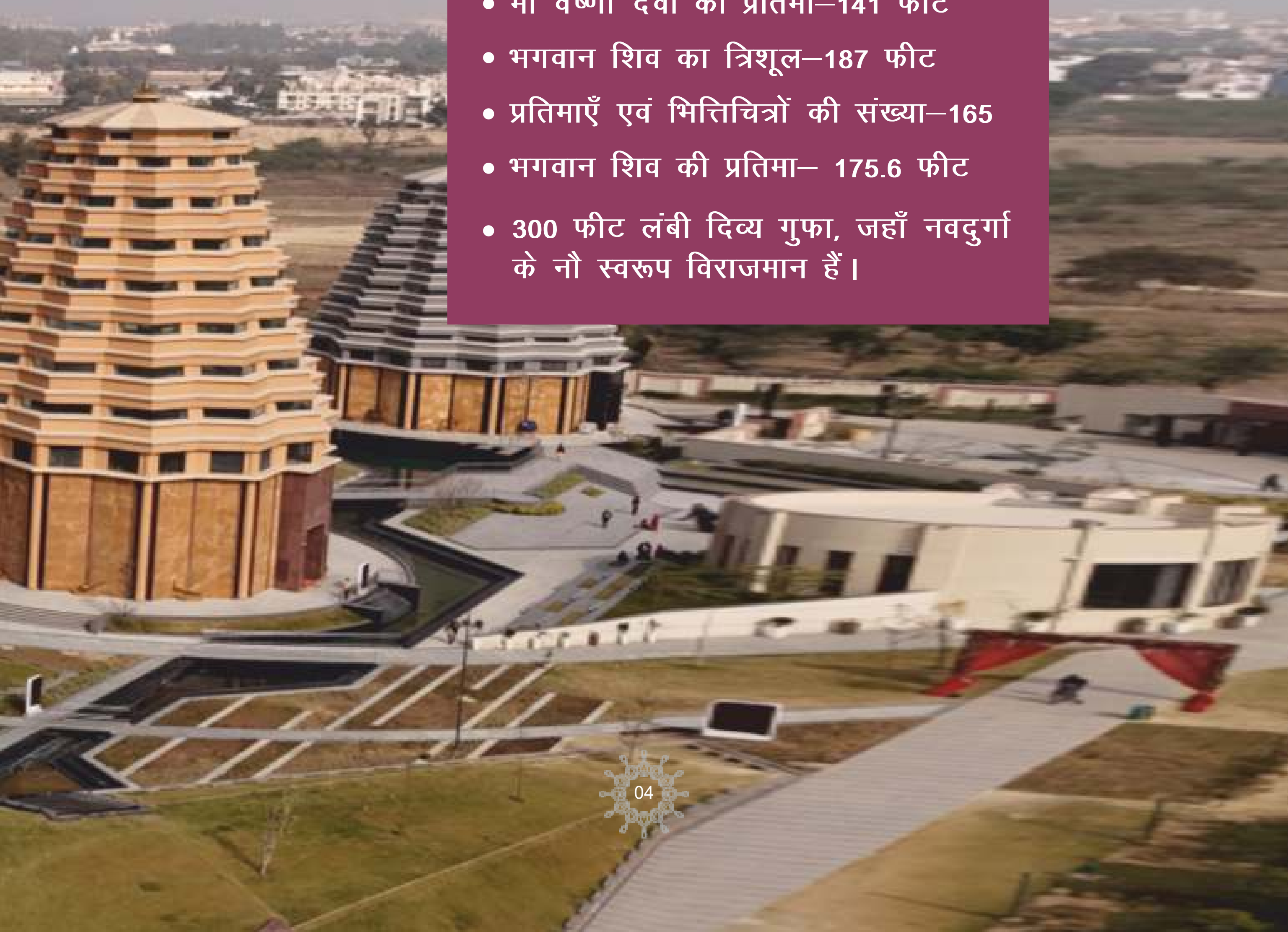

चार धाम की विशेषताएँ

- धाम परिसर–कुल 11 एकड़ में विस्तृत
- माँ वैष्णो देवी की प्रतिमा–141 फीट
- भगवान शिव का त्रिशूल–187 फीट
- प्रतिमाएँ एवं भित्तिचित्रों की संख्या–165
- भगवान शिव की प्रतिमा– 175.6 फीट
- 300 फीट लंबी दिव्य गुफा, जहाँ नवदुर्गा के नौ स्वरूप विराजमान हैं।

स्वागत-द्वार

दिल्ली–मथुरा राष्ट्रीय राजमार्ग– 44 पर, मथुरा कट से लगभग 9 किलोमीटर पहले वृंदावन मोड़ के पास दो प्रमुख स्वागत–द्वार बने हुए हैं। गेट नंबर 1– यह भक्तिवेदांत स्वामी मार्ग की ओर जाता है। गेट नंबर 4– यह राष्ट्रीय राजमार्ग–44 की ओर स्थित है और स्थानीय रूप से छटीकरा के नाम से जाना जाता है। इन भव्य प्रवेश–द्वारों से अंदर आते ही श्रद्धालुओं का स्वागत दिव्य वातावरण करता है। यहाँ प्रवेश करते ही विभिन्न देवताओं के दर्शन का सौभाग्य मिलता है, जिससे मन में श्रद्धा और पुण्य का अनुभव जागृत होता है। द्वारों के आसपास बनी मनमोहक कलाकृतियाँ और शांति से भरा वातावरण हर आगंतुक के मन को आकर्षित करता है और उन्हें एक आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति कराता है।

दर्शन का समय:

सुबह:	7:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक
शाम:	4:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक

धाम परिसर में मूर्ति–दर्शन एवं संग्रहालय (निःशुल्क)

धाम परिसर में सर्वथा निषेध है:

- किसी प्रकार का इलैक्ट्रोनिक उपकरण
- बैग और अन्य सामान
- बाहरी पेय और खाद्य सामग्री
- धूम्रपान, मदिरापान, तम्बाकू–सेवन, अन्य नशीली चीज़ें
- असभ्य वस्त्र–परिधान
- नारे और असभ्य भाषा का प्रयोग
- पालतू प्राणी

कृपया धाम की पवित्रता एवं मर्यादा बनाए रखने में सहयोग करें।

नम्र-निवेदन

भारतीय संस्कृति के सौंदर्य, शान्ति, दिव्यता एवं भक्ति के इस परिसर में आपकी मुलाकात एक यात्रा है– पवित्र भावनाओं से छलकती दिव्य तीर्थ–भूमि की, जो आपको दिव्य प्रेरणाओं से धन्य कर सकती है। कृपया इस तीर्थधाम की गरिमा को बनाए रखने में हमें सहयोंग दें।

धाम परिसर में प्रवेश के लिए सभी अधिकार संचालनकर्ता के अधीन हैं।

चार धाम परिसर में सुविधाएँ

एक ही पवित्र परिसर में चारों धामों का दिव्य संगम

इस पवित्र परिसर में शिव धाम, माँ वैष्णो देवी धाम, राधा–कृष्ण धाम और शनि धाम का एक साथ दर्शन करने का अद्भुत सौभाग्य प्राप्त होता है। यहाँ आने वाला श्रद्धालु मानो तीर्थयात्रा के चारों प्रमुख आयामों को एक ही स्थान पर अनुभव करता है। भोलेनाथ की करुणा, माता रानी का आशीर्वाद, राधा–कृष्ण की प्रेममयी लीला और शनिदेव की न्यायपूर्ण दृष्टि–सब मिलकर इस परिसर को आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्वितीय केंद्र बनाते हैं।

सुरक्षित और सुविधाजनक पार्किंग

चार धाम मंदिर परिसर में आगंतुकों और श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए एक सुव्यवस्थित और सुन्दर पार्किंग प्रणाली तैयार की गई है। लैंडस्केपिंग और आकर्षक डिज़ाइन के साथ विकसित यह पार्किंग क्षेत्र मंदिर परिसर के वातावरण में सहज रूप से घुल–मिल जाता है। इस सुविचारित व्यवस्था के कारण श्रद्धालुओं के आगमन से ही उनकी यात्रा सहज, स्वागतपूर्ण और बिना किसी परेशानी के शुरू होती है।

पार्किंग शुल्क

बस – 200 रुपये 4 घंटे के लिए, उसके बाद 50 रुपये हर घंटे पर बढ़ेगा।

कार – 100 रुपये 4 घंटे के लिए, उसके बाद 20 रुपये हर घंटे पर बढ़ेगा।

ऑटो / ई – रिक्शा – 50 रुपये 4 घंटे के लिए, उसके बाद 10 रुपये हर घंटे पर बढ़ेगा।

बाइक – 50 रुपये 4 घंटे के लिए, उसके बाद 10 रुपये हर घंटे पर बढ़ेगा।

विशेषताएँ

- साफ–सुथरा और योजनाबद्ध ले आउट
- वरिष्ठ नागरिकों, दिव्यांगजनों और वी. आई. पी. के लिए अलग पार्किंग ज़ोन
- 24 x 7 सुरक्षा, सी. सी. टीवी कैमरे, गार्ड और पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था
- किसी भी प्रकार की सहायता हेतु स्थल पर सेवाकर्मी उपलब्ध हैं।
- मंदिर परिसर के निकट, आसान और तेज़ पहुँच
- बरसात में भी सुरक्षित, उत्तम जल–निकासी व्यवस्था
- वाहन अपने जोखिम पर पार्क करें– कीमती सामान के लिए प्रबंधन उत्तरदायी नहीं
- पार्किंग टिकट खो जाने पर जुर्माना ₹ 20 (सत्यापन के बाद)
- पार्किंग समय–सुबह 7:00 बजे से मंदिर बंद होने तक
- अपना पार्किंग टिकट सुरक्षित रखें–स्वयंसेवक जाँच कर सकते हैं

लॉकर की सुविधा

चार धाम परिसर में निर्मित लॉकर की सुविधा श्रद्धालुओं के लिए एक सुरक्षित और सुविधाजनक स्थान प्रदान करता है, जहाँ वे अपनी व्यक्तिगत वस्तुएँ रखते हुए निश्चिंत होकर पूजा, दर्शन या किसी कार्यक्रम में सम्मिलित हो सकते हैं। यह सुविधा मंदिर अनुभव को और अधिक व्यवस्थित, सहज और भरोसेमंद बनाती है, जिससे श्रद्धालु पूर्ण मनोयोग से आध्यात्मिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं।

विशेषताएँ

सुरक्षित स्टोरेज: कीमती वस्तुओं, कपड़ों एवं अन्य सामान को सुरक्षित रूप से रखने के लिए लॉकर, शेल्फ़ और हैंगर की उचित व्यवस्था।

सुव्यवस्थित स्थान: जूते, बैग आदि वस्तुओं के लिए अलग–अलग निर्धारित सेक्शन।

स्टॉफ की उपलब्धता: क्लोक रूम की देखरेख, सहायता और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कर्मचारी उपलब्ध।

लेबलिंग एवं टैगिंग: जमा किए गए सामान को आसानी से पहचानने के लिए टैगिंग और नंबरिंग प्रणाली।

नियम एवं आवश्यक निर्देश

- लॉकर की सुविधा उपयोग हेतु ₹ 50 प्रति टिकट शुल्क टिकट काउंटर पर देना अनिवार्य है।
- समय–सुबह 07:00 बजे से लेकर मंदिर बंद होने तक।
- इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ–जमा करते समय स्विच ऑफ करना अनिवार्य।
- सभी जमा वस्तुएँ आकार सीमा के अनुसार ही स्वीकार की जाएँगी।
- नकदी या कीमती सामान जमा न करें।
- सारी जमा की गई वस्तुओं की जिम्मेदारी स्वयं की होगी।

धाम की अन्य विशिष्टताएं

- सरस्वती आध्यात्मिक कक्ष
- भगवानी ब्लॉक
- नानक ब्लॉक
- गौशाला
- यज्ञ–शाला
- रूद्रा स्मृति चिन्ह/उपहार की दुकान
- कैलाश योग कक्ष
- शंकर ध्यान कक्ष
- कात्यायनी धर्मार्थ होम्योपैथिक औषधालय
- राधा धर्मार्थ फिजियोथेरेपी चिकित्सालय
- माँ की रसोई
- श्रीधर आर्ट गैलरी

भूमि पूजन – चार धाम

23 अगस्त 2021 (सोमवार)

प्रबंध न्यासी डॉ. जे सी चौधरी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमला चौधरी, अपने पुत्रों श्री आशीष चौधरी एवं श्री आकाश चौधरी तथा अन्य परिवारजनों के साथ मिलकर चार धाम स्थल का भूमि पूजन सम्पन्न किया।

चार धाम – उद्‌घाटन समारोह

10 फ़रवरी 2025 (सोमवार)

दिव्य आशीर्वाद के साथ, चार धाम का उद्‌घाटन
भारत की माननीया सांसद श्रीमती हेमा मालिनी द्वारा सम्पन्न हुआ।

माँ वैष्णो देवी धाम - चार धाम, वृंदावन

माँ वैष्णो देवी धाम, वृंदावन में माँ के नौ अवतारों के दिव्य दर्शन का अलौकिक अनुभव करें।

पिछले 15 वर्षों से माँ वैष्णो धाम श्रद्धालुओं के लिए आस्था और आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। इस धाम की नींव डॉ. जे. सी. चौधरी द्वारा 27 नवम्बर 2004 को रखी गई थी और यह धाम 5 वर्ष, 5 महीने और 25 दिन में पूर्ण होकर 22 मई 2010 को भक्तों के दर्शन हेतु समर्पित किया गया था। इस विशाल मूर्ति और मंदिर परिसर की संकल्पना को मूर्त रूप देने का कार्य मुख्य सलाहकार एवं वास्तुकार श्री अरुण वर्मा और प्रसिद्ध आर्किटेक्चर फर्म डिज़ाइन वेल भारत (प्रा.) लिमिटेड के साथ युवा कलाकारों, श्री मनोज दास, श्री आशीष तंवर और श्री विनीत चौधरी की टीम ने किया था। माँ वैष्णों देवी का यह भव्य स्वरूप चमकीली लाल साड़ी, सुंदर गहनों और शस्त्र–अस्त्रों से अलंकृत है। माँ अपने वाहन सिंह पर विराजमान हैं और पास ही उनके रक्षक स्वरूप में हनुमान उनके समक्ष विराजमान हैं।

यह मूर्ति माँ के अधिकार, परोपकार और संरक्षण का दिव्य प्रतीक है। माँ की प्रतिमा, शेर और मंच सहित कुल द्रव्यमान लगभग 1,700 टन है। निर्माण में लगभग 400 टन स्टील और कंक्रीट का उपयोग किया गया है। मूर्ति की मजबूती हेतु 4 मीटर गहरी बेड़ा नींव बनाई गई है। संरचना को भूकंप (ज़ोन–फोर्थ) और 47 मी./से. की आंधी जैसी परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन किया गया है। गदा, चक्र, त्रिशूल, धनुष, शंख व कमल जैसे शस्त्रास्त्रों के निर्माण में कैंटिलीवर डिज़ाइन सबसे बड़ी चुनौती रहे, जिन्हें वैज्ञानिक गणनाओं और श्रेष्ठ वास्तु कौशल से सफलतापूर्वक निर्मित किया गया। माँ वैष्णों देवी प्रतिमा की कुल ऊँचाई (नींव से शिखर तक) 141 फीट है। शेर की ऊँचाई 50 फीट, लंबाई 87 फीट, पूँछ 54 फीट है। हनुमान जी की मूर्ति 32 फीट (पूँछ –38 फीट, गदा –26 फीट) है।

यह धाम केवल मूर्ति की भव्यता के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी गुफा और दिव्य स्थलों के लिए भी प्रसिद्ध है– गुफा में प्रवेश करते ही श्री गणेश जी के दर्शन, माँ के नौ दुर्गा स्वरूप के दर्शन, भैरव बाबा के दर्शन, जिनके बिना यात्रा अधूरी मानी जाती है। यहाँ माँ के प्रांगण में माँ गंगा–यमुना की प्रतिमाओं के साथ बहते झरनों का अद्भुत दृश्य है, मानो स्वर्ग की पावन नदियाँ स्वयं माँ के प्रांगण में अवतरित हो गई हों।

मंदिर का विशाल परिसर, मंत्रोच्चारण, भजन–कीर्तन और घंटियों की मधुर ध्वनि भक्तों के मन को शांति और आत्मिक सुकून प्रदान करती हैं। मंदिर के गर्भगृह में माँ के अष्टधातु स्वरूप के दर्शन और हॉल की दीवारों पर बनी सभी देवी–देवताओं की कलाकृतियाँ तथा बाहरी दीवारों पर भगवान श्रीकृष्ण की सुंदर कलाकृतियाँ अत्यंत आकर्षक ढंग से दर्शाई गई हैं। माँ वैष्णो धाम (चार धाम–वृन्दावन) उन श्रद्धालुओं के लिए एक अद्वितीय तीर्थ स्थान है, जो माँ के दिव्य स्वरूप का दर्शन कर अपनी भक्ति, शक्ति और आत्मिक साधना को और सशक्त करना चाहते हैं।

चार धाम का माँ वैष्णों धाम केवल भक्ति का प्रतीक नहीं बल्कि आधुनिक भारतीय वास्तुकला और इंजीनियरिंग का अद्भुत संगम है। यह मूर्ति आने वाली पीढ़ियों तक शक्ति, संरक्षण और परोपकार का संदेश देती रहेगी।

माता वैष्णो देवी की प्रतिमा के हाथों में सुसज्जित वस्तुओं के आकार

प्रतिमा की ऊँचाई: 141 फीट

141 फीट ऊँची माँ वैष्णो देवी की भव्य प्रतिमा, जे के ट्रस्ट द्वारा स्थापित, लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स 2013 में दर्ज है तथा प्राचीन मंदिरों और सुंदर उद्यानों सहित अपनी विशिष्ट पहचान के लिए लंदन स्थित वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स 2022 में सूचीबद्ध किया गया है।

भूमि पूजन – माँ वैष्णो देवी धाम

27 नवम्बर 2004 (शनिवार)

प्रबंध न्यासी डॉ. जे सी चौधरी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कमला चौधरी, अपने पुत्रों श्री आशीष चौधरी एवं श्री आकाश चौधरी तथा अन्य परिवारजनों के साथ मिलकर भूमि पूजन सम्पन्न किया।

उद्घाटन – माँ वैष्णो देवी धाम

22 मई 2010 (शनिवार)

ईश्वरीय आशीर्वाद के साथ, माँ वैष्णो देवी धाम का उद्घाटन
जम्मू एवं कश्मीर से राज्यसभा के माननीय सांसद, श्री करण सिंह जी द्वारा किया गया।

माँ वैष्णो देवी की अष्टधातु प्रतिमा

चार धाम, वृंदावन में बना माँ वैष्णो देवी धाम अपने वास्तुशिल्प और आध्यात्मिकता में अद्वितीय है। जहाँ अधिकांश मंदिर वर्गाकार या आयताकार होते हैं, वहीं यहाँ का मंदिर दीर्घ गोलाकार (Oval Shape) है। इसका विशेष लाभ यह है कि श्रद्धालुओं के लिए माँ की परिक्रमा करना अधिक सरल और सुगम हो जाता है। मंदिर के गर्भगृह में माँ वैष्णो देवी की 6.5 फीट ऊँची अष्टधातु की प्रतिमा स्थापित है। इस अद्वितीय प्रतिमा को तीन नवोदित कलाकारों आशीष तंवर, मनोज दास एवं विनीत चौधरी की कला और समर्पण से तराशा और निर्मित किया गया है।

अष्टधातु का महत्व

अष्टधातु एक पवित्र मिश्रधातु है, जो आठ धातुओं से मिलकर बनती हैं– सोना, चाँदी, ताँबा, जस्ता, सीसा , टिन, लोहा और पारा। हिंदू धर्म में अष्टधातु को अत्यंत सात्विक, शुद्ध और पवित्र माना गया है। इसका प्रयोग प्राचीन काल से ही देवी–देवताओं की मूर्तियों के निर्माण में किया जाता है। यह अत्यंत टिकाऊ और सदियों तक सुरक्षित रहती हैं। साथ ही आध्यात्मिक ऊर्जा का संवाहक एवं धार्मिक दृष्टि से शुभ और मंगलकारी होती हैं।

अष्टधातु मूर्ति निर्माण की प्रक्रिया

अष्टधातु की मूर्ति बनाने की कला अत्यंत प्राचीन और जटिल है। इसमें मुख्यतः "लॉस्ट–वैक्स तकनीक" का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया निम्न प्रकार से होती है– सबसे पहले कलाकार देवी की आकृति का सटीक मॉडल मोम से तैयार करते हैं। यह प्रतिरूप बिल्कुल वैसा ही होता है जैसा मूर्ति का अंतिम स्वरूप होगा। मोम की इस प्रतिमा को विशेष प्रकार की मिट्टी से पूरी तरह ढंक दिया जाता है। मिट्टी परत–दर–परत चढ़ाई जाती है, ताकि मजबूत सांचा बन सके। गर्मी से मोम हटाया जाता है। मिट्टी से ढंके सांचे को अग्नि में रखा जाता है। गर्मी के प्रभाव से मिट्टी कठोर हो जाती है। मोम पिघलकर बाहर निकल जाता है। इससे अंदर खोखला स्थान रह जाता है, जो मूर्ति का आकार बनाता है। आठों धातुओं को निर्धारित अनुपात में लेकर गलाया जाता है। यह अत्यंत सावधानी से किया जाता है, क्योंकि हर धातु का गलनांक अलग होता है। जब धातुएँ पूरी तरह पिघल जाती हैं, तो उन्हें सावधानीपूर्वक मिट्टी के सांचे में डाला जाता है। सांचा पूरी तरह भर जाने के बाद उसे ठंडा होने के लिए छोड़ दिया जाता है। सांचा ठंडा होने के बाद मिट्टी को तोड़ दिया जाता है। फिर अंदर से निकलती है देवी माँ की सुंदर अष्टधातु मूर्ति। शुरुआत में मूर्ति की सतह खुरदरी होती है। कलाकार धीरे–धीरे खुरदरापन हटाते हैं, सतह को चिकना करते हैं, और अंत में उसे चमकदार व प्राकृतिक रूप प्रदान करते हैं।

अष्टधातु की प्रतिमा भक्ति और श्रद्धा का अद्वितीय केंद्र है। यह न केवल भक्तों को माँ के दर्शन कराती है, बल्कि उन्हें अंदर से सात्विक ऊर्जा और शांति प्रदान करती है। माँ वैष्णो धाम की अष्टधातु प्रतिमा केवल एक कलात्मक चमत्कार नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा और भारतीय शिल्पकला की अमूल्य धरोहर है। दीर्घ–गोलाकार मंदिर में स्थापित यह प्रतिमा आने वाली पीढ़ियों के लिए भक्ति, कला और संस्कृति की प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

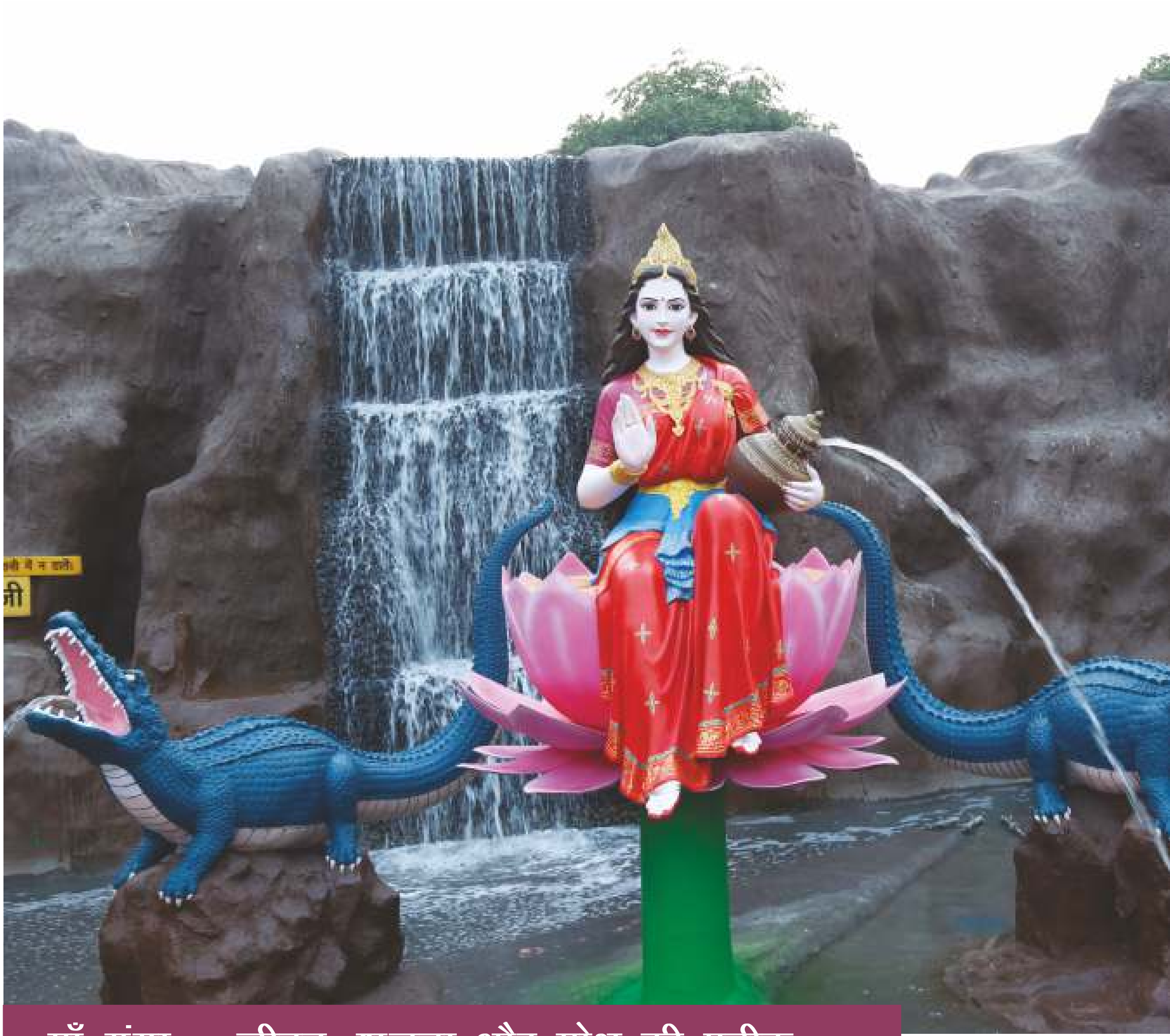

माँ गंगा – जीवन, शुद्धता और मोक्ष की प्रतीक

माँ गंगा की यह प्रतिमा भक्तों के लिए केवल एक मूर्ति नहीं, बल्कि पवित्रता, मोक्ष और आस्था का जीवंत प्रतीक है। माँ वैष्णो देवी धाम परिसर में स्थापित यह अद्भुत कलाकृति न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि स्थापत्य और शिल्पकला का भी अनुपम उदाहरण है। माँ गंगा की प्रतिमा की ऊँचाई 10.5 फीट और चौड़ाई एवं व्यास 5.8 फीट है। माँ गंगा पूर्ण शांति और सौम्यता के साथ कमल आसन पर विराजमान हैं। कमल को भारतीय संस्कृति में शुद्धता और दिव्यता का प्रतीक माना गया है। प्रतिमा के दोनों ओर दो विशाल मगरमच्छ उकेरे गए हैं।

ये माँ गंगा के वाहन के प्रतीक हैं। मगरमच्छ बल, धैर्य और जलीय सत्ता का प्रतीक है। माँ गंगा रत्नजड़ित आभूषणों और सुंन्दर वस्त्रों से अलंकृत दिखाई देती हैं, जो निर्मलता और पवित्रता का द्योतक है। एक हाथ में कलश है, जिसमें से पवित्र जल प्रवाहित होता हुआ दर्शाया गया है। दूसरा हाथ वरमुद्रा में है, जिससे यह संदेश मिलता है कि माँ गंगा अपने भक्तों को कृपा और आशीर्वाद प्रदान करती हैं।

माँ गंगा को त्रिपथगा कहा जाता है, क्योंकि वे तीनों लोकों—स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल से होकर प्रवाहित होती हैं। माँ गंगा का अवतरण महर्षि भगीरथ की तपस्या और भगवान शिव की जटाओं के माध्यम से हुआ था। इस कथा से गंगा माँ को मोक्षदायिनी और पापहारिणी माना जाता है। मान्यता है कि गंगा—स्नान और गंगाजल का सेवन पापों का नाश करता है और आत्मा को शुद्ध बनाता है। प्रतिमा के पीछे वाटरफॉल बनाया गया है, जो यह आभास कराता है कि गंगा निरंतर प्रवाहित हो रही हैं। प्रतिमा को बनाने में बारीकी से की गई नक्काशी और चमकदार परिष्करण इसे जीवंत बना देता है। मूर्ति के आस—पास वातावरण को इस तरह सजाया गया है कि भक्तों को प्राकृतिक गंगा तट जैसा अनुभव होता है।

माँ गंगा की प्रतिमा हमें यह सिखाती है कि जैसे गंगा निःस्वार्थ भाव से सबके लिए बहती हैं, वैसे ही मनुष्य का जीवन भी परोपकार और सेवा के लिए समर्पित होना चाहिए। गंगा की निर्मल धारा पवित्रता, शुद्धता और जीवनदायिनी ऊर्जा का प्रतीक है। उनका त्याग और कल्याणकारी स्वरूप हमें यह विश्वास दिलाता है कि माँ गंगा सदैव अपने भक्तों की रक्षा और मंगल करती हैं। यह दिव्य प्रतिमा केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं, बल्कि कला, आस्था और प्रकृति का अनुपम संगम है।

माँ यमुना – भक्ति, करुणा और शुद्धता की प्रतीक

माँ यमुना की यह प्रतिमा भक्तों के लिए केवल एक मूर्ति नहीं, बल्कि भक्ति, सौम्यता और जीवनदायिनी ऊर्जा का जीवंत प्रतीक है। माँ वैष्णो देवी धाम परिसर में स्थापित यह अद्‌भुत कलाकृति न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि स्थापत्य और शिल्पकला का भी अनुपम उदाहरण है। माँ यमुना की प्रतिमा की ऊँचाईः 9.2 फीट, चौड़ाईः 5.7 फीट, व्यासः 5.6 फीट है। माँ यमुना को शांति और माधुर्य के साथ कमल आसन पर विराजमान दर्शाया गया है। कमल भारतीय संस्कृति में शुद्धता और दिव्यता का प्रतीक है। प्रतिमा के दोनों ओर कछुए उकेरे गए हैं, जो माँ यमुना के वाहन के प्रतीक हैं। कछुआ धैर्य, स्थिरता और जीवन की रक्षा का द्योतक माना जाता है।

माँ यमुना रत्नजड़ित आभूषणों और सुंदर वस्त्रों से अलंकृत दिखाई देती हैं, जो उनकी जीवनदायिनी और कल्याणकारी शक्ति का प्रतीक है। माँ यमुना को सूर्यपुत्री और यमराज की बहन कहा जाता है। उनकी कथा सूर्य और संज्ञा देवी से जुड़ी है। मान्यता है कि यम द्वितीया (भाई दूज) का पर्व माँ यमुना और यमराज के भाई–बहन संबंध की स्मृति में मनाया जाता है। इस दिन यमुना–स्नान और यमुना पूजन का विशेष महत्व है। माँ यमुना का जल शीतल, सौम्य और जीवनदायी माना गया है। यमुना स्नान से पापों का नाश और पुण्य की प्राप्ति होती है। विशेष रूप से वृन्दावन और मथुरा में माँ यमुना का महत्व अत्यधिक है, जहाँ श्रीकृष्ण की बाल लीलाएँ यमुना तट पर सम्पन्न हुई। इसी कारण माँ यमुना को भक्तवत्सला और कृष्णप्रिया भी कहा जाता है।

प्रतिमा के पीछे वॉटरफॉल बनाया गया है, जिससे यह आभास होता है कि यमुना निरंतर प्रवाहित हो रही हैं। प्रतिमा पर की गई नक्काशी और चमकदार परिष्करण इसे जीवंत बना देता है। प्रतिमा के आस–पास ऐसा वातावरण रचा गया है कि भक्तों को प्राकृतिक यमुना तट जैसा अनुभव हो। माँ यमुना की प्रतिमा हमें यह सिखाती है कि जैसे यमुना अपने तटवर्ती जन–जीवन को पोषित करती हैं, वैसे ही मनुष्य को भी सेवा, भक्ति और प्रेम में समर्पित रहना चाहिए। उनका प्रवाह जीवन में मधुरता, संतुलन और शीतलता का प्रतीक है। माँ यमुना का करुणामय और पावन स्वरूप यह विश्वास दिलाता है कि वे सदैव अपने भक्तों की रक्षा करती हैं और उन्हें मोक्ष की ओर अग्रसर करती हैं। यह दिव्य प्रतिमा केवल एक धार्मिक केंद्र नहीं, बल्कि कला, आस्था और प्राकृतिक सौंदर्य का अनुपम संगम है।

माँ वैष्णो देवी के नौ अवतार – हिंदू पौराणिक परंपरा में शक्ति और आस्था के महान प्रतीक

नवदुर्गा स्वरूप और धर्म की अधर्म पर विजय

माँ वैष्णो देवी धाम की पवित्र गुफा में माँ दुर्गा के नौ रूपों को बड़े ही सुन्दर और दिव्य ढंग से स्थापित किया गया है। यह अद्‌भुत दृश्य भक्तों को प्रत्यक्ष रूप से यह अनुभव कराता है कि मानो स्वयं देवी माँ अपने सभी रूपों में यहाँ विराजमान हों। गुफा की दीवारों और वातावरण में भक्ति, शक्ति और दिव्यता का अद्वितीय संगम दिखाई देता है। इन नौ रूपों में शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का दर्शन भक्तों को आत्मबल, साहस, श्रद्धा और अलौकिक ऊर्जा प्रदान करता है। नवदुर्गा माँ वैष्णो के नौ दिव्य रूपों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिनकी उपासना नवरात्रि पर्व के दौरान की जाती है। इनकी कथा का संबंध असुरराज महिषासुर के अत्याचार से जुड़ा है।

हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, असुरराज महिषासुर के साथ युद्ध की नौ दिनों की लंबी अवधि के दौरान नौ रूपों को दुर्गा के नौ चरणों में माना जाता है, जहाँ दसवें दिन को विजयादशमी (विजय दिवस) के रूप में मनाया जाता है।

इसीलिए सभी पूजन ध्यान के साथ आरंभ होते हैं और हजारों वर्षों से यह परंपरा चली आ रही है। यह आत्मा के विविध तत्वों को जागृत करने का माध्यम है। माँ दुर्गा के नौ रूप और उनके प्रत्येक नाम में निहित शक्ति को पहचानना ही नवरात्रि का वास्तविक उद्देश्य है। नवरात्रि पर्व की नौ रातें देवी माँ के नौ विभिन्न रूपों को समर्पित हैं, जिन्हें नवदुर्गा कहा जाता है। असीम आनंद और उल्लास के इन नौ दिनों का समापन दशहरे के पर्व पर होता है, जो बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

पवित्र गुफा

जहाँ नवदुर्गा के नौ रूपों की दिव्य शक्ति का दर्शन

चार धाम, वृंदावन स्थित माँ वैष्णो देवी धाम की पवित्र गुफा यात्रा श्रद्धा का प्रतीक ही नहीं, बल्कि भक्तों को देवी के विविध स्वरूपों का अद्भुत अनुभव भी कराती है। यह गुफा यात्रा जम्मू के कटरा स्थित माँ वैष्णो देवी तीर्थ की प्रसिद्ध गुफा से प्रेरित होकर निर्मित की गई है। धाम में बनी यह पवित्र गुफा भक्तों को माँ वैष्णो देवी के नौ अवतारों के दर्शन कराते हुए, उन्हें चट्टानी गुफा के माध्यम से शांति और पवित्रता का अनुभव कराती है। **जैसे ही आप इस दिव्य गुफा में प्रवेश करते हैं, सर्वप्रथम आपको विघ्नहर्ता श्री गणेश जी के दर्शन प्राप्त होते हैं, जिनके साथ रिद्धि (समृद्धि) और सिद्धि (आध्यात्मिक शक्तियाँ) भी विराजमान हैं।**

गुफा में सर्वप्रथम श्री गणेश जी साथ देवी रिद्धि एवं सिद्धि के दिव्य दर्शन

गुफा के अंदर माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों की नौ सुंदर मूर्तियाँ स्थापित हैं। माँ शैलपुत्री, माँ ब्रह्मचारिणी, माँ चंद्रघंटा, माँ कूष्मांडा, माँ स्कंदमाता, माँ कात्यायनी, माँ कालरात्रि, माँ महागौरी और माँ सिद्धिदात्री। इन मूर्तियों को गुफा में प्राकृतिक रूप से सजाया गया है, जो भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। गुफा की एक विशेष और अनूठी विशेषता यह है कि दर्शन के समय ठंडे पानी की धारा भक्तों के पैरों के नीचे से प्रवाहित होती है, जो उनके सभी पापों को धो देती है और मन को निर्मल बना देती है। इस पवित्र प्रवाह से होकर गुजरना भक्तों के लिए एक अत्यंत संतोषजनक और आध्यात्मिक अनुभव बन जाता है। गुफा की लंबाई की बात करें तो यह दोनों ओर (प्रवेश और निकास सहित) लगभग 300 फीट में फैली हुई है।

यात्रा का समापन श्री भैरवनाथ जी के दर्शन से होता है, जिन्हें माँ का दिव्य–रक्षक माना गया है। माँ के वरदान के अनुसार, अंत में भैरवनाथ जी के आशीर्वाद के साथ ही यह पावन यात्रा पूर्ण मानी जाती है। यह गुफा केवल एक शिल्पकला का अद्भुत नमूना ही नहीं, बल्कि आत्मा को छू लेने वाला ऐसा आध्यात्मिक अनुभव है, जो उन भक्तों को भी माँ वैष्णो देवी की यात्रा का आभास कराता है जो जम्मू नहीं जा पाते।

श्री गणेश जी संग माँ रिद्धि और सिद्धि – समृद्धि और आध्यात्मिकता का दिव्य संगम

माँ वैष्णो देवी धाम की पवित्र गुफा में प्रवेश करते ही, आपको सर्वप्रथम विघ्नहर्ता श्री गणेश जी के दर्शन होते हैं। उनके साथ माँ रिद्धि और सिद्धि भी विराजमान हैं। यह दृश्य भक्तों को आशीर्वाद और पूर्णता का अनुभव कराता है। श्री गणेश जी प्रतिमा की ऊँचाई: 5.7 फीट, चौड़ाई: 4.9 फीट तथा व्यास: 3.11 फीट है। श्री गणेश जी स्वर्णिम आसन पर विराजमान हैं। उनका एक हाथ वरमुद्रा में है, जो भक्तों को आशीर्वाद देता है, और दूसरे हाथ में उनका प्रिय मोदक है, जो समृद्धि और आनंद का प्रतीक है।

उनके चरणों के पास उनका वाहन मूषक (चूहा) स्थित है। माँ रिद्धि और सिद्धि की प्रतिमा की ऊँचाई: 6.3 फीट, चौड़ाई: 2.6 फीट तथा व्यास: 2.3 फीट है। श्री गणेश जी के दोनों ओर माँ रिद्धि और सिद्धि विराजमान हैं। माँ रिद्धि (समृद्धि की देवी) और माँ सिद्धि (आध्यात्मिक शक्ति और ज्ञान की देवी) सुंदर आभूषणों और पारंपरिक परिधान से सुसज्जित हैं। उनके हाथों में चंवर (पंखा) है, जो सेवाभाव और समर्पण का प्रतीक है।

शास्त्रों के अनुसार, श्री गणेश जी की अर्धांगिनी मानी जाने वाली माँ रिद्धि और सिद्धि मिलकर जीवन में भौतिक समृद्धि और आध्यात्मिक सिद्धि प्रदान करती हैं। यही कारण है कि श्री गणेश जी को सिद्धि विनायक कहा जाता है। गुफा में प्रवेश करते ही इस दिव्य त्रयी (श्री गणेश, रिद्धि और सिद्धि) के दर्शन से भक्त का हृदय शांति, आस्था और उत्साह से भर उठता है। यह दर्शाता है कि जीवन में केवल बाधाओं का निवारण ही नहीं, बल्कि समृद्धि और सिद्धि का संतुलन भी आवश्यक है। शास्त्रों के अनुसार, श्री गणेश जी को केवल विघ्नहर्ता ही नहीं, बल्कि गृहस्थ जीवन के आदर्श के रूप में भी माना जाता है। उनकी दो दिव्य पत्नियाँ "माँ रिद्धि और माँ सिद्धि" क्रमशः समृद्धि और सिद्धि (आध्यात्मिक शक्ति एवं ज्ञान) की प्रतीक हैं।

पौराणिक कथाओं के अनुसार, एक बार ब्रह्मांड के देवगण और ऋषियों ने ब्रह्मा जी से प्रश्न किया—भगवान गणेश जी सबके विघ्न दूर करते हैं, फिर वे सदैव अकेले क्यों रहते हैं? उनके विवाह का क्या कोई कारण नहीं बनता? तब ब्रह्मा जी ने अपनी दो कन्याएँ, रिद्धि और सिद्धि, का विवाह श्री गणेश जी से करने का विचार किया। इसके बाद श्री गणेश जी का विवाह माँ रिद्धि और सिद्धि से हुआ। माँ रिद्धि ने उन्हें संपन्नता, ऐश्वर्य और भौतिक समृद्धि प्रदान की। माँ सिद्धि ने उन्हें ज्ञान, तपस्या और आध्यात्मिक शक्ति का वरदान दिया। इन दोनों से गणेश जी को दो पुत्र प्राप्त हुए जो शुभ (सौभाग्य और मंगल का प्रतीक) एवं लाभ (समृद्धि और प्रगति का प्रतीक) हैं।

इसीलिए गणेश जी को सिद्धि–विनायक कहा जाता है और उनकी उपासना करने से जीवन में शुभ और लाभ दोनों प्राप्त होते हैं। यह कथा हमें सिखाती है कि जीवन में केवल भौतिक सुख (रिद्धि) ही पर्याप्त नहीं, और न ही केवल आध्यात्मिक साधना (सिद्धि)। दोनों का संतुलन ही जीवन को पूर्णता और आनंद देता है।

हनुमान जी – शक्ति और भक्ति के अद्वितीय संगम

श्री गणेश जी और माँ रिद्धि–सिद्धि के दर्शन के बाद, भक्तों को माँ दुर्गा और श्री हनुमान जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। इस छवि में माँ दुर्गा शेर पर विराजमान हैं। माँ दुर्गा का यह स्वरूप शक्ति, साहस और धर्म की रक्षा का प्रतीक है।

उनके अनेक हाथों में शस्त्र धारण हैं– जैसे त्रिशूल, गदा, तलवार, चक्र, कमल आदि। यह संकेत है कि माँ अपने भक्तों की रक्षा करती हैं और असुरों का नाश कर धर्म की स्थापना करती हैं। माँ दुर्गा की प्रतिमा का आकार – ऊँचाई: 7.3 फीट, चौड़ाई: 5.11 फीट तथा व्यास: 3.3 फीट है। दूसरी ओर, श्री हनुमान जी माँ दुर्गा के चरणों में नतमस्तक हैं। यह दर्शाता है कि परमवीर और श्रीरामभक्त हनुमान जी भी शक्ति स्वरूपिणी माँ दुर्गा की उपासना और स्तुति करते हैं। श्री हनुमान जी की प्रतिमा का आकार – ऊँचाई: 2.7 फीट तथा चौड़ाई: 2.5 फीट, व्यास: 1.6 फीट है।

शक्ति और भक्ति का संगम

माँ दुर्गा शक्ति की अधिष्ठात्री देवी हैं और हनुमान जी भक्ति व बल के स्वरूप। जब–जब धरती पर अधर्म और अन्याय बढ़ा, तब–तब माँ दुर्गा ने असुरों का संहार किया। उसी प्रकार, हनुमान जी ने अपने बल और बुद्धि से भगवान श्रीराम की सेवा करते हुए रावण का संहार कराया। इस प्रकार दोनों मिलकर "शक्ति और भक्ति के अद्वितीय संगम" के प्रतीक हैं।

हनुमान जी की दुर्गा भक्ति

पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब हनुमान जी लंका जाने से पहले समुद्र पार करने की तैयारी कर रहे थे, तो उन्होंने माँ दुर्गा का ध्यान किया और उनकी कृपा से ही समुद्र पार कर सके। ऐसा कहा जाता है कि बिना माँ दुर्गा की कृपा के कोई भी बड़ा कार्य सफल नहीं हो सकता। हनुमान जी ने माँ दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए "दुर्गा स्तुति" भी की थी।

माँ वैष्णो देवी और हनुमान जी

एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, जब माँ वैष्णो देवी ने त्रिकूट पर्वत पर तपस्या की, तो उन्होंने हनुमान जी को अपने द्वारपाल के रूप में नियुक्त किया। आज भी माँ वैष्णो देवी धाम में हनुमान जी का विशेष स्थान है। भक्त मानते हैं कि हनुमान जी की अनुमति के बिना कोई भी माँ के दर्शन नहीं कर सकता। माँ दुर्गा हमें साहस, शक्ति और आत्मबल प्रदान करती हैं। श्री हनुमान जी हमें भक्ति, सेवा और निष्ठा का मार्ग दिखाते हैं। जब शक्ति और भक्ति साथ हों, तब कोई भी बाधा असंभव नहीं रहती।

माँ दुर्गा के नौ अवतार

1. माँ शैलपुत्री – दुर्गा का प्रथम अवतारः माँ शैलपुत्री 'पर्वतराज' (पर्वतों के राजा) हिमालय/हिमवान की पुत्री हैं। माँ शैलपुत्री माँ दुर्गा के नौ अवतारों में से पहला अवतार हैं और नवरात्रि के पहले दिन उनकी पूजा की जाती है। अपने पिछले जन्म में, वे राजा दक्ष की पुत्री 'सती भवानी माँ' थीं। माँ शैलपुत्री जिन्हें पार्वती के नाम से भी जाना जाता है, का विवाह भगवान शिव के साथ हुआ। दुर्गा नवरात्रि के पहले दिन, देवी पार्वती की पूजा की जाती है। माँ शैलपुत्री अपने दाहिने हाथ में एक 'त्रिशूल', जो कि एक अस्त्र है और बाएं हाथ में एक कमल का फूल धारण किया हैं। वे बैल पर सवार हैं। उनकी मुस्कान सुखद और उनका रूप आनंदमयी है।

2. माँ ब्रह्मचारिणी – दुर्गा का दूसरा अवतारः माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा नवरात्रि के दूसरे दिन की जाती है। ब्रह्मचारिणी वह देवी हैं जिन्होने 'तप' किया था अर्थात् तपस्या की थी। माँ प्यार और निष्ठा का मूर्त रूप हैं। वे अपने दाहिने हाथ में जप माला और बाएं हाथ में कमंडल धारण करती हैं। उन्हें 'उमा' और 'तपचारिणी' भी कहा जाता है और वे अपने भक्तों को ज्ञान और बुद्धि प्रदान करती हैं।

3. माँ चन्द्रघंटा – दुर्गा का तीसरा अवतारः माँ चन्द्रघंटा की पूजा नवरात्रि के तीसरे दिन की जाती है। वे बहुत उज्ज्वल और आकर्षक हैं। माँ दुर्गा बाघ की सवारी करती हैं, उनकी त्वचा सुनहरी रंगत वाली है, उनके आठ हाथ और तीन आंखें हैं। उनके आठों हाथ दिव्य शस्त्रों से अलंकृत हैं। जबकि शेष दो हाथ क्रमशः वरदान देने तथा हानि से बचाने की मुद्राओं में हैं। 'चन्द्र + घंटा' का अर्थ परम आनंद और ज्ञान है, जो चांदनी रात में ठंडी हवा की तरह शांति और स्थिरता प्रदान करती हैं।

4. माँ कूष्मांडा – दुर्गा का चौथा अवतारः माँ कूष्मांडा की पूजा नवरात्रि के चौथे दिन की जाती है। वे हँसते हुए चेहरे के साथ सूर्य की तरह दसों दिशाओं में चमकती हैं। वे पूरे सौर मंडल को नियंत्रित करती हैं। उनके आठ हाथों में से छः हाथ दिव्य शस्त्रों से अलंकृत हैं और शेष दो हाथों में एक कमल और एक माला शोभित हैं। वे बाघ पर सवार हैं। उन्हें 'कुम्हड़' का प्रसाद पसंद है, इसलिए उनका नाम 'कूष्मांडा' लोकप्रिय हो गया है।

5. माँ स्कंदमाता – दुर्गा का पांचवाँ अवतारः स्कंदमाता की पूजा नवरात्रि के पांचवें दिन की जाती है। उनका एक पुत्र है 'स्कंद' जिसे वे अपनी गोद में रखती हैं। उनकी चार हाथ हैं; दो हाथों में कमल पकड़े हुए हैं जबकि अन्य दो हाथ क्रमशः रक्षा और वर देने की मुद्राओं में हैं। कहते हैं कि स्कंदमाता की कृपा से मूर्ख भी ज्ञान का सागर बन जाता है। महान और प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान कालिदास ने अपनी दो महान् रचनाएं 'रघुवंशम' महाकाव्य और 'मेघदूतम' स्कंदमाता की कृपा से लिखी थीं। माता को अग्नि की देवी के रूप में माना जाता है। वे शेर पर सवार हैं।

6. माँ कात्यायनी – दुर्गा का छठा अवतारः माँ कात्यायनी की पूजा नवरात्रि के छठे दिन की जाती है। ऋषि कात्यायन ने जगतमाता को अपनी पुत्री के रूप में प्राप्त करने के लिए तपस्या की थी। माता ने उनको आशीर्वाद दिया और भगवान कृष्ण को पति रूप में पाने के लिए यमुना नदी के तट पर ऋषि कात्यायन की पुत्री के रूप में जन्म लिया। वे व्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रूप में जानी जाती हैं। माँ कात्यायनी की चार हाथ हैं। वे प्रथम बाएं हाथ में एक अस्त्र और दूसरे में एक कमल धारण किए हैं और दोंनो दाहिने हाथ क्रमशः आशीर्वाद और रक्षा के लिए है। वे शेर की सवारी करती हैं।

7. माँ कालरात्रि – दुर्गा का सातवाँ अवतारः माँ कालरात्रि की पूजा नवरात्रि के सातवें दिन की जाती है। वे रात्रि के समान अंधेरी एवं काली हैं, इसलिए उन्हें 'कालरात्रि' कहा जाता है। उनके बाल खुले हुए हैं एवं उनकी तीन आंखें और चार हाथ हैं, उनका वाहन एक गधा है। वे अंधेरे और अज्ञान का नाश करती हैं। वे अपनी नासिका से आग फेंकती हैं। वे अपने बाएं हाथ में एक तेज खड्ग रखती हैं और निचले हाथ से अपने भक्तों को आशीर्वाद देती हैं। चूंकि वे अपने भक्तों को समृद्धि का आशीर्वाद देती हैं, इसलिए उन्हें 'शुभांकरी' या 'शुभमकारी' भी कहा जाता है।

8. माँ महागौरी – दुर्गा का आठवां अवतारः माँ महागौरी की पूजा नवरात्रि के आठवें दिन की जाती है। महागौरी चन्द्रमा और चमेली की तरह धवल दिखती हैं। उनकी चार हाथ हैं। उनके अस्तित्व से शांति और करुणा बिखरती है एवं वे प्रायः श्वेत या हरित वर्ण की साड़ी पहने होती हैं। वे एक डमरू और एक त्रिशूल धारण किए होती हैं और प्रायः उन्हें बैल की सवारी करते दिखाया जाता है। उनका ऊपरी बायां हाथ मुद्रा में है और वे अपने निचले बाएँ हाथ में 'डमरू' रखती हैं। उनके ऊपरी दाहिने हाथ में त्रिशूल है और निचला दाहिना हाथ आशीर्वाद देने की मुद्रा में है।

9. माँ सिद्धिदात्री – दुर्गा का नौवां अवतारः माँ सिद्धिदात्री को नवरात्रि के नौवें दिन पूजा जाता है। महा शक्ति सभी आठ सिद्धियां देती हैं–अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। 'देवी पुराण' के अनुसार भगवान शिव ने ये सभी सिद्धियां सर्वोच्च देवी महाशक्ति की पूजा करके प्राप्त की थीं। उनकी कृतज्ञता के कारण शिव का आधा शरीर देवी का शरीर हो गया है, इसलिए भगवान शिव का नाम 'अर्धनारीश्वर' प्रसिद्ध हो गया है। वे कमल पर बैठी हैं। सिद्धिदात्री देवी की पूजा उन सभी देवताओं, ऋषियों, मुनीश्वरों, सिद्ध योगियों और सभी आम भक्तों द्वारा की जाती है जो धार्मिक गुण प्राप्त करना चाहते हैं।

श्री भैरवनाथ जी के दर्शन

माँ वैष्णो देवी धाम की पावन गुफा में, जब भक्त माँ के नौ दिव्य स्वरूपों – नवदुर्गा – के दर्शन कर परिक्रमा पूर्ण करते हैं, तो अंत में उन्हें माँ के परम रक्षक और सच्चे सेवक श्री भैरवनाथ जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता है। श्री भैरवनाथ प्रतिमा की लगभग ऊँचाई: 5.11 फीट, चौड़ाई: 5 फीट और व्यास: 4.7 फीट है। यह भव्य प्रतिमा अपने प्रभावशाली और दिव्य स्वरूप से गुफा के वातावरण को अद्भुत भक्ति और श्रद्धा से भर देती है।

प्रतिमा के चारों ओर जम्मू की माँ वैष्णो देवी की पावन पहाड़ियों का कलात्मक चित्रण किया गया है, जो वहाँ के वास्तविक दृश्य की भव्यता का अनुभव कराता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो भक्त सचमुच त्रिकूट पर्वत की उस पावन यात्रा पर निकल आए हों। भैरवनाथ जी केवल एक प्रतिमा मात्र नहीं, बल्कि भक्ति, समर्पण और सेवा का जीवंत प्रतीक हैं। पुराणों के अनुसार, जब माँ वैष्णो देवी ने असुरों का संहार कर अपने तप और भक्ति से संसार को पवित्र किया, तब भैरवनाथ भी उनके पीछे–पीछे गुफा तक पहुँचे। भैरव का अभिप्राय माँ की शक्ति की परीक्षा लेना था। किंतु अंततः माँ के आदेश से उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया।

माँ वैष्णो देवी उनकी भक्ति और समर्पण से प्रसन्न हुईं और उन्हें वरदान दिया कि "मेरे दर्शन तब तक पूर्ण नहीं माने जाएंगे, जब तक भक्त तुम्हारे दर्शन नहीं करेंगे।" इसी कारण आज भी माँ वैष्णो देवी की पूजा–यात्रा भैरवनाथ जी के दर्शन के बिना अधूरी मानी जाती है। भैरवनाथ जी की प्रतिमा भक्तों को यह संदेश देती है कि सच्ची भक्ति सेवा और समर्पण में है। वे देवी माँ के रक्षक हैं और उनके सच्चे सेवक हैं। भक्त जब यहाँ दर्शन करते हैं, तो उन्हें माँ वैष्णो देवी की शरण में होने का वास्तविक अनुभव होता है। गुफा का यह अद्भुत निर्माण केवल एक कलात्मक प्रतिरूप नहीं है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक यात्रा है – जहाँ हर मोड़ पर भक्ति का भाव है, हर प्रतिमा में शक्ति का अनुभव है, और हर मंत्र की ध्वनि में ऊर्जा की लहरें गूंजती हैं।

यह स्थल विशेष रूप से उन श्रद्धालुओं के लिए निर्मित किया गया है जो किसी कारणवश जम्मू की कठिन यात्रा नहीं कर सकते, लेकिन माँ वैष्णो देवी की पावन गुफा में प्रवेश करने और उनकी अनुकंपा का अनुभव पाना चाहते हैं। यहाँ आकर उन्हें वही भक्ति, श्रद्धा और पवित्रता का अनुभव होता है, जैसा कि त्रिकूट पर्वत की गुफा में पहुँचने पर होता है। भैरवनाथ जी के दर्शन के साथ ही यह यात्रा पूर्णता को प्राप्त करती है।

परिक्रमा का दिव्य अनुभव – जहाँ भक्ति, शिल्प और आध्यात्म का संगम है

माँ वैष्णों धाम एक ऐसा आध्यात्मिक स्थल है, जो न केवल श्रद्धा और भक्ति की पराकाष्ठा है, बल्कि अपने अद्भुत वास्तुशिल्प के कारण भी विशिष्ट पहचान रखता है। यह धाम अन्य मंदिरों से इस मायने में भिन्न है कि इसका मुख्य मंदिर अंडाकार आकार का है, जो परंपरागत वर्गाकार या आयताकार मंदिरों से हटकर है। यही अंडाकार संरचना इसे एक अनूठी दिव्यता और सौंदर्य प्रदान करती है। माँ वैष्णों देवी का यह मंदिर अंडाकार रूप में निर्मित है, जिससे श्रद्धालुओं के लिए परिक्रमा करना सहज और सरल हो जाता है। परिक्रमा करते समय न केवल मां की अष्टधातु स्वरूप के दर्शन होते हैं, बल्कि दीवारों पर उकेरे गए देवी–देवताओं के भव्य दृश्य और लीलाएं भक्तों को ऐसा अनुभव कराती हैं मानो वे स्वयं दिव्य लोकों की यात्रा कर रहे हों।

माँ वैष्णों धाम की परिक्रमा न केवल एक शारीरिक प्रक्रिया है, बल्कि यह एक आध्यात्मिक यात्रा भी है। परिक्रमा करते हुए दीवारों पर अंकित झाँकियाँ इतनी मनोहारी और सजीव प्रतीत होती हैं कि भक्त थकान महसूस ही नहीं करते। ऐसा लगता है कि हर कदम के साथ आत्मा परमात्मा के और निकट जा रही है। यह परिक्रमा मानो भक्तों को त्रिलोक– ब्रह्मलोक, शिवलोक और विष्णुलोक के दर्शन कराती है। श्रद्धालु ऐसा अनुभव करते हैं कि जैसे सभी लोकों के देवी–देवता इस धाम में साक्षात् उपस्थित हैं और उन्हें आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

माँ वैष्णो देवी धाम में प्रवेश–द्वार पर श्रीकृष्ण – प्रेम और लीला का दर्शन

दीवारों पर उकेरी गई भक्ति की जीवंत चित्रमाला, आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाली अनुभूति

धाम की दीवारें केवल पत्थरों की संरचना नहीं हैं, बल्कि यह एक दिव्य कथा का जीवंत रूप हैं। जब भक्त इस मंदिर की परिक्रमा करते हैं, तो हर दीवार, हर चित्र, हर मूर्ति एक नई भक्ति –गाथा को उजागर करती है। यह झाँकियाँ सिर्फ देखने योग्य दृश्य नहीं हैं, अपितु ये ऐसे आध्यात्मिक चित्रमय संवाद हैं जो श्रद्धालु को समय, स्थान और संसार की सीमाओं से परे ले जाकर उसे दिव्यता की गोद में पहुँचा देते हैं।

श्री गणेश जी–रिद्धि एवं सिद्धि के अधिपति

धर्म की रक्षा हेतु कालिया नाग पर विजय

सिख धर्म के संस्थापक–
श्री गुरु नानक देव जी

माँ सरस्वती – ज्ञान एवं विद्या की देवी

श्री राधा–कृष्ण की दिव्य रास लीला–भक्ति और प्रेम का अद्वितीय प्रतीक

संजीवनी लाते पवनपुत्र हनुमान–भक्ति, पराक्रम और समर्पण का अद्वितीय उदाहरण

श्री झूलेलाल जी – सिन्धी समाज के आराध्य देव

श्री वेंकटेश्वर–भगवान विष्णु का दिव्य कलियुगीन स्वरूप

सिंहवाहिनी माँ दुर्गा – महिषासुर वध

श्वेत कमल पर विराजमान माँ सरस्वती – ज्ञान, संगीत और कला की देवी

श्री सिद्धिविनायक–दाईं सूंड
वाले मंगलकारी विघ्नहर्ता

पद्मनाभस्वामी–शेषनाग
शैय्या पर विराजमान

पुरी का जगन्नाथ धाम – सनातन
आस्था और अध्यात्म का पवित्र केंद्र

श्रीमद्भगवद्गीता का दिव्य क्षण –
जब अर्जुन को हुए विराट स्वरूप के दर्शन

भगवान गौतम बुद्ध – ज्ञान, करुणा
और शांति के प्रतीक

प्रेम का सर्वोच्च आदर्श –
राधा–कृष्ण का दिव्य संग

श्रीनाथजी – गोवर्धनधारी
कृष्ण का बालस्वरूप

श्री द्वारकाधीश – श्रीकृष्ण का
दिव्य राजसी स्वरूप

भगवान शिव द्वारा जटाओं में
समाई माँ गंगा – धरती पर गंगावतरण
का पावन दृश्य

भगवान विष्णु और माँ लक्ष्मी का
दिव्य स्वरूप – संतुलन, समृद्धि
और अटूट भक्ति का प्रतीक

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान
श्री राम का दिव्य राम दरबार –
धर्म, भक्ति और आदर्श जीवन का प्रतीक

शिरडी साईं बाबा – सबका मालिक
एक, प्रेम और सेवा का अमर संदेश

कमल पर विराजमान माँ लक्ष्मी –
धन, वैभव और समृद्धि की अधिष्ठात्री

भगवान की त्रिमूर्ति – ब्रह्मा सृष्टि
के रचयिता, विष्णु पालनकर्ता
और महेश संहारकर्ता

माँ काली – संहार और
शक्ति की अधिष्ठात्री

श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन–धारण –
ब्रजवासियों की रक्षा हेतु गिरिराज
भगवान का दिव्य स्वरूप

भगवान कार्तिकेय – युद्ध
और विजय के देवता

शिव परिवार – शक्ति, ज्ञान
और विजय का प्रतीक

माँ वैष्णो देवी धाम का जागरण स्थल – शांत, विशाल और दिव्य वातावरण

माँ वैष्णो देवी धाम के प्रांगण में, माँ के समक्ष श्रद्धालुओं के लिए यह सुविधा प्रदान की जाती है। यहाँ आप किसी भी प्रकार के धार्मिक प्रवचन, जागरण, माता की चौकी, भजन संध्या, हवन और अन्य धार्मिक आयोजन शांति और श्रद्धा के साथ कर सकते हैं।

जागरण स्थल का क्षेत्रफल 8,565 वर्ग फीट है, जो साफ, शांत और हवादार माहौल प्रदान करता है। यह स्थान बड़े धार्मिक आयोजनों के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। यहाँ मंच, साउंड सिस्टम, प्रसाद वितरण और सजावट के लिए पर्याप्त जगह उपलब्ध है, जहाँ लगभग 250 लोग आराम से बैठ सकते हैं। साथ ही, यहाँ 24 घंटे बिजली की सुविधा भी उपलब्ध है।

यह स्थल माँ वैष्णो देवी की पवित्र उपस्थिति, गंगा–यमुना की शक्ति और पास के शांत जलप्रपात के कारण अत्यंत दिव्य, सकारात्मक और आध्यात्मिक वातावरण प्रदान करता है।

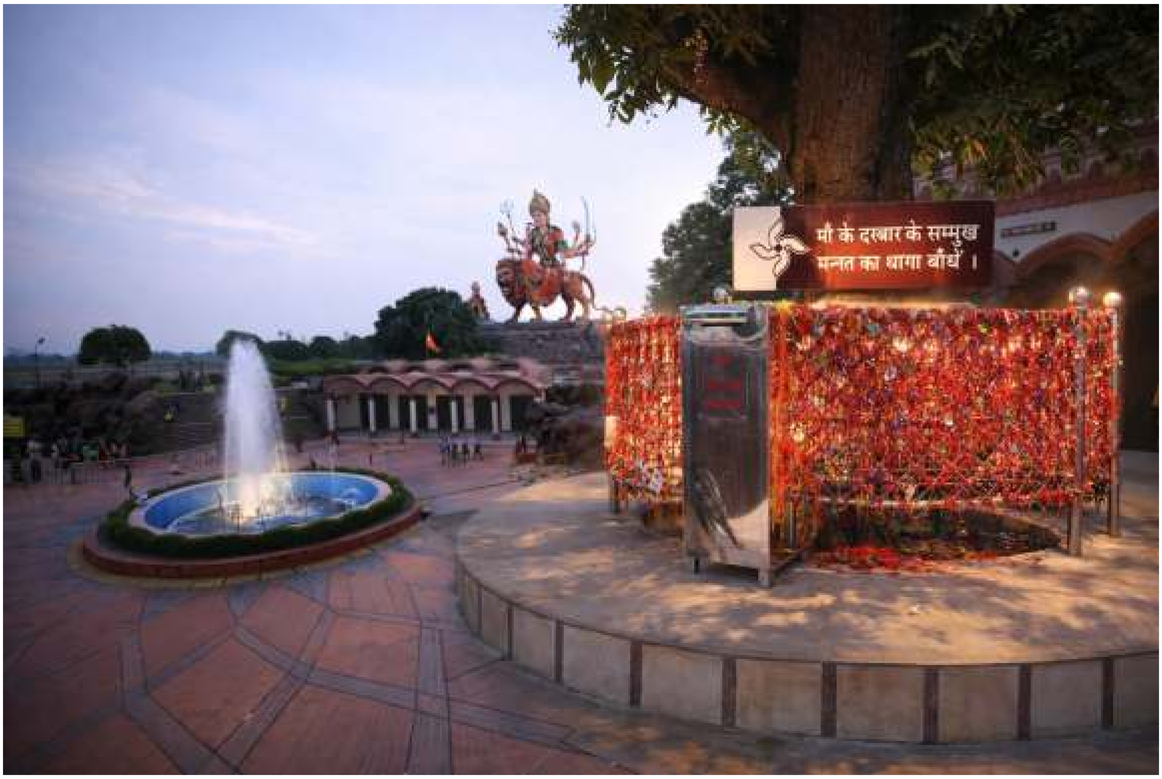

माँ के दरबार में मन्नत अर्पण का पवित्र स्थान

माँ वैष्णो देवी की पावन यात्रा पूर्ण होने के पश्चात, श्रद्धालु यहाँ श्रद्धा, विश्वास और पवित्र भाव के साथ मन्नत का धागा बाँध सकते हैं।

मन्नत का धागा बाँधते समय अपनी मनोकामना माँ के चरणों में प्रार्थना स्वरूप अर्पित करें। यह धागा श्रद्धा, संकल्प और विश्वास का प्रतीक है।

यह मान्यता है कि माँ से निष्कलंक मन और सच्चे भाव से माँगी गई मन्नत
अवश्य पूर्ण होती है।

कृपया परिसर की पवित्रता बनाए रखें और मन्नत का धागा बाँधने के पश्चात धैर्य एवं विश्वास रखें।

शिव धाम

भव्यता, आस्था और शांति का अद्भुत संगम

शिव धाम के बारे में

दुनिया भर में भगवान शिव के अनेक मंदिर और विशाल प्रतिमाएँ विद्यमान हैं, परंतु कुछ ऐसी होती हैं जो अपनी भव्यता और दिव्यता के कारण श्रद्धालुओं के लिए विशिष्ट तीर्थस्थल का स्वरूप धारण कर लेती हैं। इसी भाव में यहाँ भगवान शिव की 175.6 फीट ऊँची दिव्य प्रतिमा और 187 फीट ऊँचा भव्य त्रिशूल विराजमान है जिसे **गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स** में दर्ज किया गया है। यहाँ भगवान शिव खुले आकाश के नीचे ध्यानमग्न मुद्रा में विराजमान हैं। जब श्रद्धालु इस विशाल प्रतिमा के सामने खड़े होते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं भगवान शिव कैलाश पर्वत से उतरकर इस पावन स्थल पर आ गए हों। इस प्रतिमा का शांत और दिव्य स्वरूप भक्तों के हृदय को शांति और ऊर्जा से भर देता है।

यह प्रतिमा केवल आस्था का प्रतीक ही नहीं, बल्कि कला और शिल्प का अद्भुत नमूना भी है। जब इस पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो यह प्रतिमा और भी अधिक आलोकित होकर अलौकिक सौंदर्य प्रदान करती है। खुले आकाश के नीचे विराजमान होने के कारण इसकी भव्यता और बढ़ जाती है। यह स्थल हर व्यक्ति को गहराई से सोचने, आत्मचिंतन करने और भीतर की शांति खोजने के लिए प्रेरित करता है। वास्तव में, यह स्थान आपकी आध्यात्मिक यात्रा में अवश्य देखने योग्य है।

शिव धाम के भीतर भगवान गणेश, भगवान कार्तिकेय, नंदी की प्रतिमाएँ तथा जलधाराओं के बीच भगवान शिव के नटराज और अर्धनारीश्वर स्वरूप भी स्थापित हैं। मंदिर के चारों ओर भगवान शिव से जुड़े पवित्र प्रतीकों को बड़े ही स्नेह और सावधानी से सजाया गया है। गर्भगृह में अष्टधातु से निर्मित शिव परिवार के दर्शन और आशीर्वाद का सौभाग्य भक्तों को प्राप्त होता है। मंदिर की दीवारों पर भगवान शिव के जीवन से जुड़ी विभिन्न कथाओं की झांकियाँ और सुंदर नक्काशी उकेरी गई हैं। यहाँ पंचभूत शिवलिंग के दर्शन भी होते हैं, जो प्रकृति के पाँच तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

187 फीट ऊँचा सबसे बड़े त्रिशूल, 8 फरवरी 2025 और सबसे ज्यादा देखा जाने वाला लाइव स्ट्रीम अभिषेक समारोह, 9 फरवरी 2025

शिव धाम की सबसे बड़ी विशेषता इसका उत्कृष्ट और अनुपम वास्तुकला है। मंदिर की दीवारों पर पवित्र शिलालेख, सुंदर नक्काशी और रंग–बिरंगी कलाकृतियाँ इसकी शोभा बढ़ाती हैं। मंदिर परिसर में बने उद्यान, रंगीन फूल और शांत जल–प्रवाह इस स्थल को और भी दिव्य व सौम्य बनाते हैं।

यह केवल एक मंदिर ही नहीं, बल्कि एक ऐसा पवित्र धाम है जहाँ हर भक्त भगवान शिव के निकट होने और अपने मन में शांति, श्रद्धा और आत्मिक संतुलन का अनुभव करता है।

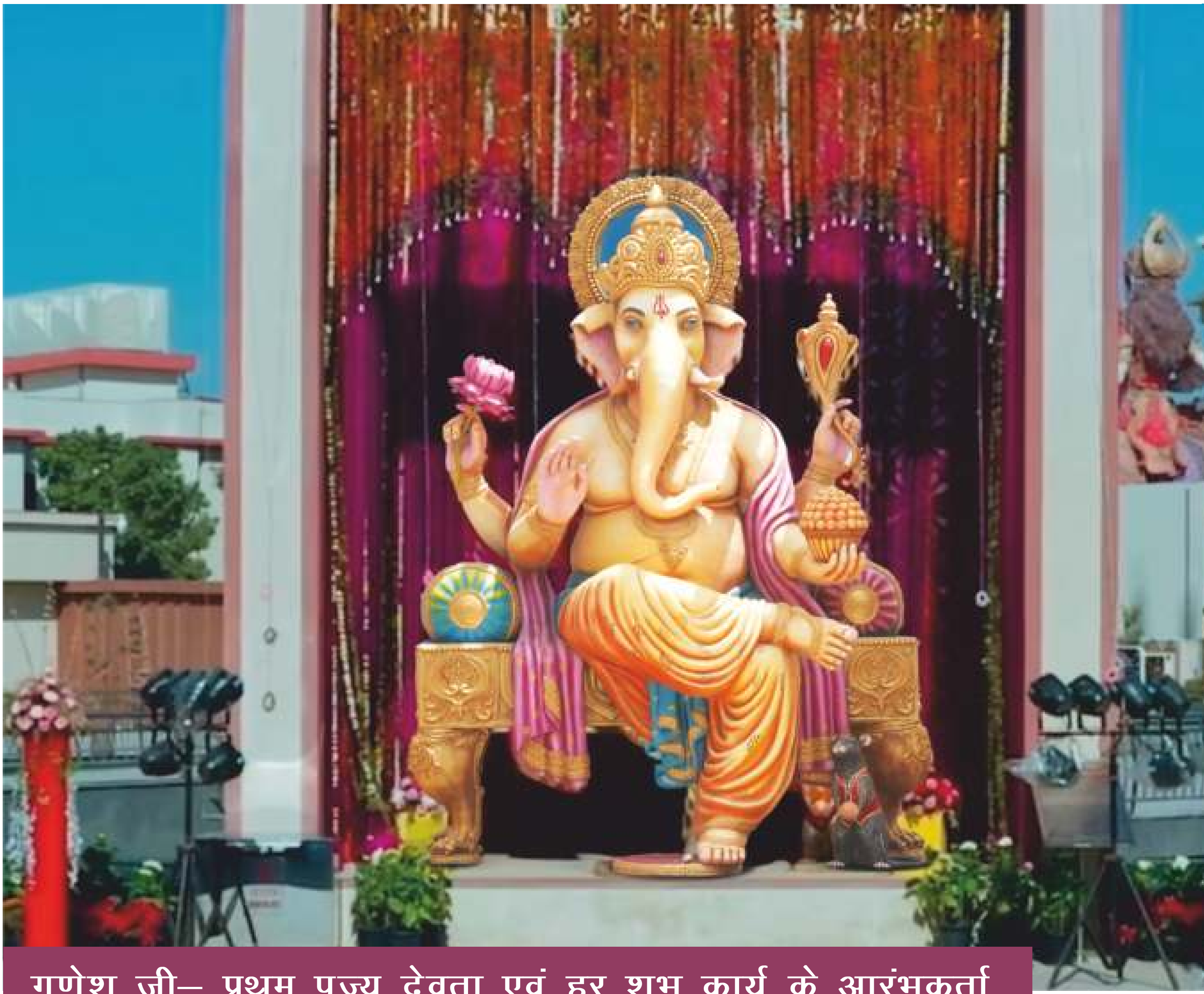

गणेश जी– प्रथम पूज्य देवता एवं हर शुभ कार्य के आरंभकर्ता

मान्यताओं और हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, जब आप चार धाम में गेट नंबर 4 से प्रवेश करते हैं, तो सबसे पहले भगवान गणेश के दर्शन होते हैं, जो भगवान शिव और माँ पार्वती के प्रिय पुत्र हैं। 15 फीट ऊँची और 13 फीट चौड़ी यह भव्य प्रतिमा अपने शुभ आभा से सम्पूर्ण वातावरण को आलोकित करती है। विघ्नहर्ता और मंगलकर्ता भगवान गणेश अपने गजमुख रूप और दिव्य कृपा से हर भक्त को आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

भगवान गणेश– प्रथम पूज्य और विघ्नहर्ता

मान्यताओं और हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, भगवान गणेश, जिन्हें गजानन (गजमुख) और विघ्नहर्ता (विघ्नों को दूर करने वाले) भी कहा जाता है, हिंदू धर्म के सबसे प्रिय और पूजनीय देवताओं में से एक हैं। उन्हें बुद्धि, ज्ञान और सफलता का देवता माना जाता है। हर शुभ कार्य की शुरुआत उनके आशीर्वाद से ही होती है। आइए, जानते हैं उनकी रोचक कथा और यह भी कि वे प्रथम पूज्य क्यों कहलाए?

जन्म की कथा

एक बार माँ पार्वती ने स्नान की तैयारी करते समय अपने शरीर से निकले उबटन (हल्दी के लेप या मैल) से एक सुंदर बालक की रचना की। उसमें प्राण फूँककर उन्होंने उसे अपना द्वारपाल बना दिया और आदेश दिया कि जब तक वे स्नान कर रही हैं, कोई भी अंदर न आए। थोड़ी देर बाद भगवान शिव वहाँ पहुँचे, लेकिन उस बालक ने उन्हें रोक दिया। इससे क्रोधित होकर शिव ने उसका सिर काट दिया। जब माँ पार्वती ने यह देखा, तो वे अत्यंत दुखी और क्रोधित हुईं। उन्हें शांत करने के लिए भगवान शिव ने एक छोटे हाथी का सिर लाकर बालक के धड़ पर स्थापित कर दिया और उसे पुनः जीवित कर दिया। तभी से वह गजानन (गजमुख) कहलाए।

गणेश प्रथम पूज्य क्यों हैं?

एक बार देवताओं के बीच यह विवाद हुआ कि प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान में सबसे पहले किस देवता की पूजा होनी चाहिए? इस पर भगवान शिव ने एक प्रतियोगिता रखी– जो देवता सबसे पहले पूरे संसार का चक्कर लगाकर लौट आएगा, उसे प्रथम पूज्य होने का सम्मान मिलेगा। "सभी देवता अपने–अपने वाहन लेकर निकल पड़े। लेकिन गणेश जी ने अपने माता–पिता शिव और पार्वती की परिक्रमा कर कहा–"मेरे लिए तो मेरे माता–पिता ही समस्त संसार हैं।" उनकी इस बुद्धिमत्ता और भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें प्रथम पूज्य होने का आशीर्वाद दिया। तभी से हर पूजा और शुभ कार्य का आरंभ गणपति वंदना से होता है।

गणेश चतुर्थी का पर्व

भाद्रपद मास (अगस्त–सितंबर) में भगवान गणेश के जन्मोत्सव के रूप में गणेश चतुर्थी मनाई जाती है। इस अवसर पर भक्त गणेश जी की सुंदर मूर्तियाँ घरों और मंदिरों में स्थापित कर श्रद्धा, भक्ति और मिठाइयों के साथ उनकी पूजा–अर्चना करते हैं।

भगवान गणेश से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

12 पवित्र नाम – भगवान गणेश को अनेक नामों से जाना जाता है, जैसे – सुमुख, एकदंत, गजकर्ण, लंबोदर, विघ्नराज, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचंद्र और गजानन।

विवाहः गणेश जी की पत्नियाँ रिद्धि (समृद्धि) और सिद्धि (आध्यात्मिक शक्ति) थीं। इनके दो पुत्र हुए– शुभ (कल्याण) और लाभ (संपत्ति एवं लाभ)।

महाभारत से संबंधः यह माना जाता है कि महर्षि वेदव्यास ने महाभारत का वाचन किया था और गणेश जी ने उसे लिपिबद्ध किया।

भगवान कार्तिकेय – युद्ध, ज्ञान और विजय के देवता

भगवान गणेश के दिव्य दर्शन के बाद भक्तों को भगवान कार्तिकेय के दर्शन होते हैं, जो गणेश जी के बाईं ओर विराजमान हैं। 15 फीट ऊँची और 13.5 फीट चौड़ी यह भव्य प्रतिमा माँ पार्वती और भगवान शिव के पराक्रमी पुत्र तथा भगवान गणेश के छोटे भाई के रूप में स्थापित है। उनके दिव्य आशीर्वाद से भक्तों को साहस, शक्ति और सफलता प्राप्त होती है।

विजय और ज्ञान के देवता

मान्यताओं और हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, भगवान कार्तिकेय (जिन्हें स्कंद, मुरुगन, कुमारस्वामी, षण्मुख और सुब्रमण्य भी कहा जाता है) शिव और पार्वती के पुत्र हैं। वे युद्ध के देवता और देवताओं की सेना के सेनापति हैं। विशेष रूप से दक्षिण भारत में उनकी अत्यधिक पूजा होती है और तमिल संस्कृति में उनका बहुत बड़ा महत्व है।

जन्म की कथा

भगवान कार्तिकेय का जन्म राक्षस तारकासुर का वध करने के लिए हुआ। तारकासुर को यह वरदान प्राप्त था कि केवल शिवपुत्र ही उसका अंत कर सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए देवताओं ने शिव से पार्वती का विवाह कराया। विवाह के उपरांत उनकी दिव्य ऊर्जा का उद्भव हुआ। यह ऊर्जा इतनी प्रचंड थी कि अग्नि देव भी उसे धारण न कर सके और उसे गंगा में स्थापित कर दिया। गंगा ने इस ऊर्जा का पालन–पोषण किया, जिससे छः दिव्य बालकों का जन्म हुआ। माँ पार्वती ने उन सभी छः बालकों को एक स्वरूप में विलीन कर दिया, जिससे षण्मुख (छः मुखों वाले) भगवान कार्तिकेय का जन्म हुआ।

देवताओं के सेनापति

जन्म के बाद कार्तिकेय ने युद्धकला और दिव्य ज्ञान में निपुणता प्राप्त की। वे देवताओं की सेना के सेनापति बने और अंततः उन्होंने तारकासुर का वध किया। इसी कारण उन्हें शक्ति और पराक्रम का प्रतीक माना जाता है।

पूजा और महत्व

दक्षिण भारत में भगवान मुरुगन के प्रसिद्ध मंदिरों में पलानी, तिरुत्तनी और स्वामीमलाई प्रमुख हैं। वे युवाओं, योद्धाओं और ज्ञान के साधकों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। थाईपुसम और स्कंद षष्ठी जैसे उत्सव उनकी पूजा के लिए मनाए जाते हैं।

भगवान शिव के दोनों पुत्रों में, कार्तिकेय वीरता और शक्ति के प्रतीक हैं, जबकि गणेश बुद्धि और मंगल के प्रतीक माने जाते हैं। कुछ परंपराओं में कार्तिकेय को ब्रह्मचारी माना जाता है, जबकि दक्षिण भारतीय मान्यताओं के अनुसार उनका विवाह वल्ली और देवसेना से हुआ था।

भगवान कार्तिकेय केवल युद्ध के देवता ही नहीं, बल्कि अनुशासन, शक्ति और ज्ञान के भी प्रतीक हैं। उनका जीवन हमें साहस अपनाने और कर्तव्यों का पालन श्रद्धा और निष्ठा के साथ करने की प्रेरणा देता है।

नंदी – भक्ति, शक्ति और विश्वास का प्रतीक

भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय के दर्शन के बाद भक्तों को नंदी के दर्शन होते हैं, जो 7,600 वर्ग फीट के गोलाकार क्षेत्र में जल–फव्वारों के बीच विराजमान हैं। 7 फीट ऊँची और 11 फीट चौड़ी यह भव्य प्रतिमा भगवान शिव के दिव्य वृषभ (बैल) और कैलाश के रक्षक के रूप में पूजनीय है। संस्कृत में "नंदी" शब्द का अर्थ आनंद और सुख है, जो भक्ति, शक्ति और भगवान शिव की शाश्वत सेवा का प्रतीक है।

भगवान शिव का वाहन और परम भक्त

नंदी भगवान शिव के सबसे पूजनीय गणों में से एक हैं और वे उनके दिव्य वाहन भी हैं। उन्हें शिव के द्वारपाल और परम भक्त के रूप में पूजा जाता है। लगभग हर शिव मंदिर में नंदी शांत भाव से शिवलिंग के सामने बैठे हुए मिलते हैं, मानो ध्यानमग्न होकर भगवान शिव की ओर निहार रहे हों। नंदी भक्ति, शक्ति और धैर्य के प्रतीक हैं। भक्तों के लिए वे अटूट विश्वास और पूर्ण समर्पण की प्रेरणा हैं।

भक्ति और समर्पण का प्रतीक

नंदी विशुद्ध भक्ति और भगवान शिव के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे सदैव अपने आराध्य की सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।

दिव्य द्वारपाल

कैलाश पर्वत के रक्षक के रूप में नंदी को भगवान शिव के धाम के प्रवेश–द्वार का संरक्षक माना जाता है।

इच्छाओं के पूरक

ऐसा विश्वास है कि यदि भक्त नंदी के कानों में अपनी मनोकामना कहते हैं, तो वह सीधे भगवान शिव तक पहुँचती है और शिव स्वयं उसे पूर्ण करते हैं।

धर्म का प्रतीक

नंदी धर्म और न्याय का प्रतीक भी माने जाते हैं। प्राचीन समय में राजा अपने सिंहासन के पास नंदी की प्रतिमा रखते थे, ताकि उनके शासन को न्यायपूर्ण और धार्मिक माना जाए।

नंदी का जन्म

हिंदू कथाओं के अनुसार, नंदी का जन्म ऋषि शिलाद के यहाँ हुआ था। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए नंदी ने कठोर तपस्या की। उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें अपना दिव्य वाहन और सभी गणों का प्रधान बनने का वरदान दिया।

शिव मंदिरों में नंदी

हर शिव मंदिर में नंदी की प्रतिमा सीधे शिवलिंग के सामने स्थापित होती है। भक्तों का विश्वास है कि नंदी से प्रार्थना करने पर वह उनकी मनोकामनाएँ भगवान शिव तक पहुँचा देते हैं। उनकी ध्यानमग्न मुद्रा भक्तों को धैर्य और विनम्रता का पाठ पढ़ाती है।

नंदी और शिव का बंधन

नंदी और शिव का संबंध प्रेम, विश्वास और निष्ठा पर आधारित है। शिव के पास नंदी की उपस्थिति आदर्श सेवा और परम भक्ति का प्रतीक है। नंदी केवल शिव के वाहन ही नहीं, बल्कि आस्था, सेवा और धर्म के आध्यात्मिक प्रतीक हैं। शिवलिंग के सामने उनकी शांत उपस्थिति भक्तों को यह स्मरण कराती है कि सच्चा समर्पण और अटूट भक्ति ही दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करने का मार्ग है।

भगवान नटराज – सृष्टि और संहार का दिव्य नृत्य

नंदी की प्रतिमा के बाईं ओर भक्त भगवान नटराज के दिव्य दर्शन करते हैं, जिनकी प्रतिमा जल–फव्वारों के बीच अपने अक्ष पर धीरे–धीरे घूमती रहती है। 20 फीट ऊँची और 16 फीट चौड़ी यह भव्य प्रतिमा भगवान शिव को नटराज रूप में दर्शाती है, जहाँ वे ब्रह्मांडीय नृत्य तांडव करते हुए दिखाई देते हैं। यह तांडव सृष्टि और संहार की लय का प्रतीक है। उनका यह दिव्य नृत्य आत्मा को सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर आत्मबोध की ओर प्रेरित करता है।

नटराज– शिव का ब्रह्मांडीय नृत्य और सृष्टि का रहस्य

भगवान नटराज, भगवान शिव का सबसे अद्वितीय और गहन रूप है, जिसमें वे ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) करते हुए दर्शाए जाते हैं। यह दिव्य स्वरूप सृष्टि, पालन और संहार के अनंत चक्र का प्रतीक है, जो ब्रह्मांड की लय और जीवन के प्रवाह को प्रकट करता है।

नटराज के दिव्य तत्व

नृत्य (तांडव): नटराज का तांडव ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रतीक है, जो सृष्टि, पालन और संहार की निरंतर प्रक्रिया को दर्शाता है।

अग्नि (संहार का प्रतीक): उनके एक हाथ में अग्नि है, जो संहार का प्रतीक है और यह बताती है कि नई सृष्टि के लिए विनाश आवश्यक है।

डमरू (सृष्टि का नाद): दूसरे हाथ में डमरू है, जो सृष्टि के आद्य नाद ॐ का प्रतीक है। यही ध्वनि ब्रह्मांड की धड़कन के रूप में गूँजती है।

अभय मुद्रा (निर्भयता का आश्वासन): नटराज का उठाया हुआ हाथ अभय मुद्रा में है, जो भक्तों को भय से मुक्ति और संरक्षण का आश्वासन देता है।

पैरों के नीचे बौना (अज्ञान पर विजय): उनके पैरों के नीचे दबा हुआ बौना अज्ञान और अहंकार का प्रतीक है, जिसे शिव ने सत्य और ज्ञान की स्थापना के लिए दबा दिया।

अग्नि का मंडल (काल का चक्र): नटराज के चारों ओर अग्नि का वृत्त समय और ब्रह्मांड के अंतहीन चक्र का प्रतीक है।

सर्प (कुंडलिनी ऊर्जा): उनके गले में लिपटा सर्प कुंडलिनी शक्ति का प्रतीक है, जो हर जीव में सुप्त आध्यात्मिक ऊर्जा के रूप में विद्यमान है और जाग्रत होने की प्रतीक्षा करती है।

नटराज के चरणों तले कौन है और उसका महत्व क्या है?

भगवान नटराज के दाहिने चरण तले अपस्मार नामक बौना राक्षस दबा हुआ है, जो अज्ञान और अहंकार का प्रतीक है। कथा के अनुसार, अपस्मार को अमरता का वरदान प्राप्त था और उसे लोगों की चेतना छीनने की शक्ति मिल गई थी। घमंड में चूर होकर उसने ऋषियों को सताना शुरू कर दिया और स्वयं को अजेय मानने लगा। तब भगवान शिव नटराज रूप में प्रकट हुए और अपने ब्रह्मांडीय नृत्य (तांडव) के माध्यम से अपस्मार को अपने चरणों तले दबा दिया। उन्होंने उसे मारा नहीं, क्योंकि अज्ञान को नष्ट नहीं किया जा सकता। उसे केवल दबाकर रखना आवश्यक है, ताकि ज्ञान और अज्ञान का संतुलन बना रहे। नटराज के चरणों तले दबा हुआ अपस्मार, ज्ञान की अज्ञान पर विजय का प्रतीक है।

भगवान अर्धनारीश्वर – शिव और शक्ति का दिव्य संयोग

नंदी की प्रतिमा के दाईं ओर भक्तों को भगवान अर्धनारीश्वर के दिव्य दर्शन होते हैं। 20 फीट ऊँची और 12 फीट चौड़ी यह अद्भुत प्रतिमा जल–फव्वारों के बीच अपने अक्ष पर धीरे–धीरे घूमती रहती है। अर्धनारीश्वर भगवान शिव और देवी पार्वती का संयुक्त स्वरूप है, जिसमें दाहिना भाग शिव का और बायाँ भाग शक्ति का प्रतीक है। यह दिव्य रूप ब्रह्मांड में स्त्री और पुरुष ऊर्जा के संतुलन का प्रतीक है और यह दर्शाता है कि शिव और शक्ति अविभाज्य हैं।

शिव और शक्ति का दिव्य मिलन

अर्धनारीश्वर भगवान शिव का अत्यंत अद्वितीय और गहन स्वरूप है, जिसमें उन्हें आधे पुरुष (शिव) और आधे स्त्री (शक्ति) के रूप में दर्शाया गया है। यह रूप स्त्री और पुरुष दोनों ऊर्जा की समानता और उनकी अविभाज्यता को प्रकट करता है। अर्धनारीश्वर सृष्टि और पालन के लिए आवश्यक शिव और शक्ति के ब्रह्मांडीय संतुलन का प्रतीक है।

अर्धनारीश्वर का अर्थ

अर्धनारीश्वर का शाब्दिक अर्थ है– "आधा पुरुष, आधी स्त्री।" इस स्वरूप का दाहिना भाग शिव (पुरुष तत्व) का प्रतीक है। बायाँ भाग पार्वती या शक्ति (स्त्री तत्व) का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि दोनों ऊर्जाएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और एक–दूसरे की पूरक हैं।

अर्धनारीश्वर का महत्व

यह स्वरूप सिखाता है कि सृष्टि और अस्तित्व तभी संभव है जब स्त्री और पुरुष ऊर्जा एक साथ सामंजस्यपूर्वक कार्य करें। यह एकता, संतुलन और विपरीत तत्त्वों की परस्पर निर्भरता का प्रतीक है। अर्धनारीश्वर यह भी स्मरण कराता है कि स्त्री और पुरुष अलग नहीं हैं, बल्कि परम सत्य के दो पहलू हैं।

भगवान शिव ने अर्धनारीश्वर रूप क्यों धारण किया?

एक पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान ब्रह्मा को सृष्टि की रचना का दायित्व दिया गया था। जब उन्होंने सृष्टि शुरू की तो उन्हें यह समझ आया कि जो भी प्राणी वे रचेंगे, वे नष्ट हो जाएँगे और उन्हें बार–बार सृष्टि करनी पड़ेगी। इससे चिंतित होकर वे मार्गदर्शन के लिए भगवान शिव के पास पहुँचे।

ब्रह्मा की प्रार्थना के उत्तर में शिव अर्धनारीश्वर रूप में प्रकट हुए, जिनका आधा अंग पुरुष (शिव) और आधा अंग स्त्री (शक्ति) था। इस दिव्य दर्शन से ब्रह्मा को यह ज्ञान हुआ कि सृष्टि तभी निरंतर चल सकती है जब पुरुष और स्त्री दोनों तत्त्व मिलकर कार्य करें– इन्हीं के संयोग से प्रजनन और जीवन की निरंतरता संभव है।

इस प्रकार अर्धनारीश्वर ब्रह्मांड में सृजनात्मक ऊर्जा और विपरीत तत्त्वों के पूर्ण संतुलन का शाश्वत प्रतीक बने।

अर्धनारीश्वर हमें यह स्मरण कराते हैं कि स्त्री और पुरुष ऊर्जा समान और पूरक हैं। दोनों मिलकर ही जीवन, ऊर्जा और सृजन के वास्तविक स्रोत हैं।

चार धाम में भक्तगणों को पंच–भूत शिवलिंग के दर्शन का सौभाग्य।

शिवलिंग	प्रतिष्ठित तत्व	आकार
कालहस्तीश्वर	वायु	ऊँचाई: 3 फीट, व्यास: 2.6 फीट
जम्बुकेश्वर	जल	ऊँचाई: 2.5 फीट, व्यास: 1.3 फीट
अरुणाचलेश्वर	अग्नि	ऊँचाई: 2.2 फीट, व्यास: 1.3 फीट
एकाम्बरेश्वर	पृथ्वी	ऊँचाई: 2.2 फीट, व्यास: 1.3 फीट
नटराज	आकाश	ऊँचाई: 2.2 फीट, व्यास: 2 फीट

चार धाम, वृंदावन के पावन धाम में अब पंचभूत शिवलिंगों का साकार रूप स्थापित किया गया है। जहाँ एक ही स्थान पर भक्त पंचतत्वीय महादेव के दर्शन कर सकते हैं। यह स्थल उन श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखता है जो दक्षिण भारत नहीं जा सकते, पर वहाँ की दिव्यता का अनुभव लेना चाहते हैं।

पंचभूत शिवलिंग:
शिव के पंचतत्वीय स्वरूप का दिव्य एहसास

जब हम शिव को नमन करते हैं, तो हम केवल एक मूर्ति को नहीं, बल्कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड की शक्ति को प्रणाम करते हैं। शिव, "विश्व के मूल तत्व" पंचभूत के रूप में साकार होते हैं। भारतीय दर्शन के अनुसार, यह सृष्टि पाँच महाभूतों (तत्वों) से बनी है:

पंचभूत शिवलिंगों की सूची और तत्व

तत्व	शिवलिंग	राज्य	मंदिर का नाम व स्थान
पृथ्वी (Earth)	पृथ्वी लिंगम	तमिलनाडु	एकाम्बरेश्वर मंदिर, कांचीपुरम
जल (Water)	अप् लिंगम	तमिलनाडु	जम्बुकेश्वर मंदिर, त्रिची (तिरुचिरापल्ली)
अग्नि (Fire)	अग्नि लिंगम	तमिलनाडु	अरुणाचलेश्वर मंदिर, तिरुवन्नामलाई
वायु (Air)	वायु लिंगम	आंध्र प्रदेश	श्री कालहस्तीश्वर मंदिर, श्रीकालहस्ती
आकाश (Ether/Space)	आकाश लिंगम	तमिलनाडु	चिदंबरम नटराज मंदिर, चिदंबरम

पंचभूत शिवलिंग भारतीय धर्म, विशेष रूप से शैव परंपरा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। "पंचभूत" का अर्थ है पाँच तत्व – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश– जिनसे संपूर्ण ब्रह्मांड बना है। इन पाँचों तत्वों को भगवान शिव के पाँच विशेष लिंग रूपों में पूजित किया गया है, जिन्हें "पंचभूत शील" भी कहा जाता है।

प्रत्येक पंचभूत लिंग की विशेषताएँ:

1. **पृथ्वी लिंग (पृथ्वी तत्व)– एकाम्बरेश्वर, कांचीपुरम:** यह शिव लिंग मिट्टी से बना है और भगवान शिव को यहाँ पृथ्वी तत्व का अधिपति माना जाता है। यहाँ देवी पार्वती ने भगवान शिव की तपस्या की थी। यह मंदिर दक्षिण भारत के प्रमुख पंचमहाभूत स्थलों में से एक है।

2. **अप् लिंग (जल तत्व)– जम्बुकेश्वर, त्रिची:** यह शिव लिंग जल तत्व का प्रतिनिधित्व करता है और यहाँ शिवलिंग के नीचे हमेशा जल प्रवाहित रहता है। देवी अखिलेश्वरी यहाँ माँ शक्ति के रूप में पूजित हैं।

3. **अग्नि लिंग (अग्नि तत्व)– अरुणाचलेश्वर, तिरुवन्नामलाई:** यह शिवलिंग अग्नि तत्व को दर्शाता है। यहाँ हर वर्ष कार्तिगई दीपम पर्व मनाया जाता है, जिसमें पहाड़ी पर अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है।

4. **वायु लिंग (वायु तत्व)– कालहस्तीश्वर, श्री कालहस्ती:** यह शिव लिंग वायु तत्व का प्रतीक है। यहाँ वायुदेव के रूप में शिव की पूजा होती है। दीपक बिना हवा के भी यहाँ हिलते रहते हैं, जो चमत्कार माने जाते हैं।

5. **आकाश लिंग (आकाश तत्व)– नटराज, चिदंबरम:** यहाँ शिव नटराज (तांडव करते हुए) के रूप में पूजित हैं। यह शिव लिंग दृश्य नहीं है– यहाँ "आकाश तत्व" को शून्य या आकाश के रूप में पूजा जाता है। मंदिर की मुख्य विशेषता है कि यह विज्ञान और अध्यात्म का अद्भुत संगम है।

विशेष महत्व:
ये पाँच शिवलिंग सृष्टि के मूलभूत तत्वों के प्रतीक हैं और यह दर्शाते हैं कि शिव स्वयं संपूर्ण सृष्टि हैं। इन स्थलों की तीर्थयात्रा करना आध्यात्मिक उन्नति, पंच–तत्वों का संतुलन और मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग माना गया है।

जलाभिषेक शिवलिंग

चार धाम, शिव धाम मंदिर में भक्तों के लिए विशेष जलाभिषेक शिवलिंग स्थापित किया गया है, जहाँ सभी भक्त शिवलिंग पर जल, दूध और अन्य सामग्री से अभिषेक कर भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। मंदिर परिसर में ही जल, दूध और पूजन सामग्री सहज रूप से उपलब्ध है, जिससे श्रद्धालु बिना किसी असुविधा के श्रद्धा और भक्ति के साथ जलाभिषेक कर सकें। आइए, भगवान शिव का अभिषेक कर उनके आशीर्वाद से अपने जीवन में शांति, ऊर्जा और सकारात्मकता प्राप्त करें।

जलाअभिषेक का महत्व

भगवान शिव की पूजा में जलाभिषेक का विशेष महत्व होता है। बिना इसके भोलेनाथ की पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती है। मान्यता है कि शिवलिंग की विधि–विधान से पूजा–अर्चना करने से सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। साथ ही, जीवन में सकारात्मकता आती है। सावन के महीने में भोलेनाथ के साथ उनके परिवार की भी पूजा–अर्चना की जाती है।

शिव परिवार पर जल चढ़ाने का नियम –

जैसा कि आप सभी को पता है भगवान गणेश को प्रथम पूज्य देवता का दर्जा प्राप्त है अतः पहले गणेश जी को जल चढ़ाएं, फिर शिवलिंग पर, उसके बाद माता पार्वती के चरणों में जल अर्पित करें। अंत में धरती माता को जल चढ़ाएं।

एक बात का विशेष ध्यान रखें – जल चढ़ाते समय, उत्तर दिशा की ओर मुख करके खड़े हों और दक्षिण दिशा में बैठें। इस दौरान 'ॐ नमः शिवाय' या शिव–गायत्री मंत्र का जाप करें।

जल चढ़ाने के लिए सोने, चांदी, पीतल या तांबे के लोटे या फिर मिट्टी के कलश का उपयोग करें। इसके अलावा शिवलिंग की परिक्रमा करें लेकिन शिवलिंग पर जल चढ़ाने के लिए सबसे अच्छा समय सुबह 5 बजे से 11 बजे के बीच का होता है। जल चढ़ाते समय हमेशा दोनों हाथों का उपयोग करना चाहिए और शंख का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

शिवलिंग पर चढ़े जल को पीना चाहिए या नहीं ?

शिवलिंग पर चढ़े जल को चरणामृत के समान माना जाता है। इसलिए आप इसको ग्रहण भी कर सकते हैं। मान्यता है कि शिवलिंग पर चढ़े जल को पीने से सारे दुख दूर होते हैं। इससे मानसिक तनाव से भी मुक्ति मिलती है। साथ ही, इस जल को घर में छिड़कना चाहिए। ऐसा करने से नकारात्मक उर्जा घर से दूर होती है।

शिव परिवार का दिव्य विग्रह

शिव धाम का गर्भगृह 7,909 वर्ग फीट क्षेत्र में विस्तृत है, जहाँ भक्तगण दिव्य शिव परिवार के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। केंद्र में स्थित भव्य शिव परिवार का विग्रह 11 फीट ऊँचा और 12 फीट चौड़ा है, जो अनुपम दिव्य आभा बिखेरता है। मंदिर की दीवारों पर उकेरी गई भगवान शिव की सुन्दर कलाकृतियाँ और चित्र मन को मोह लेते हैं तथा आत्मा में आध्यात्मिक स्पंदन जगाते हैं। शिव परिवार के चारों ओर पंचभूत शिवलिंगों से युक्त एक पवित्र जलकुंड है, जो भक्तों को शांति और दिव्यता का अद्भुत अनुभव प्रदान करता है।

शिव परिवार के दिव्य सदस्य
भगवान शिव
अधर्म का नाश करने वाले और सृष्टि के परिवर्तनकर्ता। महादेव, नीलकंठ, शंकर तथा महेश नामों से विख्यात हैं। वे तप, शांति और विराट शक्ति–दोनों के प्रतीक हैं।

माता पार्वती

भगवान शिव की अर्धांगिनी और शक्ति (दिव्य ऊर्जा) का साकार रूप। उमा, दुर्गा और काली के रूपों में पूजित हैं। वे करुणा, सामर्थ्य और सौम्यता का सुंदर संगम हैं।

भगवान गणेश

विघ्नहर्ता, बुद्धि और समृद्धि के देवता, शिव–पार्वती के प्रिय पुत्र। शुभारंभों के अधिष्ठाता तथा रिद्धि–सिद्धि के पति के रूप में पूजनीय।

भगवान कार्तिकेय

देवताओं की सेना के सेनापति, वीरता, उत्साह और युवा शक्ति के प्रतीक।

अन्य पवित्र उपस्थिति

अशोक सुंदरी – शिव–पार्वती की पुत्री, जिनका उल्लेख पद्म पुराण में मिलता है।

नंदी – भगवान शिव का दिव्य वाहन और अनन्य भक्त।
गण – शिव के दैवीय सेवक, जो भूत, यक्ष, किन्नर आदि रूपों में प्रकट होते हैं।

शिव परिवार का संदेश

यह दिव्य परिवार हमें सिखाता है कि– प्रेम और शक्ति के संतुलन से जीवन में सद्भाव स्थापित होता है। परिवार की उन्नति सहयोग, समर्पण और सम्मान से होती है। शिव परिवार की उपासना जीवन में शांति, सुख और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करती है।

"जहाँ शिव परिवार का वास होता है, वहाँ सभी बाधाएँ दूर होती हैं और निरंतर दिव्य आनंद की धारा प्रवाहित होती है।"

शिव धाम मंदिर – प्रवेश द्वार

शिव धाम मंदिर के अंदर की दीवारों पर भगवान शिव के जीवन से जुड़ी विभिन्न लीलाओं और दिव्य रूपों की अद्‌भुत कलाकृतियाँ अंकित हैं। इन चित्रों को देखकर भक्तों के मन में शिव की पावन लीलाओं की स्मृति जागृत हो उठती है। इन कलाकृतियों के दर्शन मात्र से ही भक्त आध्यात्मिक ऊर्जा, शांति और सकारात्मकता का अनुभव करते हैं, जिससे हर व्यक्ति यहाँ आकर अपने भीतर प्रेम, शांति और दिव्यता को महसूस कर पाता है।

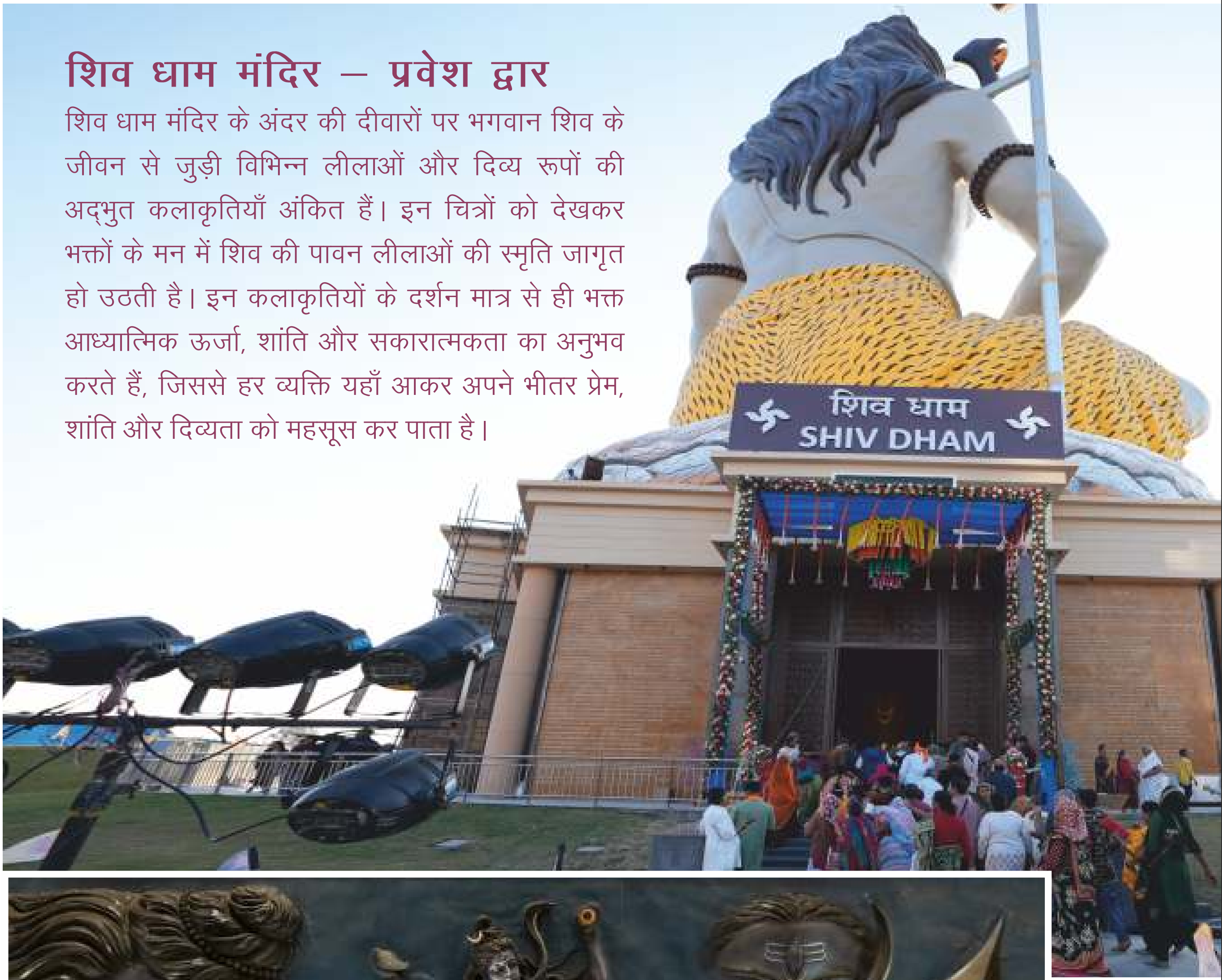

यह रचना भगवान शिव के विभिन्न दिव्य रूपों का सुंदर चित्रण है। बाईं ओर – शिव का शांत, ध्यानमग्न चेहरा, जो करुणा और शांति का प्रतीक है। मध्य भाग – नटराज मुद्रा में शिव, जो सृजन, संरक्षण और संहार का प्रतिनिधित्व करते हैं। दाईं ओर – गंभीर मुखमुद्रा के साथ तीसरी आंख, त्रिशूल और डमरू, जो त्रिगुण और सृष्टि के नाद का संकेत देते हैं। यह पूरी कलाकृति 20.10 x 7.09 फीट क्षेत्र में भगवान शिव के शक्ति, लय तथा दिव्यता का अद्‌भुत संगम है।

यह 20.38 x 7.10 फीट की रचना भगवान शिव को ध्यानमग्न मुद्रा में दर्शाती है। बाईं ओर नंदी भक्ति के प्रतीक हैं। मध्य में शिव कमल पर विराजमान हैं, उनके चार हाथों में कुम्भ हैं, जो पंचतत्व और जीवनदायिनी शक्तियों का संकेत देते हैं, तथा जटाओं से गंगा प्रवाहित हो रही है। दाईं ओर त्रिशूल, डमरू और चंद्रमा शक्ति, नाद और शीतलता के प्रतीक हैं। यह चित्रण शिव के तप, त्याग और करुणा का दिव्य संगम है।

यह आकृति 20.43 x 7.09 फीट की रचना में भगवान शिव के तांडव स्वरूप का दिव्य प्रदर्शन है। बाईं ओर ध्यानमग्न शिव और नंदी भक्ति का संकेत देते हैं। त्रिशूल, डमरू एवं चंद्रमा शिव की शक्ति, नाद और शीतलता का प्रतिनिधित्व करते हैं। मध्य और दाई ओर में नटराज के तांडव रूप का प्रदर्शन है जो कि सृष्टि, संरक्षण और संहार की ब्रह्मांडीय लय का प्रतीक है।

यह तस्वीर 20.47 x 7.07 फीट क्षेत्र में बनी है जो भगवान शिव के पारिवारिक और ज्ञानमय स्वरूप का अद्भुत चित्रण है। बाईं ओर शिव ध्यानमग्न मुद्रा में विराजमान हैं। उनके समीप नंदी (बैल) भक्ति और सेवा का प्रतीक है, जबकि पास में कार्तिकेय और देवी पार्वती विराजमान हैं, जो शिव–पार्वती के गृहस्थ जीवन का संकेत देते हैं। मध्य भाग में भगवान गणेश बैठे हैं, जो बुद्धि, समृद्धि और शुभता का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके चारों ओर प्रकृति का सौंदर्य जीवन की सरलता और संतुलन का संदेश देता है। दाईं ओर भगवान शिव और शिव का योगी रूप दर्शाया गया है। पृष्ठभूमि में समुद्र मंथन और पर्वत श्रृंखलाएँ शिव की संपूर्णता और ब्रह्मांडीय शक्ति का प्रतीक हैं। यह पूरी रचना शिव के तप, ज्ञान और पारिवारिक सौहार्द के वातावरण का दिव्य संगम है।

यह तस्वीर 20.43 x 7.9 फीट की रचना में भगवान शिव के अघोरी स्वरूप को दर्शाया गया है जहाँ वे अंतरिक्ष में खड़े हुए दिख रहे है। उनके चारों ओर ग्रह, तारे और आकाशगंगा बनी हुई है, जिससे उनका ब्रह्मांडीय स्वरूप प्रकट होता है। भगवान शिव संसार के मोह–माया से परे होकर श्मशान और साधना स्थलों में तपस्या करने वाले, संसार से तटस्थ और सृष्टि के रहस्यों के ज्ञाता हैं। उनका यह रूप भक्तों को जीवन में वैराग्य, आत्मशक्ति, मृत्यु–भय पर विजय और तप का संदेश देता है।

यह तस्वीर 20.41 x 7.8 फीट की रचना में भगवान शिव के तीन रूपों को एक साथ दिखाया गया है– बाएँ ध्यान मुद्रा में बैठे शिव, जो आंतरिक शांति और वैराग्य का प्रतीक हैं। बीच में योगासन मुद्रा में शिव, जिनके पीछे दिव्य प्रभा है, उनके योग और ऊर्जा जागरण स्वरूप को दर्शाते हैं। दाएँ शिवलिंग के पास ध्यानस्थ शिव, जिनके पीछे नाग का फन फैला है, उनके गहन तांत्रिक और साधक रूप को प्रकट करता है। पीछे समुद्र और आकाश की विशालता भगवान शिव के असीम ब्रह्मांडीय स्वरूप को दिखाती है। भगवान शिव को आदियोगी, अर्थात प्रथम योगी, और योग, ध्यान तथा सभी कलाओं के रक्षक के रूप में पूजा जाता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, शिव ने हिमालय में स्थित कांति सरोवर के तट पर अपने सात शिष्यों, (सप्त ऋषियों) को सबसे पहले योग की दीक्षा दी थी। ऐसा माना जाता है कि शिव योग के सभी आयामों–शरीर, मन और चेतना–पर पूर्ण नियंत्रण रखते हैं और वे आसनों तथा ध्यान की साधना के परमगुरू हैं।

यह चित्र भगवान शिव के नटराज स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ वे तांडव नृत्य कर रहे हैं। शिव का यह रूप न केवल सृष्टि, स्थिति और संहार के चक्र का प्रतीक है, बल्कि वे संगीत और नृत्य के जन्मदाता और संरक्षक भी माने जाते हैं। केंद्र में भगवान शिव तांडव मुद्रा में एक अपस्मार (अज्ञानता के राक्षस) पर पांव रखकर नृत्य कर रहे हैं। चित्र की पृष्ठभूमि में वाद्ययंत्र बजाते हुए कलाकार और साधक दिखाए गए हैं, जो शिव के तांडव की दिव्यता में शामिल होकर संगीत की लय को सजीव कर रहे हैं। शंख, ढोल, मृदंग, और विभिन्न वाद्ययंत्र संगीत की उत्पत्ति और उसके महत्व को दर्शाते हैं। भगवान शिव का यह नटराज स्वरूप हमें यह सिखाता है कि संगीत और नृत्य न केवल कला हैं, बल्कि अज्ञानता पर विजय प्राप्त कर जीवन में ऊर्जा, संतुलन और सृजनात्मकता बनाए रखने का मार्ग भी हैं।

शिव धाम में भगवान शिव से जुड़ी पवित्र वस्तुएँ–
मंदिर की बाहरी दीवारों पर सुंदरता और आस्था का अनोखा संगम

दीवारों पर उकेरे गए त्रिपुंड, डमरू, त्रिशूल, रुद्राक्ष और अन्य शिव–प्रतीक न केवल मंदिर की भव्यता बढ़ाते हैं, बल्कि श्रद्धालुओं को यह एहसास भी कराते हैं कि वे महादेव की दिव्य उपस्थिति में खड़े हैं। इन प्रतीकों को देखते ही मन में एक विशेष कंपन उत्पन्न होता है, जैसे स्वयं शिव भक्तों के हृदय में साधना और समर्पण का भाव जगाते हों। शिव धाम की यह आध्यात्मिक ऊर्जा हर आगंतुक को भीतर तक स्पर्श करती है और उसे भगवान शिव के शांत, गूढ़ तथा सौम्य स्वरूप का अनुभव कराती है।

भगवान शिव हिंदू धर्म में ज्ञान, ध्यान, तप और त्याग के सर्वोच्च प्रतीक माने जाते हैं। उनका स्वरूप जितना सरल दिखता है, उतना ही रहस्यमय और आध्यात्मिक रूप से गहरा है। उनके माथे पर बना त्रिपुंड – जो भस्म से बनाया जाता है–तीनों गुणों (सत्व, रज और तम) पर विजय का प्रतीक है। यह हमें बताता है कि जीवन में संतुलन, शांति और आत्मसंयम कितना आवश्यक है। शिव की तीसरी आंख, ज्ञान की अग्नि का प्रतीक है–वह अग्नि जो अज्ञान, अहंकार और बंधनों को भस्म कर देती है। यह आंख हमें सत्य की ओर बढ़ने, भीतर झांकने और वास्तविक आत्मज्ञान को प्राप्त करने की प्रेरणा देती है। डमरू सृष्टि के आरंभ और अंत का संकेत है–उसकी ध्वनि से ब्रह्मांडीय ऊर्जा का प्रवाह शुरू होता है।

त्रिशूल तीनों लोकों, तीनों कालों और मन के तीन प्रमुख तत्वों पर शिव की नियंत्रण शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। रुद्राक्ष, जिसे स्वयं महादेव अपने श्रृंगार में धारण करते हैं, साधक के मन को शांत करता है और उसे अध्यात्म की दिशा में आगे बढ़ाता है। इस प्रकार शिव के प्रत्येक प्रतीक में एक गहन अर्थ छिपा है, जो भक्तों को जीवन, साधना और सत्य के पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। शिवधाम का प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक प्रतीक, मन में यह भाव भर देता है कि शिव कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही विराजमान हैं– बस उन्हें अनुभव करने की आवश्यकता है।

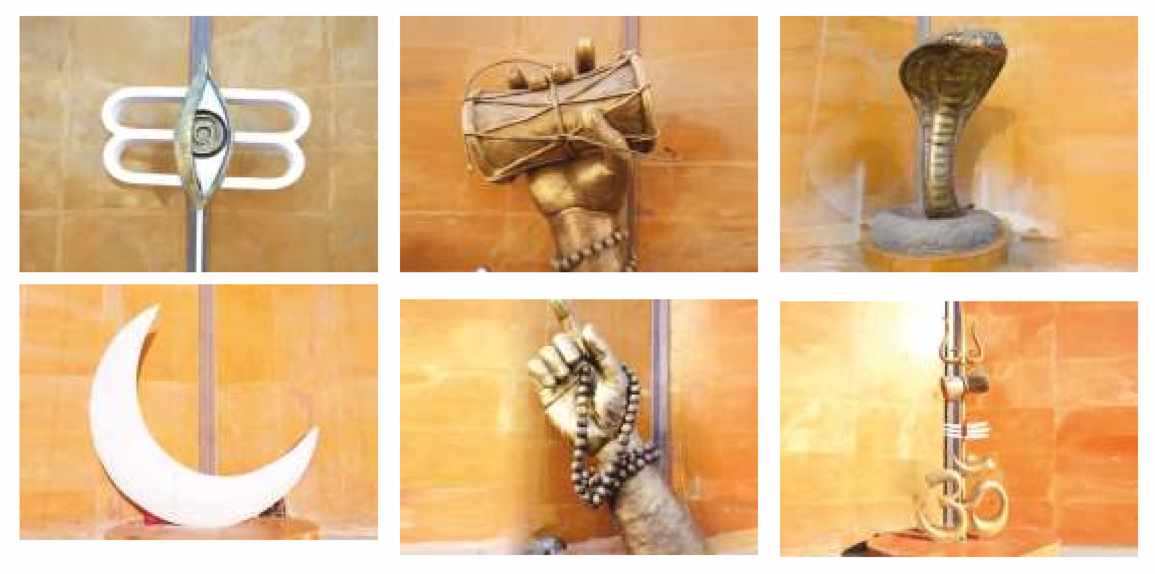

राधा-कृष्णा धाम,वृन्दावन

राधा-कृष्ण के संगम, भक्ति और प्रेम के
इस परम मिलन को महसूस करें।

राधा–कृष्णा धाम

वृंदावन की पवित्र धरती पर चार धाम परिसर में स्थित राधा–कृष्णा धाम मंदिर की ऊँचाई 123 फीट और आंतरिक क्षेत्रफल 4788 वर्ग फीट है। इस मंदिर के चारों ओर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़ी सुंदर कलाकृतियाँ भक्तों को कृष्ण की लीलाओं की याद दिलाती हैं। मंदिर के द्वार पर गोवर्धन पर्वत का भव्य स्वरूप दिखाई देता है, जहाँ भगवान श्रीकृष्ण की उंगली पर गोवर्धन पर्वत टिके हुए अद्भुत दृश्य में दर्शन देते हैं। इसके बायीं ओर यमुना नदी में भगवान कृष्ण द्वारा कालिया नाग के दमन का दृश्य प्रदर्शित है, जो अत्यंत जीवंत और मनमोहक है।

मंदिर की आंतरिक दीवारों पर श्रीकृष्ण की लीलाओं की झाँकियाँ और आकर्षक वास्तुशिल्प डिज़ाइन हर भक्त को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। मंदिर के बाहरी दीवारों के साथ में बनी हुई भगवान कृष्ण से जुड़ी वस्तुएं और प्रतीकात्मक कलाकृतियां दिखाई देती हैं। प्रवेश–द्वार पर स्थापित गरुड़ जी की सुंदर मूर्ति देखकर ऐसा लगता है जैसे वे अपने पंख फैलाकर भक्तों को प्रेम से पुकार रहे हों– आओ, श्रीकृष्ण की भक्ति में स्वयं को समर्पित कर दो।

यहाँ भक्तजन प्रेम और भक्ति का अनुभव करते हुए प्रेम के प्रतीक पर्वत पर श्रीकृष्ण की प्रिय बाँसुरी के अद्भुत स्वरूप का दर्शन करते हैं। भगवान कृष्ण को बाँसुरी बजाते हुए देखना अपने आप में भक्तों के लिए अत्यंत सुखद अनुभव होता है। कहा जाता है कि वृंदावन में जब श्रीकृष्ण बाँसुरी बजाते थे, तब पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और सभी लोग उसकी मधुर ध्वनि में खो जाते थे। ऐसा लगता था मानो प्रकृति भी उनकी बाँसुरी की तान पर झूम रही हो। एक प्रसिद्ध कथा के अनुसार, श्रीकृष्ण अपनी बाँसुरी की मधुर ध्वनि से राधाजी से संवाद करते थे, जिसे केवल राधा जी ही समझ पाती थीं।

यह धाम केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भक्तों के लिए प्रेम, भक्ति और शांति से भरी एक आध्यात्मिक यात्रा का अनुभव कराता है। यहाँ मंदिर के गर्भगृह में अष्टधातु से निर्मित राधा–कृष्ण की दिव्य प्रतिमाएँ स्थापित हैं, जिनके दर्शन मात्र से ही मन श्रद्धा और शांति से भर उठता है।

राधा–कृष्णा धाम की सुंदरता इसकी अद्भुत शिल्पकला और आध्यात्मिक वातावरण में छिपी है, जहाँ हर भक्त प्रेम और भक्ति में स्वयं को खो देता है।

कालिया नाग मर्दन की मंत्रमुग्ध कर देने वाली कलाकृति का साक्षात् आनंद लें

गोवर्धन पर्वत के बायीं ओर, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा यमुना नदी में कालिया नाग का मर्दन दर्शाया गया है। इस आकृति की ऊँचाईः 12 फीट, चौड़ाईः 10.5 फीट तथा व्यासः 10 फीट है, जो एक बहुत ही जीवंत और मनमोहक दृश्य है। भगवान श्रीकृष्ण के बचपन की लीलाओं में कई रोचक और प्रेरणादायक कहानियाँ मिलती हैं। उन्हीं में से एक कथा है कालिया नाग मर्दन की, जिसमें श्रीकृष्ण ने कालिया नाग के घमंड को चूर कर दिया और यमुना नदी को विष से मुक्त किया। कहा जाता है कि कालिया नाग, कद्रू के पुत्र और पन्नग जाति के नागराज थे। पहले वह रमण द्वीप में रहता था, लेकिन गरुड़ जी से शत्रुता के कारण उसे वहां से जाना पड़ा। इसके बाद वह यमुना जी में आकर बस गया। यमुना में उसका एक कुंड था, जिसका पानी उसके विष के कारण हमेशा खौलता रहता था। उसकी जहरीली हवा से पेड़–पौधे और तट तक झुलस जाते थे, साथ ही, उसके ऊपर उड़ने वाले पक्षी भी गिरकर मर जाते थे।

जब भगवान श्रीकृष्ण ने देखा कि कालिया नाग का विष यमुना और वृंदावन के लोगों को परेशान कर रहा है, तब उन्होंने उसे सबक सिखाने का निश्चय किया। एक दिन श्रीकृष्ण अपने दोस्तों के साथ गेंद खेल रहे थे। खेल–खेल में गेंद यमुना में जा गिरी। जिस बच्चे की गेंद थी, वह जिद करने लगा, "कृष्णा, मेरी गेंद वापस लाओ।" तब श्रीकृष्ण कदम्ब के पेड़ पर चढ़ गए और गेंद लाने के लिए यमुना नदी में कूद पड़े।

श्रीकृष्ण जल में खेलते हुए पानी को उछालने लगे, यह देखकर कालिया नाग को गुस्सा आ गया और वह श्रीकृष्ण के पास आ गया। उसने सोचा कि यह छोटा सा बालक इतने जहरीले पानी में बेखौफ होकर कैसे खेल रहा है? गुस्से में आकर उसने श्रीकृष्ण को अपनी पकड़ में जकड़ लिया। यह देखकर गोकुल के लोग, गोपियाँ, गायें, माता यशोदा और नंद बाबा सब घबरा गए और बहुत दुखी हो गए।

जब श्रीकृष्ण ने देखा कि उनकी इस लीला से सभी व्याकुल हो रहे हैं, तब उन्होंने अपना आकार बढ़ाया और कालिया नाग की पकड़ से स्वयं को मुक्त कर लिया। इसके बाद श्रीकृष्ण ने कालिया नाग के सिर पर चढ़कर नृत्य करना शुरू कर दिया। कालिया नाग के सौ सिर थे, जब भी वह एक सिर उठाता, श्रीकृष्ण उस पर कदम रख देते। इससे कालिया नाग कमजोर हो गया और उसने श्रीकृष्ण से शरण मांग ली।

कालिया नाग की पत्नियाँ भी भगवान से प्रार्थना करने लगीं और बोलीं, "भगवान, आप जो भी करते हैं, हमारे कल्याण के लिए करते हैं। कृपा कर हमारे पति को क्षमा कर दीजिए और हमें उनका साथ वापस दे दीजिए।" भगवान श्रीकृष्ण ने कालिया नाग से कहा, "अब तुम्हें यहाँ नहीं रहना चाहिए। मेरे चरणों के निशान तुम्हारे शरीर पर हैं, अब गरुड़ तुम्हें हानि नहीं पहुँचाएगा। तुम अपने परिवार सहित यहाँ से चले जाओ।" इसके बाद कालिया नाग ने भगवान को प्रणाम किया और यमुना छोड़कर चला गया। श्रीकृष्ण की कृपा से यमुना का जल फिर से शुद्ध और अमृत–तुल्य हो गया।

जब–जब संसार में अन्याय और पाप बढ़ता है, भगवान हमारे कष्ट दूर करने के लिए आते हैं। श्रीकृष्ण ने दिखाया कि कितना भी बड़ा विष या अहंकार क्यों न हो, जब वह भगवान की शरण में आता है, तो उसका अंत कल्याण में बदल जाता है।

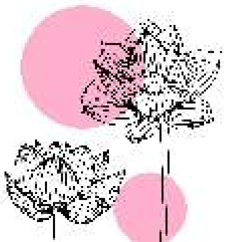

गोवर्धन पर्वत – भक्तों के दु:ख हरने वाला और कृपा बरसाने वाला पर्वतराज

राधा–कृष्णा धाम के पास ही गोवर्धन पर्वत बनाया गया है जिसकी लंबाई: 30 फीट, चौड़ाई: 15 फीट तथा ऊँचाई: 12 फीट है। इसे सुंदर और अद्भुत कलाकृतियों में दिखाया गया है कि भगवान कृष्ण ने गोकुल के लोगों को देवताओं के राजा इंद्र द्वारा भेजी गई बाढ़ से बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठा लिया था। गोवर्धन पर्वत को गिरिराज पर्वत भी कहा जाता है। यह उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में स्थित एक पवित्र पहाड़ी है। जिसे हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है, खासकर भगवान कृष्ण के भक्तों के लिए। द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने गोकुल–वृंदावन के लोगों को गोवर्धन पर्वत की पूजा करने के लिए प्रेरित किया था। तभी से भक्तों द्वारा इस पर्वत की पूजा की जा रही है।

गोवर्धन पर्वत का इतिहास महाभारत से जुड़ा है। एक कथा के अनुसार पुराने समय में तीर्थ यात्रा करते हुए पुलस्त्य ऋषि गोवर्धन पर्वत के पास पहुंचे तो इसकी सुंदरता देखकर वे मंत्रमुग्ध हो गए और द्रोणाचल पर्वत से निवेदन किया कि मैं काशी में रहता हूं। आप अपने पुत्र गोवर्धन को मुझे दे दीजिए, मैं उसे काशी में स्थापित करूंगा।

द्रोणाचल पर्वत अपने पुत्र गोवर्धन के लिए दुखी हो रहे थे, लेकिन गोवर्धन पर्वत ने ऋषि से कहा कि मैं आपके साथ चलूंगा, लेकिन मेरी एक शर्त है। आप मुझे जहां रख देंगे, मैं वहीं स्थापित हो जाऊंगा। पुलस्त्यजी ने गोवर्धन की यह बात मान ली। गोवर्धन ने ऋषि से कहा कि मैं आठ योजन लंबा या 64 मील; पांच योजन चौड़ा या 40 मील; और दो योजन ऊंचा या 16 मील हूं। आप मुझे काशी कैसे ले जाएंगे?

पुलस्त्य ऋषि ने कहा कि मैं अपने तपोबल से तुम्हें अपनी हथेली पर उठाकर ले जाऊंगा। तब गोवर्धन पर्वत ऋषि के साथ चलने के लिए सहमत हो गए। रास्ते में ब्रज भूमि आई। उसे देखकर गोवर्धन सोचने लगा कि भगवान श्रीकृष्ण यहां बाल्यकाल और किशोरकाल की बहुत सी लीलाएं करेंगे। अगर मैं यहीं रह जाऊं तो उनकी लीलाओं को देख सकूंगा। ये सोचकर गोवर्धन पर्वत पुलस्त्य ऋषि के हाथों में और अधिक भारी हो गया।

ऋषि को विश्राम करने की आवश्यकता महसूस हुई। इसके बाद ऋषि ने गोवर्धन पर्वत को ब्रज में रखकर विश्राम करने लगे। ऋषि यह बात भूल गए थे कि उन्हें गोवर्धन पर्वत को कहीं रखना नहीं है। कुछ देर बाद ऋषि पर्वत को वापस उठाने लगे लेकिन गोवर्धन ने कहा कि–ऋषिवर अब मैं यहां से कहीं नहीं जा सकता। मैंने आपसे पहले ही आग्रह किया था कि आप मुझे जहां रख देंगे, मैं वहीं स्थापित हो जाउंगा। तब पुलस्त्य ऋषि उसे ले जाने की हठ करने लगे, लेकिन गोवर्धन वहां से नहीं हिला। तब ऋषि ने उसे श्राप दिया कि तुमने मेरे मनोरथ को पूर्ण नहीं होने दिया, अतः आज से प्रतिदिन तिल–तिल कर तुम्हारा क्षरण होता जाएगा। फिर एक दिन तुम धरती में समाहित हो जाओगे। तभी से गोवर्धन पर्वत तिल–तिल करके धरती में समा रहा है। कलियुग के अंत तक यह धरती में पूरा समा जाएगा।

गोवर्धन परिक्रमा का अर्थ है – श्रद्धा और भक्ति के साथ किसी पूज्य वस्तु के चारों ओर घूमना। गोवर्धन परिक्रमा में भक्तजन नंगे पैर पैदल चलकर गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करते हैं। यह परिक्रमा लगभग 21 किलोमीटर लंबी होती है और इसे करने से अत्यंत पुण्य प्राप्त होता है। इस परिक्रमा की शुरुआत 'मुखराई गाँव' से मानी जाती है और इसका समापन भी यहीं होता है। गोवर्धन परिक्रमा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भक्ति, प्रेम, और आत्मिक शुद्धता की पदयात्रा है। इस यात्रा में हर कदम श्रीकृष्ण के चरणों में अर्पित होता है, हर स्थल उनकी लीलाओं का साक्षी है, और हर भक्त इस भूमि में ईश्वर के स्पर्श का अनुभव करता है।

प्रेम का प्रतीक पर्वत– श्री कृष्ण की प्रिय बांसुरीः प्रेम, भक्ति और माधुर्य का संगम

चार धाम, वृंदावन धाम में प्रेम के प्रतीक पर्वत पर भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय बाँसुरी का दिव्य और अद्भुत स्वरूप स्थापित है। यहाँ आकर भक्तजन बाँसुरी के दर्शन कर प्रभु के प्रेम, माधुर्य और करुणा का अनुभव करते हैं।

भगवान शिव ने दी थी – कृष्ण को बांसुरी

भगवान विष्णु ने द्वापर काल में धरती पर भगवान श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया था और उनके इस अवतार के दर्शन करने के लिए सभी देवी–देवता अलग–अलग वेष बदलकर धरती पर आए। पौराणिक कथा के अनुसार ऐसे ही एक बार भगवान शिव ने भी कृष्ण जी के दर्शन करने के बारे में सोचा। फिर उनके मन में सवाल आया कि कृष्ण जी से मिलने के लिए उनके लिए उपहार में ऐसा क्या लेकर जाएं जो सबसे अलग और खास हो और जिसे वह हर वक्त अपने साथ रखें। तभी भगवान शिव को ध्यान आया कि उनके पास ऋषि दधीचि की महाशक्तिशाली हड्डी रखी हुई है।

बस फिर क्या था शिव जी ने उस हड्डी को घिसकर उसे एक सुंदर व खूबसूरत बांसुरी का रूप दिया। उस बांसुरी को लेकर वे भगवान कृष्ण से मिलने धरती पर आए और बांसुरी भेंट की। बस तभी से भगवान कृष्ण के हाथ में बांसुरी है और वे हमेशा उसे अपने साथ रखते हैं। यह सत्य है कि कान्हा जी का श्रृंगार बिना बांसुरी के अधूरा माना जाता है।

दूसरी कथा के अनुसार कहा जाता है कि पहली बार कृष्ण को बांसुरी धवन नाम के एक बंसी बेचने वाले से मिली थी। जब बंसी बेचने वाले ने कृष्ण को इसे बजाने के लिए कहा तो भगवान की मधुर धुन सुनकर वह मंत्रमुग्ध हो गया। बांस–निर्मित बांसुरी भगवान श्रीकृष्ण को अतिप्रिय है। इसे वंसी, वेणु, वंशिका और मुरली भी कहते हैं।

श्री कृष्ण बांसुरी के अन्य नाम

भगवान श्रीकृष्ण के कई प्रतीकों में एक है बांसुरी, जिसे उनकी हर प्रतिमा में देखा जाता है। बांसुरी प्रेमी होने के कारण उन्हें कई नाम भी मिले हैं। भगवान कृष्ण को बंसी, वेणु, वंशिका, बंशीधर और मुरलीधर जैसे नामों से भी जाना जाता है। श्रीमद्भागवत पुराण में भी भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी से जुड़ी कई कथाएं हैं। बांसुरी का नाम वंशी हैं, वंशी को उल्टा करने पर शिव बनता है अतः बांसुरी शिव का रूप है। शिव वो हैं जो संपूर्ण संसार को अपने प्रेम के वश में रखते है और शिव व विष्णु के अटूट प्रेम के साक्षी शास्त्र हैं इस प्रकार, दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। उनका व्यवहार और वाणी दोनों ही बांसुरी की तरह मधुर है। कन्हैया की बांसुरी कई नामों से जानी जाती है। श्री कृष्ण की लंबी बांसुरी का नाम महानंदा, सम्मोहिनी, आकर्षिणी एवं सबसे बड़ी बांसुरी आनंदिनी था।

श्री कृष्ण ने तोड़ी बांसुरी

जब श्री कृष्ण आखिरी बार राधा से मिलने आए तो उस दौरान जब श्रीकृष्ण ने राधा से कुछ मांगने को कहा तो राधा ने बांसुरी की धुन सुनने की इच्छा जताई। कहा जाता है कि बांसुरी की धुन सुनते–सुनते ही राधा ने शरीर त्याग दिया। राधा का वियोग भगवान श्रीकृष्ण सह न पाए और उन्होंने अपनी बांसुरी तोड़कर फेंक दी।

भगवान श्रीकृष्ण की बांसुरी केवल एक वाद्ययंत्र नहीं है, बल्कि प्रेम, भक्ति और ईश्वर के साथ जुड़ाव का प्रतीक है। जब भी हम श्रीकृष्ण की बांसुरी का दर्शन करते हैं, यह हमें सिखाती है कि अपने अंदर से अहंकार को निकालकर हमें भी भगवान की मधुरता और करुणा को अपने जीवन में उतारना चाहिए।

भक्ति की उड़ान, श्री कृष्ण के द्वार

राधा–कृष्णा धाम, मंदिर के मुख्य द्वार से थोड़ी दूरी पर स्थित भगवान गरुड़ जी की यह दिव्य प्रतिमा श्रद्धालुओं को भक्ति, साहस और निष्ठा का स्मरण कराती है। यह प्रतिमा लगभग 4.3 फीट चौड़ी और 8.5 फुट ऊँची है, जो गरुड़ जी की विशालता और शक्ति का प्रतीक है। गरुड़ जी को भगवान विष्णु का वाहन माना जाता है, पर वे केवल वाहन नहीं बल्कि धर्म, सेवा और विनम्र भक्ति के प्रतीक भी हैं।

इस प्रतिमा में गरुड़ जी दोनों पंख फैलाए, हाथ जोड़कर नतमस्तक मुद्रा में खड़े हैं। उनके चेहरे पर तेज, सौम्यता और शांति का भाव है, जो दर्शन करने वाले प्रत्येक भक्त के मन में सकारात्मक ऊर्जा और भक्ति भाव जगाता है। उनके पंख उनकी आकाश छूने की शक्ति और साहस का संकेत देते हैं, फिर भी भगवान के चरणों में उनका सिर हमेशा झुका हुआ दिखता है। यह हमें सिखाता है कि चाहे हम कितने ही शक्तिशाली क्यों न हों, भगवान के आगे विनम्रता और भक्ति में झुकना ही सच्चा जीवन है।

गरुड़ जी को विनायक, गरुत्मत, तार्क्ष्य, वैन्तेय, नागान्तक, विष्णुरथ, खगेश्वर और सुपर्ण जैसे कई नामों से जाना जाता है। वे हिन्दू और बौद्ध दोनों धर्मों में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। महाभारत में भी गरुड़ ध्वज का उल्लेख आता है, और गरुण पुराण मृत्यु से पहले और बाद के मार्गदर्शन का विशेष ग्रंथ माना गया है।

गरुड़ जी का जन्म और उनकी कथाएँ भी प्रेरणादायक हैं

गरुड़ जी का जन्म सतयुग में हुआ, जब उन्होंने अपनी माता विनता को सर्पों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए अमृत कलश स्वर्ग से प्राप्त किया। उन्होंने अपनी माता की मुक्ति के लिए साहस, बुद्धिमत्ता और तप का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत किया। भगवान विष्णु ने उनके निस्वार्थ भाव को देखकर उन्हें अमरता और अपना वाहन बनने का वरदान दिया।

त्रेता युग में जब श्रीराम नागपाश में बंध गए थे, तब गरुड़ जी ने सभी नागों को समाप्त कर श्रीराम को मुक्त किया। इसी समय गरुड़ जी को भगवान श्रीराम के स्वरूप पर संदेह हुआ, जिसे दूर करने के लिए उन्हें शिवजी और काकभुशुण्डि द्वारा रामकथा सुनाई गई।

द्वापर युग में जब श्रीकृष्ण के गरुड़, सुदर्शन चक्र और सत्यभामा को अपने–अपने गुणों पर अभिमान हुआ, तब श्रीकृष्ण ने एक अद्भुत लीला रची। हनुमान जी को बुलाने के लिए गरुड़ गए, लेकिन हनुमान उनसे पहले ही श्रीकृष्ण के सामने पहुँच गए, जिससे गरुड़ का अभिमान टूट गया। इस लीला से सत्यभामा के सौंदर्य का, सुदर्शन चक्र के शक्ति का और गरुड़ जी के तेज उड़ान का घमंड समाप्त हुआ और सभी ने भगवान श्रीकृष्ण के चरणों में शीश झुकाया।

राधा–कृष्णा धाम में स्थापित यह गरुड़ जी की प्रतिमा केवल कला का अद्भुत नमूना नहीं है, बल्कि यह हर आगंतुक को भगवान की भक्ति, विनम्रता और जीवन के सच्चे उद्देश्य की याद दिलाने वाली प्रेरणादायक चेतना है।

राधा–कृष्णा धाम मंदिर की बाहरी दीवारों के साथ भगवान श्रीकृष्ण से जुड़ी अनेक दिव्य वस्तुएँ और प्रतीक बड़े ही सुंदर और कलात्मक रूप में बनाए गए हैं। ये वस्तुएँ केवल सजावट नहीं हैं, बल्कि श्रीकृष्ण के जीवन, उनकी लीलाओं और उनके दिव्य स्वरूप का गहन स्मरण कराती हैं। मंदिर के चारो तरफ बनी इन वस्तुओं में श्रीकृष्ण की बांसुरी, मोरपंख, शंख, चक्र, गदा, कमल का फूल और गीता जैसी कई पवित्र निशानियाँ शामिल हैं। हर वस्तु इतनी सुंदरता, कोमलता और श्रद्धा के साथ बनाई गई है कि उसे देखते ही मन श्रीकृष्ण की अनंत लीलाओं में खो जाता है।

कहीं बांसुरी की आकृति हमें कृष्ण की मधुर धुनों का स्मरण दिलाती है, तो कहीं माखन–मटकी बालगोपाल की मनमोहक शैतानियों का भाव जगाती है। मोरपंख उनकी दिव्य छवि का प्रतीक बनकर चमकता है, जबकि पदचिह्न ऐसा एहसास कराते हैं कि मानो स्वयं कृष्ण इन दीवारों के पास होकर गुज़रे हों। हर वस्तु एक अलग कथा कहती है– प्रेम, भक्ति, करुणा और आनंद की। इन वस्तुओं के दर्शन मात्र से ही भक्तों के भीतर एक कोमल आध्यात्मिक ऊर्जा भर जाती है। मन स्वतः शांत हो जाता है, हृदय हल्का हो जाता है और भीतर से एक दिव्य सकारात्मकता जागृत होती है। ऐसा लगता है कि कृष्ण अपनी वस्तुओं के माध्यम से प्रेमपूर्वक आशीर्वाद दे रहे हैं और कह रहे हों–**"मेरी स्मृति तुम्हारे साथ सदा बनी रहे।"**

इस प्रकार राधा–कृष्णा धाम मंदिर की बाहरी दीवारों पर बनी ये कृष्ण–सम्बंधित वस्तुएँ केवल कला नहीं हैं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक अनुभव हैं। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति इन वस्तुओं को देखकर अपने भीतर प्रेम, शांति और भक्ति का मधुर स्पर्श महसूस करता है और कृष्ण की उपस्थिति को अपने हृदय में गहराई से अनुभव करता है।

कदंब वृक्षः श्रीकृष्ण की लीलाओं का साक्षी

कमल का फूलः पवित्रता, प्रेम और भक्ति का अद्भुत संबंध

सुदर्शन चक्रः श्रीकृष्ण की दिव्यता और धर्म की रक्षा का प्रतीक

श्रीमद्भगवद्गीता का स्वर्णिम मॉडल

गदा (कौमोदकी): अधर्म का विनाश और धर्म की विजय का प्रतीक

पाञ्चजन्य शंखः श्रीकृष्ण की विजय और धर्म की शक्ति का प्रतीक

बांसुरीः प्रेम, संगीत और आत्मा का संगम

मोरपंखः प्रेम, त्याग और भक्ति का संगम

राधा–कृष्णा धाम मंदिर की अंदर की दीवारें मानो एक जीवंत आध्यात्मिक चित्रशाला की तरह दिखाई देती हैं। यहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़ी अनेक पवित्र लीलाएँ घटनाएँ और दिव्य प्रसंग कलात्मक रूप में उकेरे गए हैं। हर चित्र इतनी सूक्ष्मता और प्रेम से बनाया गया है कि देखने वाला स्वयं को उन लीलाओं के समय और स्थान में उपस्थित महसूस करता है। कहीं बालगोपाल माखन चुराते हुए मुस्कुरा रहे हैं, तो कहीं श्रीकृष्ण अपनी मधुर बांसुरी की धुन से ब्रजवासियों के हृदय को आनंदित कर रहे हैं। कुछ स्थानों पर राधा–कृष्ण की मनोहर रासलीला दिखाई देती है, तो कहीं कंस के अत्याचारों का अंत कर धर्म की रक्षा करते हुए श्रीकृष्ण का वीर रूप। भगवान के हर रूप और हर रस को इन दीवारों पर अत्यंत सुंदरता से सजाया गया है। इन कलाकृतियों को निहारते ही भक्त के मन में एक अनोखी दिव्यता का संचार होता है।

चित्रों से निकलती आध्यात्मिक ऊर्जा भक्त के मन को शांत करती है और उसे प्रभु के प्रेम में डूबो देती है। ऐसा लगता है मानो कृष्ण स्वयं अपनी लीलाओं के माध्यम से हमें संदेश दे रहे हों कि– 'चिंता मत करो मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।' जो भी यहाँ आता है, वह केवल एक मंदिर नहीं देखता बल्कि भगवान कृष्ण की निरंतर प्रवाहित होने वाली उपस्थिति को अनुभव करता है। दीवारों पर बनी हर रेखाए हर रंग, हर आकृति भक्त के भीतर प्रेम, भक्ति और शांति का भाव जगाती है। यहाँ आकर मन स्वतः शांत हो जाता है और हृदय में एक मधुर, पवित्र आनंद भर जाता है। इस प्रकार राधा–कृष्णा धाम मंदिर की ये कलाकृतियाँ केवल चित्र नहीं हैं, बल्कि आध्यात्मिक ऊर्जाओं से भरी दिव्य झलकियाँ हैं, जो हर आगंतुक के हृदय में कृष्ण–प्रेम का सन्देश रोपित कर देती हैं और उसे इस धाम से जुड़े रहने का मधुर अनुभव कराती हैं।

राधा-कृष्णा धाम, मंदिर की दीवार पर बनी यह तस्वीर 12.67 x 5.47 फीट में बालकृष्ण, माता यशोदा और नंद बाबा स्वरूप का दिव्य प्रदर्शन है। यह चित्र उस दिव्य प्रसंग को दर्शाता है श्रीकृष्ण के बचपन में उनकी अद्भुत और दिव्य लीलाओं को देखकर माता यशोदा और नंद बाबा के मन में यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि श्रीकृष्ण जीवन में शास्त्र का मार्ग चुनेंगे या शस्त्र का। इस प्रसंग में श्रीकृष्ण ने शास्त्र का चयन कर यह संकेत दिया कि ज्ञान और धर्म का मार्ग ही मानव जीवन का मूल उद्देश्य है। बाद में श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, जो सम्पूर्ण मानवता के लिए धर्म, कर्तव्य, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत मार्गदर्शन बना। श्रीकृष्ण ने यह सिखाया कि जब तक धर्म की रक्षा के लिए शस्त्र उठाना आवश्यक न हो, तब तक ज्ञान और शांति के मार्ग पर चलना चाहिए।

यह तस्वीर 13.23 x 5.48 फीट की रचना में बनी है जिसमें श्रीकृष्ण, माता यशोदा और राधारानी स्वरूप का दिव्य प्रदर्शन है। बाएँ श्रीकृष्ण बांसुरी बजाते हुए अपने मनमोहक स्वरूप में दिखाए गए हैं। बीच में श्रीकृष्ण माखन की मटकी तोड़ने की शरारत के दंड के भय से भागते हैं, और यशोदा मां उन्हें पकड़ने का प्रयास कर रही हैं। दाएँ, श्रीराधा बांसुरी के साथ दिखाई गई हैं। इस चित्र में कृष्ण और राधा के अगाध प्रेम और एक-दूसरे के प्रति उनके समर्पण को दर्शाया गया है। दोनों ने एक-दूसरे से निःस्वार्थ और आत्मिक प्रेम किया था।

यह तस्वीर 13.27 x 5.53 फीट में बनी है जिसमें श्रीकृष्ण और उनके बड़े भाई बलराम का दिव्य स्वरूप का प्रदर्शन है। हरे-भरे प्राकृतिक वातावरण और शांत झील के किनारे, बलराम हल धारण किए हुए दिखाए गए हैं, जबकि श्रीकृष्ण बांसुरी बजाते हुए आनंद और प्रेम का संदेश दे रहे हैं। उनके साथ एक गाय भी चित्रित है, जो गोकुल और वृंदावन की गोसेवा परंपरा और श्रीकृष्ण-बलराम के ग्वाल रूप की स्मृति कराती है। यह चित्र श्रीकृष्ण और बलराम के आपसी प्रेम, भाईचारे, धर्म-रक्षा और आनंदमय जीवन का प्रतीक है। यह तस्वीर श्रद्धालुओं को जीवन में सरलता, प्रेम, धर्म और भक्ति भाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

यह तस्वीर 12.52 x 5.45 फीट में श्रीकृष्ण की रासलीला का दिव्य प्रदर्शन है। हरे-भरे प्राकृतिक वातावरण, वृक्षों और शांत जलाशयों के मध्य श्रीकृष्ण बांसुरी बजाते हुए गोपियों के संग रासलीला कर रहे हैं। रंग-बिरंगे परिधानों में सजी गोपियाँ आनंद और भक्ति में मग्न होकर श्रीकृष्ण के चारों ओर नृत्य कर रही हैं। रासलीला के उस दिव्य प्रसंग को दर्शाता है जहाँ श्रीकृष्ण ने भक्ति और प्रेम के अद्भुत संगम से गोपियों को आत्मिक आनंद की अनुभूति कराई थी। बंशीवट, श्रीकृष्ण की सबसे प्रिय रासलीला स्थली है। यही वह स्थान है जहां श्रीराधा और श्याम ने गोपियों के संग कई दिव्य प्रेमपूर्ण लीलाएं कीं। यह दृश्य श्रद्धालुओं को प्रेम, भक्ति और पूर्ण समर्पण की ओर प्रेरित करता है और दर्शाता है कि ईश्वर के साथ प्रेम और भक्ति में लीन होकर जीवन में सच्चा सुख प्राप्त किया जा सकता है।

यह तस्वीर 12.61 x 5.46 फीट में बनी है जिसमें श्रीराधा और श्रीकृष्ण के अनंत और शाश्वत प्रेम का दिव्य प्रदर्शन है। इस चित्र में राधारानी और श्रीकृष्ण फूलों से सजे झूले पर झूलते हुए दिखाए गए हैं। झूला सुंदर फूलों, तोरणों और कांति से सजा है, जिसके चारों ओर हरियाली और हंसों से युक्त शांत जलधारा का दृश्य वातावरण को और भी दिव्यता और आनंद से भर देता है। श्रीकृष्ण और राधा के रहस्यमय प्रेम को पवित्र ब्रजभूमि में झूलन यात्रा उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। यह श्रावण (जुलाई-अगस्त) के महीने में मनाया जाता है और आमतौर पर लगभग दो सप्ताह तक चलता है। इस अवधि में राधा-कृष्ण को झूले पर विराजमान कर भजन, कीर्तन और प्रेममयी सेवा की जाती है, जिससे भक्तों को भक्ति, प्रेम और आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है। यह भित्ति चित्र श्रद्धालुओं को प्रेम, भक्ति और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है और राधा-कृष्ण के मधुर प्रेम को हृदय में अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है।

यह तस्वीर 12.61 x 5.46 फीट की रचना है जो उस पावन क्षण का है जब गोपाष्टमी का पावन पर्व के दिन भगवान श्री कृष्ण गायों को चराने जाते है। उनकी लीलाओं में गोपाष्टमी सबसे महत्वपूर्ण है। कार्तिक मास की अष्टमी तिथि को गोपाष्टमी के नाम से जाना जाता है। इस शुभ दिन पर नंद महाराज अपने बच्चों कृष्ण और बलराम को पहली बार गाय चराने के लिए भेजते हैं। श्री कृष्ण नंगे पैर धूल में चलते थे और हर जगह अपने चरण-धूलि के निशान छोड़ते थे। यही कारण है कि वृंदावन की सुंदरता अद्भुत है। भगवान कृष्ण, बलराम, सुदामा और उनके साथी पहली बार गायों को चराने के लिए ले जा रहे हैं। हरियाली से घिरा यह मार्ग, नदी का शांत प्रवाह और प्राकृतिक सुंदरता इस यात्रा को और भी मनमोहक बनाते हैं। यह चित्र हमारे सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर की जीवंत झलक है।

यह तस्वीर, 12.76 x 5.45 फीट के आकार में उस पावन क्षण का है जो राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक है। राधा और कृष्ण का संगम भौतिक नहीं, बल्कि आत्मिक प्रेम की सर्वोच्च अभिव्यक्ति माना जाता है। श्रीकृष्ण अपने विशिष्ट नीले स्वरूप में पीतांबर वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनका मुखमंडल तेज़ से दमक रहा है और उनकी मुद्रा शांति व प्रेम से परिपूर्ण है। राधारानी उनके बाईं ओर विराजमान हैं। उन्होंने गुलाबी और हरे रंग की पारंपरिक वेशभूषा पहनी है, जो उनकी सुंदरता और कोमलता को दर्शाती है। राधारानी के हाथ में जल से भरा एक घड़ा है, जो नदी के जल से भरा प्रतीत होता है। यह उनके सेवा-भाव और समर्पण का प्रतीक है। दोनों एक चट्टान पर बैठे हैं और उनके पीछे शांत जलप्रपात, हरियाली से आच्छादित वृक्ष और रंग-बिरंगे पुष्प एक स्वर्गिक वातावरण निर्मित करते हैं। यह चित्र उन सभी श्रद्धालुओं के लिए ध्यान और भक्ति का माध्यम है, जो राधा-कृष्ण के पवित्र प्रेम और लीलाओं को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहते हैं।

यह चित्र, जो 12.66 x 5.45 फीट के आकार में है, राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति से अभिन्न जुड़ाव को अत्यंत मनोहारी ढंग से प्रस्तुत करता है। यह दृश्य केवल एक चित्र नहीं, बल्कि भक्ति, प्रेम और आध्यात्मिक रस की जीवंत अनुभूति है। इस दिव्य चित्र में भगवान श्रीकृष्ण, अपने श्यामवर्ण रूप में, राधारानी के साथ स्नेहपूर्वक खड़े दिखाई दे रहे हैं। राधारानी लाल रंग की पारंपरिक वेशभूषा में अलौकिक सौंदर्य से मंडित हैं, जो उनके प्रेम, लज्जा और कोमलता का प्रतीक है। दोनों के पीछे नील जल से भरी शांत झील, उसके चारों ओर लहराते फूलों से सजे वृक्ष, और दूर-दूर तक फैले हरित पर्वतों का दृश्य, इस चित्र को स्वर्गिक सौंदर्य प्रदान करता है। यह चित्र राधा-कृष्ण के आत्मिक और आध्यात्मिक प्रेम का प्रतीक है। उनका प्रेम किसी सांसारिक बंधन में बंधा नहीं है, बल्कि आत्मा और परमात्मा के मिलन की अनुभूति है।

यह भव्य चित्र, जो 12.75 x 5.43 फीट के आकार में निर्मित है, राधा-कृष्ण के प्रेम, होली के उल्लास और ब्रज संस्कृति की दिव्यता को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है। यह केवल एक दृश्य नहीं, बल्कि भक्ति, रंगों और आत्मिक प्रेम की अनुपम झलक है। इस चित्र में भगवान श्रीकृष्ण, अपने श्यामवर्ण रूप और पीतांबर वस्त्रों में राधारानी को रंगों से सराबोर करते दिखाई दे रहे हैं। वहीं राधारानी, लाल पारंपरिक परिधान में सजी, मुस्कान और संकोच से भरी मुद्रा में खड़ी हैं। उनके चारों ओर हरी-भरी प्रकृति, वृक्षों की छाया, और एक शांत झील का सौंदर्य वातावरण को और भी दिव्य बना देता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कृष्ण अपनी प्रिय राधा के साथ होली खेलने के लिए मथुरा से नंदगांव, फिर बरसाना आते थे। ब्रज में होली केवल एक रंगों का पर्व नहीं, बल्कि राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम की स्मृति में मनाया जाने वाला एक आध्यात्मिक उत्सव है। यहां होली कई दिनों तक बड़े हर्षोल्लास और भक्ति भाव से मनाई जाती है। लठमार होली, फूलों की होली, और रंगभरी होली जैसे रूप, ब्रज की संस्कृति और श्रद्धा को दर्शाते हैं। यह चित्र न केवल होली के उल्लास को दर्शाता है, बल्कि प्रेम, भक्ति और सांस्कृतिक विरासत का भी प्रतिनिधित्व करता है। यह श्रद्धालुओं को राधा-कृष्ण की उस दिव्य लीला का स्मरण कराता है, जिसमें प्रेम रंग बनकर बहता है, और भक्ति रंगों की वर्षा बनकर हृदय को सराबोर कर देती है।

शनि धाम

न्याय, अनुशासन और कर्म की शक्ति

शनि धाम – कर्म, श्रद्धा और आध्यात्मिकता का अद्वितीय संगम

चार धाम, वृन्दावन में प्रतिष्ठित यह प्रसिद्ध शनि मंदिर हिंदू ज्योतिष के नौ ग्रहों में से एक, न्याय के देवता भगवान शनि को समर्पित है। यह मंदिर न केवल अपनी दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि इसकी अनूठी वास्तुकला, विशाल संरचना, और आध्यात्मिक महत्व इसे विशेष बनाते हैं। मंदिर की ऊँचाई लगभग 95 फीट है तथा इसका कुल आंतरिक क्षेत्रफल 4799 वर्ग फीट में फैला हुआ है, जो इसकी भव्यता और वास्तुकला कला की झलक प्रस्तुत करता है। मंदिर के अंदर की दीवारों पर भगवान शनि के विभिन्न स्वरूपों को उकेरा गया है, जिनके माध्यम से शनि देव के स्वरूप, शक्ति, और उनके दंड तथा कृपा के विविध पक्षों को चित्रात्मक शैली में दर्शाया गया है। ये चित्रण न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि धार्मिक शिक्षाओं और कर्म सिद्धांत को भी सहजता से समझाने का माध्यम बनते हैं।

नवग्रह पूजा स्थल– प्रवेश–द्वार पर ही नौ ग्रहों का आशीर्वाद

शनि मंदिर की विशेषताओं में एक और अद्भुत तत्व है, प्रवेश–द्वार पर स्थित नवग्रह पूजा स्थल, जो सभी नौ ग्रहों (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु) को समर्पित है। यह पूजा स्थल दर्शाता है कि भगवान शनि, भले ही प्रमुख ग्रह हैं, परंतु संपूर्ण ग्रह मंडल की उपस्थिति और संतुलन भी व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। श्रद्धालु मंदिर में प्रवेश से पहले इस नवग्रह स्थल पर पूजा कर सभी ग्रहों की सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी आध्यात्मिक साधना और कर्म मार्ग में समरसता बनी रहे। यह पूजा स्थल यह स्मरण कराता है कि समस्त ग्रह एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं और प्रत्येक ग्रह का प्रभाव हमारे कर्मों व जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है।

मन्नत की दीवार –आस्था और कर्म का मिलन

मंदिर प्रांगण में स्थित 'मन्नत की दीवार' विशेष रूप से श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र है। यहाँ भक्तगण अपनी मनोकामनाएँ धागा बाँधकर प्रार्थना करते हैं कि भगवान शनि उनकी इच्छाओं की पूर्ति करें। यह दीवार न केवल भक्तों की आस्था और विश्वास का प्रतीक है, बल्कि यह यह भी स्मरण कराती है कि प्रार्थना के साथ–साथ कर्म का भी विशेष महत्व होता है। शनि देव केवल मनोकामनाओं की याचना पर प्रसन्न नहीं होते, बल्कि वे निष्कलंक, न्यायसंगत, और सत्यनिष्ठ कर्मों के आधार पर ही कृपा प्रदान करते हैं।

प्रतीकात्मक संरचनाएँ– समय और न्याय का मूर्त रूप

मंदिर परिसर में स्थापित सूर्य चक्र, सूर्य रथ, और शनि देव के वाहन स्वरूपों की संरचनाएँ इस स्थल को अन्य मंदिरों से विशिष्ट बनाती हैं। ये प्रतीकात्मक रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि शनि देव समय और कर्म के नियंता हैं। सूर्य रथ और चक्र यह दर्शाते हैं कि जैसे सूर्य अनवरत गति में है, वैसे ही कर्मों का चक्र भी निरंतर चलता रहता है और प्रत्येक कर्म, समय के अनुसार, निश्चित रूप से फलित होता है।

वास्तु और शिल्पकला–ज्योतिष का दृश्य रूप

मंदिर की बाहरी दीवारों पर भी शनि देव से जुड़ी पौराणिक वस्तुओं और प्रतीकों की अत्यंत सुंदर कलाकृतियाँ निर्मित की गयी हैं, जो ज्योतिष शास्त्र और भारतीय शिल्पकला का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती हैं। ये शिल्प न केवल देखने में अद्भुत हैं, बल्कि धार्मिक शिक्षाओं को दृश्य रूप में समझाने का कार्य भी करते हैं।

शांत वातावरण और संस्कृति का समन्वय

मंदिर का संपूर्ण वातावरण ध्यान, साधना और पूजा–पाठ के लिए अत्यंत अनुकूल है। मंत्रोच्चार, घंटियों की ध्वनि, आरती की लौ और धूप–दीप की सुगंध वातावरण को एक पवित्र और शांत अनुभूति से भर देती हैं। यहाँ विभिन्न त्योहारों, अनुष्ठानों, और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होता है, जो न केवल भक्तों को धर्म से जोड़ता है, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक जड़ों और सामाजिक कर्तव्यों की भी याद दिलाता है। मंदिर में केवल पूजा ही नहीं, बल्कि समाज सेवा, दान, भंडारा, और सामूहिक आयोजन की भी सुव्यवस्थित व्यवस्था है, जो सनातन धर्म के सामाजिक और मानवतावादी मूल्यों का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करती है।

कर्म और धर्म – शनि देव का न्यायपूर्ण मार्ग

शनि देव को हिंदू धर्म में न्याय का देवता कहा गया है, जो प्रत्येक जीव को उसके कर्मों के अनुसार फल प्रदान करते हैं। शनि मंदिर की हर दीवार, उसका सौंदर्य, उसकी वास्तुकला और उसका शांत वातावरण इस शाश्वत सिद्धांत की पुष्टि करते हैं कि 'जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

चार धाम में स्थित यह शनि मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह एक ऐसा जीवंत संदेश है, जो हर श्रद्धालु को कर्म, संयम और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यहां आकर न केवल शनि देव की कृपा प्राप्त होती है, बल्कि आत्मा को शांति, मन को स्थिरता, और जीवन को दिशा भी मिलती है। यह मंदिर वास्तव में आपकी आध्यात्मिक यात्रा का एक अविस्मरणीय पड़ाव सिद्ध हो सकता है।

नवग्रह पूजा स्थल
नवग्रहों की कृपा से जीवन में सुख, शांति और सफलता

शनि मंदिर की विशेषताओं में एक और अद्भुत तत्व है, प्रवेश–द्वार पर स्थित नवग्रह पूजा स्थल, जो सभी नौ ग्रहों (सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु) को समर्पित है। यह पूजा स्थल दर्शाता है कि भगवान शनि, भले ही प्रमुख ग्रह हैं, परंतु संपूर्ण ग्रह मंडल की उपस्थिति और संतुलन भी व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालता है। श्रद्धालु मंदिर में प्रवेश से पहले इस नवग्रह स्थल पर पूजा कर सभी ग्रहों की सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करते हैं, जिससे उनकी आध्यात्मिक साधना और कर्म मार्ग में समरसता बनी रहे। यह पूजा स्थल यह स्मरण कराता है कि समस्त ग्रह एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं और प्रत्येक ग्रह का प्रभाव हमारे कर्मों व जीवन के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है।

नवग्रह–पूजा जीवन को संतुलन और शांति की ओर ले जाने वाला मार्ग

भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में नवग्रह पूजा का विशेष महत्व है। यह पूजा ज्योतिष शास्त्र और वैदिक परंपराओं पर आधारित है, जिसमें माना गया है कि मनुष्य के जीवन में जो भी घटनाएं घटती हैं। वह सीधे तौर पर नवग्रहों की स्थिति और चाल से प्रभावित होती हैं। यही कारण है कि किसी भी शुभ कार्य से पहले, या जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए, नवग्रहों की पूजा की जाती है।

नवग्रह और जन्म कुंडली का संबंध एवं ग्रहों का जीवन पर प्रभाव

जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो उस क्षण सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु – ये नौ ग्रह जिस स्थिति में होते हैं, उसी के आधार पर उसकी जन्म कुंडली बनाई जाती है।

यह कुंडली उस व्यक्ति के पूरे जीवन का खाका होती है। कहा जाता है कि ग्रहों की चाल और उनकी स्थिति यह तय करती है कि व्यक्ति के जीवन में सुख, दुःख, सफलता या संघर्ष कितना और कब आएगा। नवग्रहों की गति और दशाएं हमारे भाग्य, स्वास्थ्य, व्यवसाय, रिश्ते और मानसिक स्थिति पर सीधा असर डालती हैं। यदि ग्रह शुभ स्थिति में हों, तो जीवन में समृद्धि, खुशहाली और प्रगति मिलती है। लेकिन यदि ग्रह अशुभ स्थिति में हों, तो व्यक्ति को कष्ट, रुकावटें, और मानसिक अशांति का सामना करना पड़ता है। इसलिए, नवग्रहों की शांति और संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

नवग्रह पूजा क्यों आवश्यक है?

नवग्रह पूजा एक ऐसा आध्यात्मिक उपाय है जिससे हम नकारात्मक ग्रहों के प्रभाव को शांत कर सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा का स्वागत कर सकते हैं।

नवग्रह पूजा से लाभ

- जीवन में संतुलन और स्थिरता आती है।
- मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।
- मानसिक शांति मिलती है।
- बाधाएं दूर होती हैं और नई राहें खुलती हैं।
- कर्मक्षेत्र (जैसे नौकरी, व्यापार, शिक्षा) में सफलता मिलती है।
- व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास भी होता है।

हर शुभ कार्य में नवग्रह पूजा का स्थान

ज्योतिष शास्त्र कहता है कि किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत से पहले यदि नवग्रहों की पूजा की जाए, तो उस कार्य में सफलता और स्थायित्व अवश्य आता है। यह पूजा ग्रहों को प्रसन्न कर उन्हें सहयोगी बना देती है।

यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में कोई ग्रह अशुभ स्थिति में है, तो यह पूजा उस ग्रह को शांत कर शुभ परिणाम प्रदान करती है। विवाह, गृहप्रवेश, नया व्यवसाय, या कोई अन्य विशेष कार्य– इन सभी में नवग्रह पूजा अनिवार्य रूप से की जाती है ताकि कोई बाधा न आए और कार्य सफलता के साथ पूर्ण हो।

नवग्रह पूजा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित, सकारात्मक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाने की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। जब हम ग्रहों की ऊर्जा को समझते हैं और उनके साथ सामंजस्य बनाते हैं, तो जीवन में आने वाली बाधाएं भी अवसरों में बदलने लगती हैं। इसलिए, नवग्रहों की पूजा कर हम न केवल उनका आशीर्वाद पाते हैं, बल्कि स्वयं को भी एक ऊँचे आत्मिक स्तर तक ले जाते हैं।

सूर्य रथ– दिव्यता, समय और ऊर्जा का प्रतीक

चार धाम में प्रतिष्ठित शनि धाम मंदिर न केवल भगवान शनि की महिमा का केंद्र है, बल्कि इसमें स्थापित अद्वितीय सूर्य रथ भी भक्तों के लिए एक विशेष आकर्षण और आध्यात्मिक प्रेरणा का स्रोत है। यह सूर्य रथ पूर्णतः पौराणिक, ज्योतिषीय और सांस्कृतिक भावनाओं को समर्पित है। इसकी लंबाई 42.5 फीट, चौड़ाई 12 फीट, और ऊँचाई 11 फीट है, जो इसकी भव्यता और धार्मिक महत्ता को दर्शाता है। भगवान शनि, जो सूर्य देव के पुत्र माने जाते हैं, समय और न्याय के अधिष्ठाता हैं। इसलिए शनि धाम में सूर्य रथ की उपस्थिति अत्यंत सार्थक है। यह रथ ना केवल सूर्य की दिव्यता को दर्शाता है, बल्कि कर्म, समय, और न्याय की उस गूढ़ शिक्षा को भी उजागर करता है जो शनि और सूर्य के रिश्ते से जुड़ी है। सूर्य जीवनदायी शक्ति हैं और शनि उसके आधार पर कर्मों का न्याय करते हैं। शनि धाम में बने इस सूर्य रथ के दर्शन करना आत्मिक ऊर्जा और प्रकाश प्राप्त करने जैसा अनुभव होता है। यह रथ हमें यह स्मरण कराता है कि जैसे सूर्य बिना रुके अपने मार्ग पर चलते हैं, वैसे ही हमें भी अपने जीवन में कर्मपथ पर अडिग रहना चाहिए। समय, संकल्प, और सच्चे कर्मों से ही जीवन का अंधकार दूर किया जा सकता है।

हिंदू धर्मग्रंथों और पुराणों में सूर्य देवता को ऊर्जा, प्रकाश और जीवनदायी शक्ति का प्रतीक माना गया है। वे न केवल एक प्रमुख देवता हैं, बल्कि संपूर्ण ब्रह्मांड के संचालन में समय, दिशा और ऋतु चक्र के नियंत्रक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। सूर्य देव का रथ, जिसे 'सप्ताश्वरथ' कहा जाता है, इस दिव्यता का मूर्त रूप है। यह रथ आध्यात्मिक, पौराणिक और वैज्ञानिक–तीनों ही दृष्टिकोणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

रथ की रचना और प्रतीकात्मकता– सात घोड़े, सात छंद, सात किरणें और सात रंग

सूर्य के रथ को खींचने वाले सात घोड़े केवल वाहनों के प्रतीक नहीं हैं, बल्कि गहन वैदिक और ब्रह्मांडीय अर्थ लिए हुए हैं। इन सात घोड़ों को गायत्री, बृहती, उष्णिक, जगती, त्रिष्टुप, अनुष्टुप और पंक्ति छंदों का प्रतीक माना गया है, जो वेदों की ऋचाओं में प्रयुक्त होते हैं। यह सात घोड़े सूर्य की सात किरणों (VIBGYOR – Violet, Indigo, Blue, Green, Yellow, Orange, Red) का भी प्रतिनिधित्व करते हैं, जो धरती पर ऊर्जा और प्रकाश लाते हैं। इन सातों का समन्वय ब्रह्मांडीय लय और संतुलन को दर्शाता है। यह रथ हमें बताता है कि प्रकृति का संचालन एक सुनियोजित, दिव्य प्रणाली से होता है।

अरुण– रथ के सारथी

सूर्य रथ के सारथी हैं अरुण, जो गरुड़ के भाई और कश्यप मुनि के पुत्र हैं। उन्हें हमेशा रक्त वर्ण (लाल रंग) में दर्शाया गया है जो उगते सूरज की आभा और गति का प्रतीक है। अरुण यह दर्शाते हैं कि ब्रह्मांड की हर गति एक मार्गदर्शक द्वारा संचालित होती है– जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। पौराणिक मान्यता है कि अरुण दिव्य दृष्टि वाले हैं और सूर्य की तेज़ी को भी नियंत्रित करने में सक्षम हैं।

सूर्य रथ का पहिया और बारह तीलियाँ

सूर्य के रथ में एक ही पहिया होता है, जो समय का प्रतीक है। रथ का यह एक पहिया पूरा वर्ष (एक संवत्सर) दर्शाता है। इसमें मौजूद 12 तीलियाँ, 12 महीनों का प्रतिनिधित्व करती हैं और साथ ही 12 राशियों (Mesh to Meen) को भी इंगित करती हैं। यह रचना यह दर्शाती है कि सूर्य के मार्ग से ही समय और ऋतुओं का चक्र चलता है, जिससे पृथ्वी पर जीवन संभव हो पाता है।

पौराणिक महत्त्व और धार्मिक संदर्भ

सूर्य रथ का वर्णन हमें अनेक धार्मिक ग्रंथों में मिलता है– ऋग्वेद, भागवत पुराण, महाभारत, विष्णु पुराण, और सूर्य उपासना ग्रंथों में सूर्य रथ का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया गया है। सूर्य देव का यह रथ ब्रह्मांड का चक्र चलाता है, जिससे दिन और रात, ऋतुओं का आगमन, और काल का प्रवाह बनता है। हर दिन जब सूर्य उदय होता है, यह समझा जाता है कि उनका रथ पूर्व से पश्चिम की ओर आकाश में यात्रा कर रहा है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सूर्य रथ की व्याख्या

हिंदू शास्त्रों में जहाँ सूर्य रथ को पौराणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है, वहीं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी इसमें गहरा ज्ञान छिपा है– सात घोड़े – सूर्य के प्रकाश का वर्ण–विच्छेदन (Dispersion) करने पर बनने वाले सात रंगों का प्रतीक हैं। यह बात आधुनिक विज्ञान में प्रिज्म प्रभाव और वर्णक्रम के रूप में प्रमाणित है। एक पहिया और 12 तीलियाँ– यह पूरी तरह से सौर वर्ष, मास, और ग्रहों की गति को दर्शाता है, जो आज की ज्योतिष और खगोलशास्त्र की मूलभूत समझ बनती है।

धार्मिक महत्व और उपासना

सूर्य रथ को मंदिरों में विशेष स्थान प्राप्त है, विशेषकर सूर्य मंदिरों जैसे कोणार्क सूर्य मंदिर (ओडिशा), जहाँ पूरे मंदिर का स्वरूप सूर्य के रथ के जैसा है। शनि मंदिरों या नवग्रह पूजा स्थलों में भी सूर्य रथ की प्रतिकृति बनाई जाती है, जिससे यह दर्शाया जा सके कि सूर्य समस्त ग्रहों में प्रमुख और ऊर्जा स्रोत हैं। सूर्य सप्तमी, रथ सप्तमी, और मकर संक्रांति जैसे पर्वों में सूर्य रथ की पूजा और उपासना विशेष रूप से की जाती है।

जीवन, ऊर्जा और अस्तित्व का प्रतीक

सूर्य रथ यह सिखाता है कि जीवन की यात्रा भी एक निरंतर चलने वाला रथ है–जिसमें वक्त, दिशा, गति, और संतुलन अत्यंत आवश्यक हैं। यह रथ प्रतीक है आत्मज्ञान का, समय की मूल्यवत्ता का, और जीवन में प्रकाश की अनिवार्यता का। सूर्य का रथ केवल एक पौराणिक कल्पना नहीं, बल्कि यह भारतीय दर्शन, खगोलशास्त्र, कालचक्र, और जीवन के तात्त्विक दर्शन का अद्भुत संगम है। यह रथ हमें न केवल धार्मिक दृष्टि से जोड़ता है, बल्कि यह स्मरण कराता है कि हमारा जीवन भी समय और कर्म के रथ पर सवार है, और हमें अपने बुद्धि और विवेक से इसे संतुलित दिशा में चलाना चाहिए।

सूर्य घड़ी

शनिधाम में स्थापित सूर्य घड़ी एक अद्भुत और विलक्षण संरचना है, जो समय मापन का साधन होने के साथ–साथ विज्ञान, ज्योतिष और अध्यात्म के गहरे समन्वय को भी दर्शाती है। यह सूर्य घड़ी न केवल प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की वैज्ञानिक समझ को प्रकट करती है, बल्कि यह भी बताती है कि हमारे ऋषि–मुनि प्रकृति के नियमों से कितनी गहराई से जुड़े हुए थे।

इस सूर्य घड़ी का व्यास लगभग 19.6 फीट तथा चौड़ाई लगभग 4 फीट है, जो इसे भव्य और आकर्षक बनाती है। इसके केंद्र में खड़ी ग्नोमन (छड़ी अथवा सुई) सूर्य की किरणों के संपर्क में आती है। जब सूर्य का प्रकाश इस ग्नोमन पर पड़ता है, तो उसकी छाया नीचे बनी डायल प्लेट पर पड़ती है। डायल प्लेट पर अंकित समय–चिह्नों के अनुसार उसकी छाया समय का सटीक संकेत देती है।

जैसे–जैसे सूर्य पूर्व से पश्चिम की ओर अपनी दैनिक यात्रा करता है, वैसे–वैसे छाया की दिशा और लंबाई में परिवर्तन होता रहता है। यही परिवर्तन समय के प्रवाह को दर्शाता है। यह पूरी प्रक्रिया पृथ्वी के घूर्णन, सूर्य की स्थिति और ज्यामितीय गणनाओं पर आधारित है, जो इसे विज्ञान का एक उत्कृष्ट और जीवंत उदाहरण बनाती है।

अध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो सूर्य घड़ी हमें समय के महत्व और कर्म के सिद्धांत की निरंतर याद दिलाती है। शनिधाम में स्थित यह संरचना विशेष रूप से यह संदेश देती है कि समय ही कर्म का साक्षी है और हर कर्म का फल समय आने पर अवश्य प्राप्त होता है। शनि देव की न्यायप्रियता और सूर्य की ऊर्जा–दोनों का यह संगम मानव जीवन में अनुशासन, धैर्य और सत्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

इस सूर्य घड़ी के समीप खड़े होकर भक्त केवल समय नहीं देखते, बल्कि जीवन की क्षणभंगुरता और कर्म की अनिवार्यता का भी अनुभव करते हैं। यह संरचना शनिधाम को केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि ज्ञान, विज्ञान और आध्यात्मिक चेतना का केंद्र बना देती है।

इस प्रकार, शनिधाम की सूर्य घड़ी एक मौन शिक्षक की तरह हर आगंतुक को यह संदेश देती है कि समय अमूल्य है, कर्म अनिवार्य है और न्याय अटल है।

शनि देव धामः जहाँ दीवारों पर सक्षात होते हैं कर्म, न्याय और करुणा के दिव्य दर्शन

शनि देव धाम मंदिर की अंदर की दीवारें मानो एक जीवंत आध्यात्मिक चित्रशाला की तरह प्रतीत होती हैं। यहाँ भगवान शनि देव के विभिन्न रूपों, उनकी दिव्य शक्तियों और अनेक पौराणिक प्रसंगों को अत्यंत कलात्मक ढंग से उकेरा गया है। हर चित्र इतनी सूक्ष्मता, भक्ति और श्रद्धा से बनाया गया है कि देखने वाला स्वयं को उन दिव्य घटनाओं के समय और वातावरण में उपस्थित महसूस करता है। कहीं शनि देव अपने पारंपरिक रूप में न्याय के तराजू के साथ विराजमान हैं, तो कहीं अपने अलग–अलग वाहनों–कौआ, गिद्ध, घोड़ा, हाथी और सिंह–पर आरूढ़ होकर कर्मफल प्रदान करते हुए दिखाई देते हैं। कुछ चित्रों में शनि देव शांत, गहन ध्यानमग्न मुद्रा में विश्व के कर्म–चक्र का संचालन करते नजर आते हैं, तो कहीं वे अत्याचारों का अंत करते हुए अपने तेजस्वी, भयानक और रक्षक स्वरूप में प्रकट होते हैं।

हर रूप, हर मुद्रा और हर वाहन का चित्रण इतना सजीव है कि भक्त को यह अनुभव होता है कि शनि देव न केवल न्याय के देवता हैं, बल्कि करुणा, संतुलन, धैर्य और सत्य के प्रतीक भी हैं। इन दिव्य कलाकृतियों को निहारते ही भक्त के मन में अद्‌भुत शांति, संयम और आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो शनि देव स्वयं इन चित्रों के माध्यम से संदेश दे रहे हों– "कर्म करो, सत्य पर चलो, मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ।" यहाँ आने वाला हर भक्त केवल एक मंदिर नहीं देखता, बल्कि शनि देव की निरंतर प्रवाहित होती उपस्थिति और उनके संरक्षण का गहरा अनुभव करता है।

दीवारों पर उकेरी गई हर रेखा, हर रंग और हर आकृति भक्त के भीतर श्रद्धा, आत्मविश्वास और दिव्य संतुलन का भाव जगाती है। इस धाम में प्रवेश करते ही मन स्वतः शांत हो जाता है और हृदय में पवित्र ऊर्जा तथा शनि देव के संरक्षण का मधुर अहसास भर जाता है। इस प्रकार, शनि देव धाम मंदिर की ये कलाकृतियाँ केवल चित्र नहीं, बल्कि आध्यात्मिक प्रेरणा से भरी दिव्य झलकियाँ हैं, जो हर आगंतुक के हृदय में श्रद्धा, सत्य और कर्म की शक्ति का संदेश रोपित कर देती हैं तथा उसे इस पवित्र धाम से गहराई से जोड़ देती हैं।

शनि देव का दिव्य स्वरूप

शनि देव का वाहन भैंसा

शनि देव का वाहन गरुड़ (बाज)

शनि देव का वाहन कौआ

शनि देव का वाहन मोर

शनि देव का वाहन घोड़ा

भगवान शिव और शनि देव

शनि देव का वाहन हाथी

शनि देव का वाहन शेर

शनि धाम मंदिर की बाहरी दीवारों के साथ शनि देव से जुड़ी अनेक दिव्य वस्तुएँ और प्रतीक बड़े ही सुंदर और कलात्मक रूप में उकेरे गए हैं। ये वस्तुएँ केवल सजावट भर नहीं हैं, बल्कि शनि देव के स्वरूप, उनके सिद्धांतों और उनके दैविक प्रभाव का गहन स्मरण कराती हैं। मंदिर के चारों ओर बनी इन पवित्र प्रतीकों में शनि देव से संबंधित हर शुभ वस्तु- जैसे काला तिल, नीलम रत्न, घोड़े की नाल, अपराजिता का फूल, कौआ, भैंसा, तेल का पात्र, और न्याय का तराज़ू- सभी अत्यंत भावपूर्ण और नाजुकता से निर्मित हैं। हर प्रतीक ऐसा आभास कराता है मानो शनि देव स्वयं अपनी दिव्य शक्तियों के साथ इस परिसर की रक्षा कर रहे हों।

कहीं नीलम की आकृति शनि देव की शक्ति और धैर्य का बोध कराती है, तो कहीं काले तिल का चित्रण उनके दया और करुणा से भरे न्याय का संदेश देता है। कौए का प्रतीक हमें शनि देव की सतर्क दृष्टि और कर्मफल के सिद्धांत की याद दिलाता है, जबकि भैंसा उनके वाहन के रूप में शौर्य और स्थिरता का प्रतिरूप दिखाई देता है। न्याय-तराज़ू यह दर्शाता है कि शनि देव हर जीव को उसके कर्मों के अनुसार न्याय प्रदान करते हैं। इन दिव्य प्रतीकों के दर्शन मात्र से ही भक्तों के भीतर एक अद्‌भुत आध्यात्मिक ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है। मन शांत हो जाता है, हृदय विनम्र हो उठता है, और भीतर से सकारात्मकता और आत्मबल जागृत होने लगता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो शनि देव स्वयं अपने प्रतीकों के माध्यम से आशीर्वाद देते हुए कह रहे हों- "सत्कर्म करो, न्याय तुम्हारे साथ है।"

इस प्रकार, शनि धाम मंदिर की बाहरी दीवारों पर बनी ये शनि-सम्बंधित वस्तुएँ केवल कला नहीं हैं, बल्कि एक जीवंत आध्यात्मिक अनुभव हैं। यहाँ आने वाला हर व्यक्ति इन प्रतीकों को देखकर अपने भीतर अनुशासन, श्रद्धा, कर्म-योग और शांति का दिव्य स्पर्श अनुभव करता है, और शनि देव की उपस्थिति को अपने हृदय में गहराई से महसूस करता है।

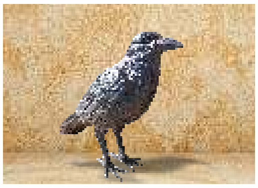

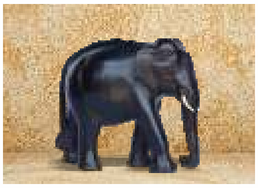

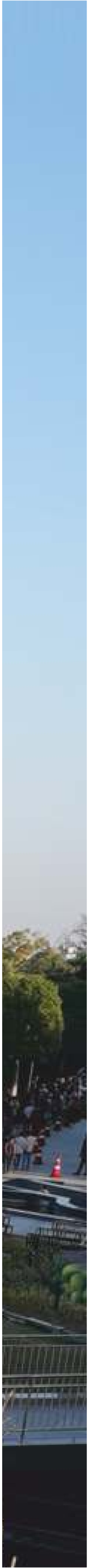

मन्नत की दीवार:
आस्था, कर्म और दिव्य विश्वास का संगम

चार धाम मंदिर प्रांगण में स्थित "मन्नत की दीवार" श्रद्धालुओं के लिए एक पवित्र स्थान है, जहाँ भक्त अपनी मनोकामनाएँ धागा बाँधकर व्यक्त करते हैं। यह केवल एक दीवार नहीं, बल्कि भक्त और भगवान के बीच का एक आध्यात्मिक सेतु है– जहाँ आस्था, विश्वास और कर्म तीनों एक साथ मिलते हैं।

यहाँ भक्त अपनी मन्नतें तीनों देवताओं– भगवान शिव, राधा–कृष्ण और शनि देव के प्रति समर्पित भाव से प्रकट करते हैं। इस दिव्य दीवार पर बंधे प्रत्येक धागे में एक उम्मीद, एक विश्वास और एक प्रार्थना बसती है।

भगवान शिवः संकल्प और शुद्धता का आशीर्वाद

भक्त जब भगवान शिव के प्रति अपनी मन्नतें यहाँ बाँधते हैं, तो वे उनके उपदेशों की गहराई को भी महसूस करते हैं। शिव– जो संहार और सृजन दोनों के देव हैं–भक्तों को यह संदेश देते हैं कि कोई भी मन्नत तभी पूर्ण होती है जब हृदय पवित्र हो, संकल्प दृढ़ हो, और जीवन में सत्य और संयम हो।

शिव का आशीर्वाद भक्तों के जीवन से नकारात्मकता को मिटाकर नवीन ऊर्जा का संचार करता है।

राधा–कृष्ण– प्रेम, भक्ति और करुणा का प्रतिरूप
राधा–कृष्ण के प्रति बाँधा गया धागा केवल इच्छाओं के पूरा होने की कामना नहीं, बल्कि भक्ति और प्रेम का प्रतीक होता है। उनकी उपस्थिति भक्तों को यह सिखाती है कि मनोकामनाएँ तभी सार्थक होती हैं जब उनमें प्रेम, भक्ति और सच्चा समर्पण हो, और हृदय में किसी के प्रति द्वेष या छल न हो।

राधा–कृष्ण का आशीर्वाद मन को शांत करता है, संबंधों में मधुरता लाता है और जीवन में प्रेम व करुणा की धारा प्रवाहित करता है।

शनि देव– कर्म, न्याय और सत्य का मार्ग
मन्नत की दीवार का सबसे विशेष संदेश शनि देव का होता है। यह हमें यह याद दिलाता है कि केवल धागा बाँधने से नहीं, बल्कि सत्यनिष्ठ और न्यायपूर्ण कर्म करने से ही शनि की कृपा मिलती है। यह दीवार स्वयं कहती है कि शनि देव कर्मफल के स्वामी हैं। वे उसी पर प्रसन्न होते हैं जो ईमानदार, धैर्यवान और अनुशासित हो। उनके आशीर्वाद से व्यक्ति कठिनाइयों में भी स्थिर रहता है और जीवन में सही मार्ग पर आगे बढ़ता है।

मन्नत की यह दीवार– तीनों देवों की एक संयुक्त आध्यात्मिक ऊर्जा चार धाम मंदिर प्रांगण में स्थित यह पवित्र दीवार तीनों देवताओं की दिव्य शक्तियों का संगम है–

शिव –संकल्प और शुद्धता के देव

राधा–कृष्ण –प्रेम और भक्ति का स्रोत

शनि देव – कर्म और न्याय के स्वामी

यह दीवार भक्तों को यह संदेश देती है कि आस्था धागा बाँधने से बनती है, लेकिन मन्नत पूरी होने का मार्ग हमारे कर्म और चरित्र से बनता है। इस दीवार के समक्ष खड़ा होने मात्र से ही मन में शांति, स्थिरता और दिव्य ऊर्जा का अनुभव होता है। यहाँ आने वाला हर भक्त विश्वास के साथ लौटता है कि उसकी प्रार्थना सुनी गई है, और यदि उसके कर्म श्रेष्ठ होंगे, तो उसकी मन्नत अवश्य पूर्ण होगी।

पवित्र पूजा और हवन बुक करें

चार धाम मंदिर में पूजा और हवन की बुकिंग की सुविधा उपलब्ध है। पावन वातावरण में अनुभवी आचार्यों द्वारा विधिपूर्वक अनुष्ठान करवाएं और दिव्य आशीर्वाद प्राप्त करें।

पूजा एवं हवन बुक करने के लिए वेबसाइट पर रजिस्टर करें

Visit: www.chaardham.in

लॉगिन करें	पूजा, हवन, भोग आदि चुनें	पूजा में शामिल होने वाले श्रद्धालु अपना विवरण दर्ज करें	ऑनलाईन भुगतान करें

उपलब्ध सेवाएँ

रुद्राभिषेक एवं महामृत्युंजय जाप, नवग्रह शांति पूजा, सत्यनारायण कथा, गृहदोष निवारण हवन

अन्य विशेष पूजा (अनुरोध पर)

स्थानः चार धाम मंदिर परिसर

बुकिंग एवं जानकारी हेतु संपर्क करें:
91 9997000603

अग्रिम बुकिंग अनिवार्य!

अपने परिवार के साथ आध्यात्मिक शांति और सुख-समृद्धि के लिए आज ही बुक करें

मुंडन संस्कार की सुविधा

आपके बच्चे का मुंडन संस्कार चार धाम के पुण्यभूमि पर

संस्कार में शामिल सुविधाएं

- अनुभवी ब्राह्मण पंडित द्वारा पूजा एवं मंत्रोच्चार
- वैदिक विधि द्वारा संपूर्ण मुंडन संस्कार
- यज्ञ एवं हवन की व्यवस्था
- प्रशिक्षित नाई की उचित व्यवस्था

मुंडन संस्कार बुक करने के लिए वेबसाइट पर रजिस्टर करें

Visit: www.chaardham.in

लॉगिन करें	मुडंन चुनें	मुंडन में शामिल होने वाले श्रद्धालु अपना विवरण दर्ज करें	ऑनलाईन भुगतान करें

आपके बच्चे के पहले संस्कार को बनाएं पावन और यादगार

महाप्रसाद

चार धाम में उपलब्ध है

भगवान शिव, माता वैष्णों देवी, राधा-कृष्ण और शनि देव
को अर्पित प्रसाद भक्तजन प्राप्त कर सकते हैं।

प्रसाद की विशेषताएँ

- विधिवत पूजा के उपरांत तैयार किया गया
- शुद्ध देसी घी,एवं सात्विक सामग्री से निर्मित
- सुंदर एवं सुरक्षित पैकिंग
- घर ले जाने हेतु अथवा भेंट स्वरूप उपयुक्त

स्थान:
चार धाम मंदिर परिसर, महाप्रसाद काउंटर

समय:
प्रतिदिन सुबह 7:00 से शाम 8:30 तक

पवित्र प्रसाद अपने घर ले जाएँ - आशीर्वाद और पुण्य दोनों पाएं!

Call: +91-9997000603

बिना लाइन, बिना इंतज़ार!

सुगम दर्शन और आरती

अब बस एक बुकिंग दूर

शिव धाम दर्शन | माता वैष्णो देवी दर्शन | राधा-कृष्ण दर्शन | शनि धाम दर्शन

सुगम दर्शन

सुबह 7:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

शाम 4:00 बजे से रात्रि 8:00 बजे तक

₹500 प्रति व्यक्ति

आरती

प्रत्येक आरती में अधिकतम
15 व्यक्ति शामिल हो सकते हैं।

मंगला आरती: सुबह 7:00 बजे। 7:30 बजे
संध्या आरती: शाम 6:00 बजे । 6:30 बजे

₹1100 प्रति व्यक्ति

नियम एवं शर्तें

- मंदिर के द्वार निर्धारित समय में दर्शन के लिए खुले रहेंगे। समय पूरा होने के बाद मंदिर बंद हो जाएगा।
- श्रद्धालुओं को आरती शुरू होने से आधा घंटा पहले मंदिर में प्रवेश करने की सलाह दी जाती है।
- दर्शन/आरती के समय अपना टिकट (हार्ड कॉपी) साथ लाना अनिवार्य है।
- 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए टिकट आवश्यक नहीं है।
- एक बार बुकिंग होने के बाद दर्शन/आरती की तिथि बदली नहीं जा सकती तथा भुगतान वापस नहीं होगा।
- आरती के समय एवं विशेष अवसरों पर सुगम दर्शन की अनुमति नहीं है।
- श्रद्धालु केवल उपलब्ध दर्शन स्लॉट में ही सुगम दर्शन बुक कर सकते हैं।
- उसी दिन की बुकिंग केवल हेल्पडेस्क काउंटर पर उपलब्ध है।
- कॉल पर बुकिंग सुविधा उपलब्ध नहीं है।

अधिक जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट पर जाएं www.chaardham.in

पवित्र अर्पण, अनंत आशीर्वाद

दान आत्मिक उन्नति और परोपकार का एक दिव्य माध्यम है। जब हम निस्वार्थ भाव से दान करते हैं, तो अपने जीवन में शुभ कर्मों और आध्यात्मिक शांति का संचार भी करते हैं। धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि दान देने से पुण्य का संचय होता है और ईश्वरीय कृपा प्राप्त होती है। मंदिरों में दिया गया दान भक्ति, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण में सहायक होता है। जो भी आप भगवान के चरणों में श्रद्धा से अर्पित करते हैं, वह कई गुना होकर आपके जीवन में सुख, समृद्धि और शांति के रूप में लौटता है।

Donate (दान सेवा)

paytm G Pay PhonePe PAYZAPP UPI

श्रद्धा समर्पण

एक पवित्र अर्पण, जो भक्तों की आस्था और पुण्य को ईश्वरीय सेवा से जोड़ता है।

₹51, ₹101, ₹501, ₹1100

नित्य भोग अर्पण

भगवान के लिए दैनिक भोग सेवा

₹11000

अन्नदान सेवा

भक्तों के लिए भोजन अर्पित करना

₹11000

श्रृंगार सेवा

देवी-देवता के लिए वस्त्र एवं श्रृंगार

₹21000

गौसेवा निधि

गोसंरक्षण सेवा एवं गौशाला के रखरखाव हेतु

₹11000

आध्यात्मिक श्रृंगार अर्पण

मंदिर के लिए सजावट

₹21000

मंदिर सेवा निधि

मंदिर की सफाई और रखरखाव हेतु

₹11000

नित्य सेवा निधि

मंदिर की नियमित सेवा

₹51000

चार धाम

रुद्रा गिफ्ट शॉप

हर वस्तु में चार धाम की झलक

रुद्रा गिफ्ट शॉप पर आएं – और भक्ति को साथ ले जाएं।

टी-शर्ट

टोपी

छाता

मग

घड़ी

पेन

आध्यात्मिक स्टॉल (दुपट्टा)

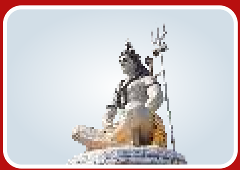
मूर्तियाँ

और भी कई उपहार उपलब्ध हैं

दर्शन के बाद, एक दिव्य उपहार जरूर लें

चार धाम-वृंदावन में आध्यात्मिक निवास

अनेका हाइट्स

में शांति और सुविधा का संगम

योग-कक्ष

ध्यान-कक्ष

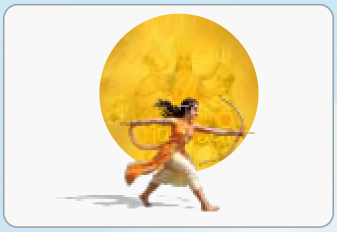

आध्यात्मिक शो

भारत के हृदयस्थल-वृंदावन में स्थित 'अनेका हाइट्स' एक ऐसा गेस्ट हाउस है, जहाँ आधुनिक जीवन की सुविधाएँ और आध्यात्मिक ऊर्जा का सच्चा संगम मिलता है। यह निवास स्थान उन यात्रियों के लिए आदर्श है, जो वृंदावन के रहस्यवाद, भक्ति और ध्यानमय वातावरण में गहराई से डूबना चाहते हैं। अनेका हाइट्स प्राचीन मंदिरों, योग केंद्रों, सुंदर उद्यानों और पवित्र स्थलों से घिरा हुआ है। जहाँ हर दिन एक आत्मिक यात्रा की शुरुआत करता है। एक परिचित, स्वागत योग्य और शांतिपूर्ण वातावरण में, यहाँ ठहराव सिर्फ शरीर का नहीं, आत्मा का भी होता है। आइए, अनेका हाइट्स में आध्यात्मिक गेस्ट हाउस अनेक सुविधाओं के साथ आपका इंतज़ार कर रहा है।

आप यहाँ विशेष आयोजन भी आयोजित कर सकते हैं-

- जागरण एवं भजन संध्या समारोह
- विवाह व रिसेप्शन हॉल में वैवाहिक आयोजन
- कॉर्पोरेट सेमिनार व प्रोफेशनल कार्यक्रम
- योग व आध्यात्मिक प्रवचन
- सांस्कृतिक व धार्मिक सभाएँ एवं कोई भी अन्य उत्सव या निजी आयोजन

24 घंटे पावर बैकअप

Fully AC भव्य हॉल

विशाल पार्किंग सुविधा

सरस्वती आध्यात्मिक हॉल

स्वामी विवेकानन्द लेक्चर हॉल

अर्जुन एम्फीथिएटर

इंद्र मल्टीपर्पस हॉल

ब्रह्म मल्टीपर्पस हॉल

जागरण स्थल

चार धाम

CHAAR DHAM

Vrindavan, Uttar Pradesh (India)

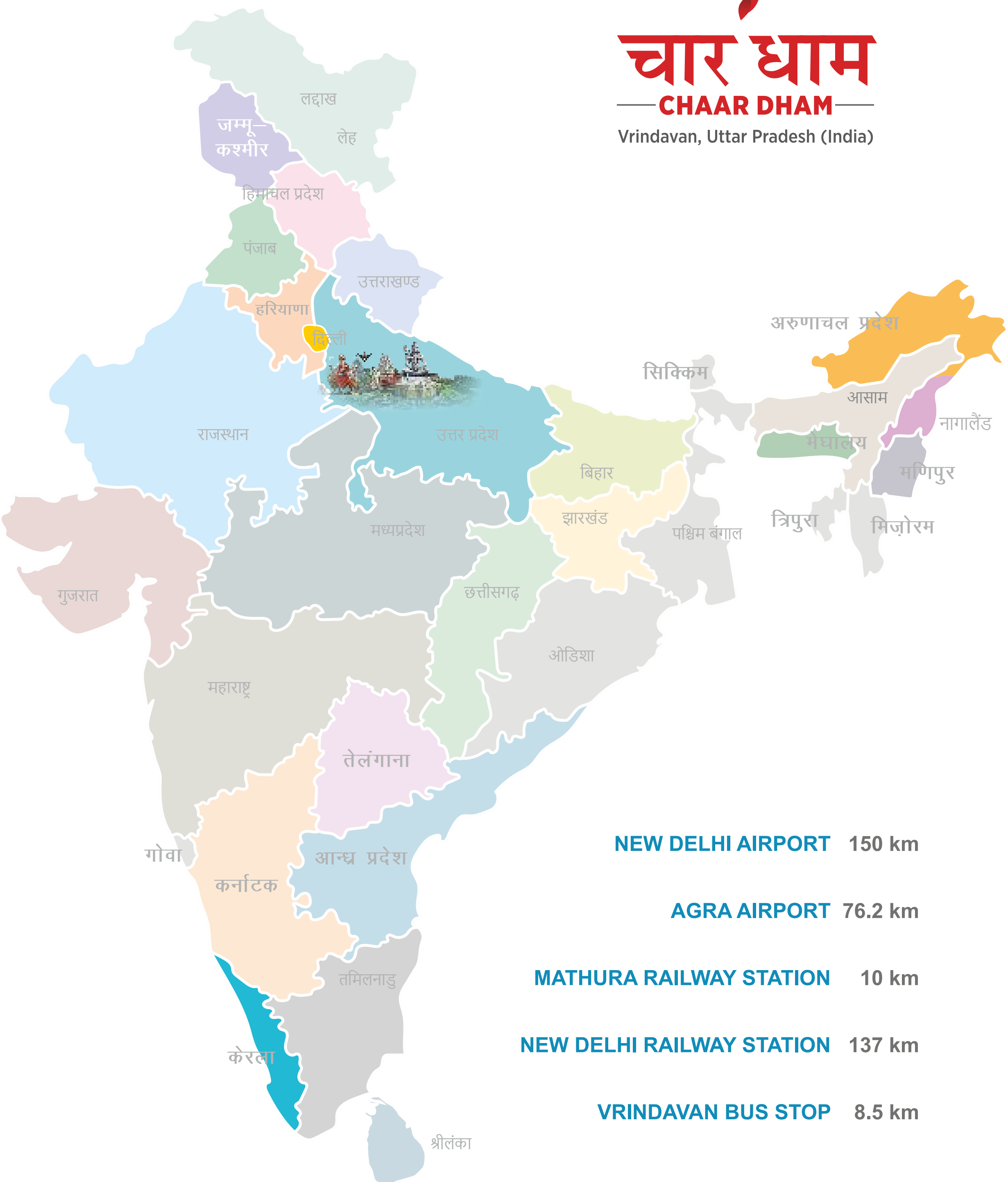

NEW DELHI AIRPORT	150 km
AGRA AIRPORT	76.2 km
MATHURA RAILWAY STATION	10 km
NEW DELHI RAILWAY STATION	137 km
VRINDAVAN BUS STOP	8.5 km

ॐ

चार धाम
वृन्दावन

एनएच-2 (न्यू एनएच-44) एवं भक्तिवेदांता स्वामी मार्ग, छटीकरा, वृंदावन, उत्तर प्रदेश - 281121
ईमेल: **support@chaardham.in** | दूरभाष: +91-9997000603, 8272050191
वेबसाइट: **www.chaardham.in**